



MORAL GROUP OF COMPANIES

All Ways Together...

# स्वास्थ्य क्रांति की ओर ...

आयुर्वेद अपनाएँ, स्वास्थ्य बचाएँ  
(प्रकृति हमारी जननी है)





# मोरल एक बाजार में



1. मोरल ग्रुप की स्थापना 05 दिसम्बर 2007 को वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुई, वर्तमान में संस्था का मुख्यालय उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्थित है ।
2. वर्तमान में मोरल ग्रुप के अंतर्गत 26 कंपनियों का समूह है जिसके द्वारा 16 तरह के क्रियाकलाप संचालित किये जा रहे हैं । मोरल ग्रुप पूरे देश के 29 राज्यों में 125 से अधिक कार्यालय एवं 1500 से अधिक फ्रैंचाइजी कार्यालय के साथ 20 लाख से अधिक सदस्यों का एक सुगठित परिवार बन चुका है ।
3. मोरल ग्रुप का मिशन है, नैतिकता एवं उच्च मानवीय मूल्यों को आगे रखते हुए, बेहतर कार्य संस्कृति को अपनाकर अपने प्यारे देश भारत को खुशहाल, मजबूत एवं समृद्धशाली बनाना । जिसे "मोरल जगाना है, भारत बनाना है" लिखा गया है ।
4. मोरल ग्रुप इस विजन के साथ संचालित है कि –
  - (1) संस्था बहुत से व्यवसाय के क्षेत्र में कार्य करेगी ।
  - (2) संस्था अपने उपभोक्ताओं, निवेशकों, ग्राहकों, सदस्यों को गुणवत्तापूर्ण सेवा एवं उत्पाद प्रदान करेगी ।
  - (3) संस्था अपने साथ जुड़े मोरल परिवार के सदस्यों को धन एवं सम्मान की निरंतर प्राप्ति के अवसर बहुतायत में उपलब्ध कराएगी एवं उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए ट्रेनिंग की उत्तम व्यवस्था बनाये रखेगी ।
5. मोरल ग्रुप की संस्थाएं, ASSOCHAM (एसोसिएटेड चौम्बर्स ऑफ कॉमर्स ऑफ इंडिया), CII (कन्डफेरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री), FICCI (फेडरेशन ऑफ इंडियन चौम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री), CREDAI (कन्डफेरेशन ऑफ रियल एस्टेट डेवलपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया), IFOAM (इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ आर्गेनिक एग्रीकल्चर मूवमेंट्स), RERA (रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी) जैसी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सदस्यता प्राप्त है ।
6. मोरल ग्रुप की 9 कंपनियां ISO 9001:2009 एक कंपनी ISO 260001:2010 और एक ISO 14001:2004 से प्रमाणित हैं ।
7. मोरल ग्रुप के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स –
  - (1) श्री अरुण कुमार (इ.ड.क.)
  - (2) श्री अजय कुमार शर्मा (ड.क.)
  - (3) श्री ज्ञानेश्वर शर्मा (सीनियर डायरेक्टर)
  - (4) श्री अरविन्द कुमार (एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर)
  - (5) श्री नागेन्द्र यादव (एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर)
  - (6) श्री अभय शर्मा (एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर)संस्था के पास टेक्निकल डायरेक्टर, मीडिया डायरेक्टर, जनरल मैनेजर्स एवं अन्य मैनेजर्स की बहुत ही अनुभवी टीम है ।
8. मोरल ग्रुप की पहली कंपनी "मोरल कैपिटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड" है, वर्तमान में यह पब्लिक लिमिटेड कंपनी हो चुकी है ।
9. मोरल ग्रुप जीवन बीमा और सामान्य बीमा कंपनियों के उत्पाद विपणन का भी कार्य करता है ।
10. मोरल ग्रुप ने "मोरल भूमि इंडिया इंडिया लिमिटेड" के नाम से 2009 में रियल एस्टेट के क्षेत्र में प्रवेश किया । मोरल ऑनर सिटी ब्रांड नेम के अंतर्गत संस्था के 14 हाउसिंग टाउनशिप (प्रोजेक्ट) चल रहे हैं । जिसमें से 5 प्रोजेक्ट (1) इंडियाना काउंटी, (2) वरदान काउंटी, (3) लक वैली, (4) गुड लक काउंटी, (5) अबध ग्राम, उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में, 3 प्रोजेक्ट (6) पाटलीपुरम (7) पाटलिग्राम (8) रॉयल चाणक्य, पटना में, (9) रॉयल मगध गया में, 4 प्रोजेक्ट (10) रॉयल काशी, (11) काशीग्राम, (12) रॉयल बुद्धा (13) रॉयल गंगा, वाराणसी में, (14) विंध्यम सिटी मिर्जापुर में स्थित हैं । संस्था जल्द ही भारत के विभिन्न राज्यों के शहरों में 25 नई टाउनशिप लांच करने की महत्वाकांक्षी योजना पर कार्य कर रही है ।
11. मोरल ग्रुप ने 2010 में माइक्रोफाइनेंस के क्षेत्र में कदम रखा है जिसे संस्था "मोरल ग्रामीण माइक्रो क्रेडिट" के नाम से संचालित कर रही है । यह संस्था कमजोर आर्थिक वर्ग की महिलाओं का समूह बनाकर उनके स्वरोजगार एवं आर्थिक सशक्तिकरण के लिए ऋण उपलब्ध कराती है एवं अब तक 30000 से अधिक महिलाओं को ऋण दिया जा चुका है । इसका कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश और बिहार के 16 जिलों में है ।
12. मोरल ग्रुप ने 2010 में फार्मा के क्षेत्र में "मोरल फार्मास्यूटिकल्स" के नाम से प्रवेश किया । मोरल फार्मा की टैग लाइन है – जीवैम शरदः शतम्, अर्थात् आप शतायु हों । मोरल फार्मा के 3 डिवीजन हैं । पहला डिवीजन मेडिकल रेप्रेजेंटेटिव के फार्मा ट्रेडिशनल व्यापार सिस्टम से संचालित है । दूसरा डिवीजन जिसे जन स्वास्थ्य मिशन SBU-2 भी कहा जाता है, के माध्यम से संस्था देश के 29 राज्यों में गाँव-गाँव तक अपनी दवाएं लोगों तक पहुँचाने का कार्य कर रही है और ये अपनी तरह का एक अनूठा प्रयोग है । मोरल फार्मा का तीसरा डिवीजन वेटनरी डिवीजन है जिसमें पशुओं से सम्बंधित दवाएं उपलब्ध हैं । मोरल फार्मा के पास कुल 190 से ज्यादा दवाएं अपने ब्रांड नेम से रजिस्टर्ड हैं । यह कंपनी भारत की शीर्ष फार्मास्यूटिकल कंपनी के रूप में स्थान बनाने की ओर तेजी से अग्रसर है ।



# मोरल एक बाजार में



13. मोरल ग्रुप ने 2011 में कंज्यूमर प्रोडक्ट के क्षेत्र में कदम रखा एवं मोरल हेल्थ एंड पर्सनल केयर के अंतर्गत लगभग 300 से अधिक प्रोडक्ट्स के साथ पर्सनल केयर, फूड प्रोडक्ट्स, गारमेंट्स, हाउस होल्ड प्रोडक्ट्स, लाइफ स्टाइल प्रोडक्ट्स, बायो-मैग्नेटिक प्रोडक्ट्स की विस्तृत श्रंखला प्रस्तुत की गई है जिसमें गुड मोर्निंग से लेकर गुड नाईट तक मनुष्य के इस्तेमाल की अधिकाधिक वस्तुएं उपलब्ध हैं ।
14. संस्था ने उच्चगुणवत्तापूर्ण आयुर्वेदिक और हर्बल प्रोडक्ट्स की भी विस्तृत रेंज उपलब्ध कराई है एवं "आयुर्वेदिक अपनाएं, स्वास्थ्य बचाएं" के मिशन के तहत पूरे देश में इन प्रोडक्ट्स को अपने प्रोडक्ट्स सेंटर (Shoppee) के माध्यम से उपलब्ध कराया है । हर्बल एवं आयुर्वेदिक के लगभग 100 से अधिक प्रोडक्ट्स संस्था अपने ब्रांड नेम से बहुत ही किफायती दर पे लोगों तक पहुंचा रही है ।
15. मोरल ग्रुप ने जन-जन तक अपनी सेवाओं को पहुंचाने के लिए 2012 में डायरेक्ट सेलिंग के क्षेत्र में "एक्सिल कोर बिजनेस प्राइवेट लिमिटेड" के नाम से कदम रखा । एक्सिल अपने सदस्यों को उनके सपनों को पूरा करने और एक बेहतर जीवन शैली के साथ जीने में समर्थ बनाता है ।
16. एक्सिल कोर बिजनेस को भारतीय आर्थिक विकास एवं अनुसंधान संगठन (इडरा) द्वारा "भारतीय उद्योग रत्न" और "इंडियन लीडरशिप अवार्ड फॉर हेल्थ केयर एक्सीलेंस" जैसे प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हो चुके हैं ।
17. मोरल ग्रुप को भारत सरकार के कृषि मंत्रालय की ओर से 10 राज्यों में विकास करने के लिए मल्टी स्टेट क्रेडिट कोआपरेटिव सोसाइटी की मान्यता नवम्बर 2012 में प्रदान की गयी । आज मोरल क्रेडिट कोआपरेटिव सोसाइटी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, वेस्ट बंगाल, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात एवं दिल्ली में हजारों लोगों को सदस्य बनाकर उनके जीवन में आर्थिक प्रगति लाने का माध्यम बन चुकी है ।
18. मोरल ग्रुप ने 2013 में मोरल विस्तार वर्ष अभियान के अंतर्गत अपनी एक संस्था "एक्सिल इंटरनेशनल" के नाम से संयुक्त राज्य अमेरिका के नेवाडा प्रान्त में रजिस्टर्ड कराई है जिसके माध्यम से भविष्य में ओवरसीज क्रियाकलाप प्रारम्भ किये जाने की योजना है ।
19. मोरल ग्रुप ने 2014 में सॉफ्टवेयर निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा है और "सॉफ्टोसिस सोल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड" के नाम से तेजी से प्रगति करते हुए शीर्ष IT कंपनी बनने की ओर अग्रसर है जो कई प्रतिष्ठित कंपनियों के लिए सॉफ्टवेयर बनाने एवं संचालन करने का कार्य कर रही है । जन-जन को कंप्यूटर की शिक्षा देने के लिए "सोफ्टोसिस अकादमी" की स्थापना की गयी है जिसके जरिये डिजिटल इंडिया के स्वप्न को साकार करने के लिए आई.टी. प्रोफेशनल्स तैयार किये जायेंगे ।
20. भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि सबसे विशाल, प्राचीन और सर्वाधिक रोजगारपरक क्षेत्र है । मोरल ग्रुप 2014 में "नयी कृषि क्रान्ति" लाने में सक्षम आर्गेनिक कृषि उत्पाद की विस्तृत श्रंखला किसानों के बीच लेकर आया है । ये कृषि प्रोडक्ट्स आर्गेनिक हैं और अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित, टेस्टेड, उच्चगुणवत्तापूर्ण प्रोडक्ट्स हैं जिनके प्रयोग से फसल के उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हो रही है एवं भूमि की उर्वरता में सुधार आ रहा है ।
21. मोरल ग्रुप हाउसिंग कंस्ट्रक्शन एवं इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में 2015 में प्रवेश कर चुकी है एवं जल्दी ही 250 डुप्लेक्स एवं ग्रुप हाउसिंग का एक प्रोजेक्ट प्रारम्भ करने जा रही है ।
22. 2015 में मोरल ग्रुप प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में "मोरल विजन प्रकाशन लिमिटेड" के अंतर्गत कदम रख चुकी है । हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा में राष्ट्रीय दैनिक क्रमशः ग्राम्य वार्ता, सृष्टि मेल और कौमी हालात का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है । जो कि पत्रकारिता को एक नयी दिशा प्रदान कर रहा है । हिंदी दैनिक – ग्राम्य वार्ता का ऑनलाइन संस्करण भी प्रारम्भ किया चुका है ।
23. संस्था अपने "मोरल फाउंडेशन" नामक ट्रस्ट के माध्यम से कई सामाजिक कल्याण एवं उत्थान के कार्यों का संचालन करती है ।
24. संस्था ने 2016 में कॉस्मेटिक के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए ष्ववामत के नाम से अपनी बेहतरीन क्वालिटी के कॉस्मेटिक उत्पादों की विस्तृत श्रंखला लांच किया है ।
25. मोरल ग्रुप ने 2017 में ग्रामीण क्षेत्रों की ऊर्जा संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए एक क्रांतिकारी प्रोडक्ट लेकर आया है – मोरल सन पावर जिसके तहत सौर्य ऊर्जा उपकरणों की श्रंखला लांच की गई है ।
26. जन-जन तक सर्वोत्तम गुणवत्ता के उत्पाद पहुंचाने के संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मोरल ग्रुप ने लखनऊ में अपनी पहली मैनुफैक्चरिंग यूनिट की स्थापना की है । निकट भविष्य में इसमें हमारे सभी उत्पादों की मैनुफैक्चरिंग प्रारंभ कर दी जाएगी और मोरल ग्रुप मैनुफैक्चरिंग के क्षेत्र में अग्रणी स्थान बना लेगा ।
27. निकट भविष्य में कंपनी बड़े पैमाने पर डेयरी (मोरल डेयरी) के क्षेत्र में प्रवेश करने की योजना पर कार्य कर रही है । गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के अभियान में योगदान करने के लिए यूनिवर्सिटी स्थापित करने की दिशा में हम कार्य कर रहे हैं ।

मोरल जगाना है, भारत बनाना है

सेवा का सफर जारी है . . . . .

आप सबका सहयोग और शुभकामनाएं प्रार्थित हैं ।

जय मोरल !  
जय भारत !!

# अयुर्वेद

भगवान् शिवंती अयुर्वेद जगत के प्रणेता और वैद्यक शास्त्र के देवता माने जाते हैं।

‘अयुर्वेद’ शब्द का अर्थ है वेद+अयु। अयुर्वेदिक दृष्टिकोण से जीवन का विज्ञान इन दो शब्दों के ज्ञान में निहित है। अयुर्वेद के अनुसार सभी वस्तुओं और जीवित शरीरों का निर्माण पंच तत्वों के संयोजन से हुआ है और तीन दोषों या त्रिदोष के रूप में वर्णित है। ये त्रिदोष हैं: वात (वायु और आकाश), पित्त (पृथ्वी और जल) और कफ (तेज और अग्नि)। अयुर्वेदिक चिकित्सक रोगों की पहचान के लिए जिनका परीक्षण करते हैं वे हैं: नाड़ी, मूत्र, मल, जिह्वा, आँख, आवाज और आकृति।

## उद्देश्य

1. सुन्दर स्वास्थ्य 2. रोगों से बचाव और 3. रोगों को जड़ से खत्म करना

## उपाय

औषधि, विशिष्ट आहार, योग और निर्धारित दिनचर्या

योग और अयुर्वेद का अन्योनाश्रय सम्बन्ध है। योग शरीर की प्रकृति में सुधार लाता है। योग करते समय केवल अयुर्वेदिक चिकित्सा का लाभ लेना चाहिए।

## औषधीय गुणों से युक्त पौधे और जड़ी-बूटी

विभिन्न रोगों की रोकथाम या निदान के लिए हमारे देश भारत में अयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति अत्यंत प्राचीन काल से ही प्रचलित रही है और इसका कारण है भारत देश में औषधीय गुणों से युक्त पौधों, जड़ी-बूटियों की प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना। नेशनल मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड के अनुसार भारत में पुष्पीय पेड़-पौधों की 17000 – 18000 प्रजातियाँ हैं जिनमें करीब 6000–7000 पेड़-पौधों के औषधीय महत्व हैं। प्रकृति की देवी के हम आभारी हैं कि उन्होंने हमारे प्यारे देश को अनगिनत चमत्कारी वनस्पतियों और जड़ी-बूटियों के उपहार से अलंकृत कर दिया है। हमारी सभी मानसिक और शारीरिक विकृतियों के समाधान प्रकृति में ही हमारे आस-पास मिलने वाली तुलसी, सदा सुहागन, विजयसार, पुदीना, मेहंदी और गुलाब की पत्तियाँ, लेमन ग्रास, सफेद कमल, पलाश के पुष्प, कचनार, मुलहठी, ब्राह्मणी, अपराजिता, बांदा, हल्दी, छोटी इलायची, सहजन, दालचीनी, सब्जा, अलसी का बीज, कपूर, इसबगोल, लहसुन, जायफल जैसी वनस्पतियाँ या जड़ी-बूटी भी अनेक प्रकार के रोगों में अत्यंत लाभकारी हैं।

## विश्वसनीयता

आधुनिक वैद्यों का मानना है कि अत्यंत आकस्मिक जानलेवा बीमारियों या आपात स्थितियों में जैसे दिल का दौरा, पक्षाघात, रक्त में शुगर का अचानक काफी बढ़ जाना, शल्य-चिकित्सा आदि की अवस्था में तुरंत राहत पाने के लिए आधुनिक चिकित्सा पद्धति एलोपैथी या फार्मास्युटिकल्स प्रभावी होती है।

आजकल हम सामान्य बीमारी में भी तुरंत राहत पाने के लिए आधुनिक चिकित्सा शैली का सहारा ले लेते हैं पर दवाओं के साइड-इफेक्ट्स को नजरअंदाज कर देते हैं। इसी के मद्देनजर दुनियाभर में लोग अयुर्वेद को वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में फिर से अपना रहे हैं क्योंकि पौधों से प्राप्त विभिन्न पदार्थों से अनेक प्रकार की बीमारियों का इलाज संभव है। इनके लम्बी अवधि में प्रयोग करने से बीमारी न होने की संभावना रहती है और इनके प्रयोग से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विश्व हर्बल उपचार के ओर तेजी से आकर्षित हो रहा है। यू.एस.ए. में अधिकतम हर्बल उपचार फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा पूरक आहार के रूप में नियंत्रित है। यू.के. में भी इसकी पूरक आहार के रूप में मान्यता है। जापान के टोयोमा इंटरनेशनल हेल्थ सेन्टर में प्राकृतिक औषधियों का प्रयोग नियमित रूप से किया जाता है। अगर पूरे अंतर्राष्ट्रीय मार्केट को देखा जाए तो यूरोपियन यूनियन का शेयर 45%, उत्तरी अमेरिका 11%, जापान 16%, एशियाई देशों का 19% और बाकी यूरोपियन यूनियन का शेयर 4.1% है। भारत, मिस्र, सूडान और अन्य विकासशील देशों में करीब 80% ग्रामीण आबादी पारम्परिक हर्बल औषधियों का इस्तेमाल करती है। सिंगापुर और आस्ट्रेलिया में करीब 60% लोग प्राकृतिक औषधियों का उपयोग करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि विश्व के 80% लोग स्वास्थ्य की प्राथमिक देखभाल के लिए किसी न किसी रूप में हर्बल औषधियों का उपयोग करते हैं। भारत सरकार की ओर से अमेरिका में “अयुर्वेद विकास बोर्ड” की स्थापना की भी योजना है।

# हृत्पुष्पचन्दे

## प्रतिकूल प्रभाव

ऐलोपथिक दवा की तरह, अनेक जड़ी-बूटियों के प्रतिकूल प्रभाव की संभावना रहती है पर तुलनात्मक से यह प्रभाव बहुत ही कम होता है। विभिन्न जड़ी-बूटियों की अनुपयुक्त मिलावट, अनुपयुक्त फार्मूला, अनुपयुक्त हर्ब, दवा की परस्पर क्रिया की कम समझ या अशुद्धता के कारण प्रतिकूल प्रभाव हो सकते हैं। प्रत्येक हर्ब या जड़ी-बूटी के विशेष भाग के सार (Extract) किसी खास रोग को रोकने या उसके निदान के लिए एक निश्चित मात्रा और डोज में ही उपयुक्त होते हैं। अगर आयुर्वेदिक दवाएं सही ढंग से तैयार न की जाएं तो उनके प्रभाव में कमी आ सकती है। आयुर्वेदिक औषधियों या जड़ी-बूटियों का प्रयोग किसी अनुभवी वैद्य या चिकित्सक के परामर्श से ही करना चाहिए। गर्भावस्था और स्तनपान करने वाली महिलाओं को किसी भी हर्ब या जड़ी-बूटी का उपयोग चिकित्सक से सलाह लेने के बाद ही करना चाहिए।



॥ हृत्पुष्पचन्दे ॥

# कुछ औषधियुक्त घरेलू वनस्पतियों के नाम



तुलसी, निर्गुन्डी, पीपल, नीम, शतावर, मेथी, रेंगनी, अमरुद, जामुन, करेला, आँवला, लाजवंती, सदाबहार, चिरायता, घृतकुमारी, अरहुल, महुआ, अर्जुन, अशोक, इमली, अदरक, इलायची, हररे, बहेड़ा, कड़ी-पत्ता, सूरजमुखी, अदरक, अमलतास, सहजन, कचनार, अश्वगंधा, स्टेविया, कौंच, बांस, पलाश, पुनर्नवा, पत्थरचूर, दालचीनी, कुल्थी, अरंडी, आदि।  
आइए, तो संक्षिप्त में जानें कुछ महत्वपूर्ण हर्ब और जड़ी-बूटियों के बारे में...

नाम

फल

उपयोग

नाम	फल	उपयोग
 आँवला (Emblica Officinalis)	फल	विटामिन C का स्रोत, कफ, डायबीटीज, एसिडिटी, रेचक (Laxative)
 ब्राह्मी (Bacopa Monnieri)	सम्पूर्ण पौधा	याददाश्त बढ़ाने के लिए, मानसिक दौर्बल्य, स्नायु विकार दूर करने के लिए
 अशोक (Saraca Ashoka)	पुष्प, छाल	माहवारी-दर्द, गर्भाशय-विकार, डायबीटीज
 अश्वगंधा (Withania Somnifera)	जड़, पत्ते	बलवर्धक टॉनिक, थकान, तनाव, स्नायु-विकार, कामोद्दीपक, वाजीकर
 भूमि आँवला (Phyllanthous Amarus)	पौधे के सभी भाग	एनीमिया, जॉडिस, जलोदर (Dropsy)
 शतावरी (Asparagus Racemosa)	जड़, कंद	दुग्धवर्धक, कमजोरी, थकान, कफ
 तुलसी (Ocimum Sanctum)	बीज, पत्तियाँ	सर्दी, खांसी, बलगम निकालने वाली, श्वासनली का प्रदाह (Bronchitis)
 गुलुची (Tinospora Cordifolia)	तना	बवासीर, गठिया, बुखार, जॉडिस, कमजोरी
 भृंगराज (Edipta Alba)	बीज, सभी भाग	सूजन, पाचक, हैयर-टॉनिक
 नीम (Azadirachta Indica)	कंद	दर्दनिवारक, एपिलेप्सी में, उच्च-रक्तचाप, शामक (Sedative)

## नाम

## फल

## उपयोग

	अर्जुन पेड़ (Terminalia Arjuna)	छल फल	एसिडिटी, मूत्र में रक्त, हृदय-रोग, लिंफ और किडनी की सुरक्षा के लिए
	कुम्कुम / केसर (Crocus Sativus)	स्टिग्म	त्वचा रोग, त्वचा का फीकापन, अफच, ज्वर, कमजोर स्नायु, माहवारी की गड़बड़ी, ज्वर, नुपुंसकता, रतमन दोष, पेशाब में जलन, स्त्री में यौन इच्छा की कमी
	बेन्सेट (Eupatorium Perfoliatum)	हर्ब	डेंगू फीवर, न्युमोनिया, सर्दी और फ्लू, स्वाइन फ्लू, वात रोग (तिमनउंजेउ), अफच, कब्ज
	शिलजित (Asphaltum Punjabanum)	रेजिन	मानसिक और शारीरिक तनाव, कमजोर रोग-प्रतिरोधक क्षमता, मांस-पेशियों का दर्द, याददाश्त की कमी, कफ, दमा, स्टेमिना और एनर्जी की कमी, शीघ्र पतन, यौन-क्षमता की कमी, झुर्रियां, लिंफ, किडनी, थायरॉइड की क्रियाओं को सामान्य रखना, मधुमेह, दिल की बीमारी, सूजन, कमजोर पाचन-तंत्र, बहुमूत्र की समस्या, एलर्जी
	केरियाई जिंसेंग (Panax Ginseng)	जड़	थकावट, सहनशक्ति की कमी, कमजोर दिमाग, मधुमेह (ज्वरबिटीज), रोग-प्रतिरोधक क्षमता की कमी, ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखने के लिए, नुपुंसकता, लिंग का सख्त न होना, शारीरिक कमजोरी, बैड कोलेस्ट्रॉल कम करने और हृदय गति को सुचारु रखने के लिए, फ्लू, सर्दी, शक्ति स्फूर्ति में कमी
	मिर्क थिसल (Silybum Marianum)	बीज	रक्त को शुद्ध रखना, लिंफ और गाल-ब्लाडर की सुरक्षा के लिए
	दल चैनी (Cinnamomum Zeylanicum)	छल तैल	दमा, ब्रॉन्कायटिस, हृदय-रोग, ज्वर, अकड़न
	वैंच बीज (Mucuna Pruriens)	जड़ पत्तियाँ, बीज	लिंग का ढीलापन, शीघ्रपतन, वीर्य की कमी, कामेच्छ की कमी, दर्द व पेट की तकलीफ, बुखार, खांसी, सूजन, गैस की समस्या, गुर्दे की पथरी, नुपुंसकता, स्नायु-दौर्बल्य, कब्ज
	गोक्षुर (Tribulus Terrestris)	जड़, फल सभी भाग	निर्बल पौंस्य शक्ति / जीवन शक्ति / कामेच्छ की पुरुष में कमी, स्त्री-पुरुष दोनों के लिए कामोद्दीपक, किडनी/मूत्र-जनित रोग
	डेम्भिअन (Tumera Aphrodisiaca)	पत्तियाँ	कामेच्छ की कमी, स्त्री-पुरुष दोनों के लिए, कामोद्दीपक यौन-शक्तिवर्धक

नाम

फल

उपयोग

	कोचीला (Strychnos NuŪvomica)	बीज	स्नायु-रोग, लकवा, जखम का भरना
	हर्रे (Terminalia Chebula)	बीज	कफ, सूजन, कुष्ठ रोग, जखम का भरना
	बहेड़ा (Terminalia Bellerica)	छाल, बीज	कफ, अक्सर, जलेवर, उल्टी, अन्त्रि
	घृतकुमारी (Aloevera)	पत्तियाँ	जखम भरने के लिए, त्वचा में निखार के लिए, कब्जियत दूर करे
	पिपरमिंट (Mentha Pipertia)	पत्तियाँ, पुष्प, तेल	पेट दर्द, अपच, बुखार, उदर-वायु
	सगर्गोता (Sagargota)	जड़, पत्ती, बीज	मधुमेह, मलेरिया, पेचिश, मासिक प्रवाह कम करने के लिए (Emmenagogue) गर्भस्रावक
	मेथी (Trigonella Foenum & Graecum)	बीज	कजन कम करने, शुष्कार्कक, पीड़दायक माहवरी, साँसें की बदबू, अपच रक्त में कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए
	कांताकारी (Solanum Xanthocarpum)	फल, बीज, सभी भाग	सूजन, शुष्कार्कक, पेट-दर्द, मूत्रार्कक
	खस-खस (Vetiveria Zizanoides)	जड़, तेल	एंटीसेप्टिक, गठिया, सन्धिवत (Rheumatism) शुष्क एवं फटी त्वचा, मांसपेशियों का दर्द
	अमलतास (Cassia Fistula)	फल, बीज, गूदा, जड़, छाल	स्मिफ्रलिस, कुष्ठरोग, आंत में कर्म

नाम

फल

उपयोग



कलमेस (Andrographis Paniculate)

रसी भाग

ज्वर, कमजोरी, गैस की समस्या



सहज (Moringa Oleifera)

रसी भाग

उदरशूल, मोच, सायटिक, जोड़ों के दर्द, सर्दी, जुखाम, कमजोर हड्डियां, आँखों की रोशनी, रक्त की अशुद्धि, गाँठ, फोड़ा, पेट के कीड़े, सूजन, मोटापा, दस्त, उल्टी, कब्ज, बलगम, अशुद्ध रक्त, बैक्टीरियल संक्रमण



लज्जती (Mimosa Pudica)

जड़ बीज

जखम, बवासीर, पेचिश, शारीरिक दौर्बल्य, स्तनों का विलोपन



कड़वा (Murraya Koenigii)

पत्तियाँ

मतली, अपच, मोटापा, मोतियाबिंद, बाल झड़ना



महुआ (Madhuca Longifolia)

पुष्प छल

जखम, कुष्ठरोग, मिर्गी, गठिया, नपुंसकता, चेहरे के दाग-धब्बे, स्तनों में दूध की कमी, सायटिक



अरुंड (Hibiscus Rosasinensis)

जड़ पुष्प

मूत्र की मात्रा में कमी, अधिक कोलेस्ट्रॉल, रूमी, बाल झड़ना



कुस्वी (Macrotyloma Uniflorum)

बीज

मूत्र की मात्रा में कमी, मोटापा, वात, कफ, किडनी की पथरी, लिवर या प्लीहा के विकार, श्वेत प्रदर



मुल्हवी (Glycyhiza Glabra)

जड़

श्वसन रोग, पाचन रोग, गैस की बीमारी, एसिडिटी, पेट का अल्सर, जीवाणु संक्रमण, सूखी खांसी, जुकाम, गले की सूजन, आँखों की कमजोरी, कब्ज, वायुरोग, चेहरे के दाग-धब्बे, मुँह के छाले



गुग्गर (Gymnema Sylvestre)

पत्तियाँ

खयबिटीज, दमा, हाइड्रोसिल



मकई/रसमरी (Solanum Nigrum)

पत्तियाँ, फल ठहनी और बीज

भूख की कमी, गठिया, सूजन, बवासीर, कोढ़, खांसी, उल्टी, कफ, आँखों की बीमारी, चर्म-रोग, दस्त, पीलिया, मुँह के छाले, अनिद्रा, बढ़ी प्लीहा, आंत में संक्रमण

## नाम

## फल

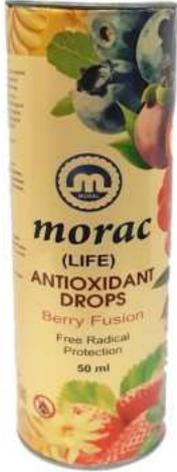
## उपयोग

	बंस (Bamboo)	पत्तियाँ, सभी भाग	अल्सर, खयरेिया, अपच कद बढ़ाने के लिए, अन्ध्र, कमजोर यौन-शक्ति, तनाव, अक्सद
	सदाबहार (Vincea Rosea)	पत्तियाँ, सभी भाग	खांसी, गले की खराश, फेफड़ों का संक्रमण, मधुमेह (खयबिटीज), रक्त कैंसर, पेट-दर्द
	हिन/महेंदी (Lawsennia Lemis)	पुष्प, पत्तियाँ, बीज, छल	जल्म, चोट, ज्वर, मासिक दर्द, मूत्र की मात्रा में कमी, प्रतिरोधक क्षमता की कमी, सूजन, सुस्त त्वच
	मन्दुकपर्णी (Centella Asiatica)	सभी भाग	अल्सर, लेप्रोसी, जेंडिस, खयरेिया, पेशाब कम आना
	नगेरकर (Mesua Ferrea)	पुष्प, छल, पत्तियाँ	दमा, त्वच की जल्म, क्म, पेचिश, बवासीर
	अन्तमूल (Hemibi Smusindicus)	जड़, पत्तियाँ	भूख की कमी, कमेच्छ की कमी, वयुनाशी, छेटे-मोटे जख से रक्तत्रव, त्वच के सिक्खन में कमी
	पषाणमेद (Coleus Barbatu)	जड़	किडनी में पषरी
	चिरैत (Swertia Chiraita)	सभी भाग	चर्मरोग, ज्वर, जल्म, रक्त की अशुद्धि
	पिप्ली (Pepper Longum)	जड़, फल	सर्दी, भूख की कमी, बढ़ी हुई प्लेहा, ब्रॉकयटिस
	सर्पगंधा (Ranwolfia Serpentina)	जड़	अन्ध्र, उच्च रक्तत्रप



रोग-निरोधक, रक्तारथ्यवर्धक, आहारपूरक

## मोरेक



पैक  
50 ml

जैसा कि हम जानते हैं कि एन्टीआक्सीडेंट्स फ्री रेडिकल्स को नष्ट करने या कम करने का कार्य करते हैं. आक्सीकरण की प्रक्रिया में आक्सीजन एक अणु एलेक्ट्रॉन खो देने के कारण मुक्त कणों के रूप में अस्थिर हो जाता है और दोबारा फिर से स्थायित्व लाने के लिए एलेक्ट्रॉन पाने की कोशिश करता है. मुक्त कण या फ्री रेडिकल्स के कारण अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं जैसेरू मोयियाबिंद, कैंसर, अर्थरायटिस, चर्म-रोग, बढ़ती उम्र के प्रभाव, डायबीटीज, सुजन, हृदय-रोग, तनाव, अवसाद,, रोग-प्रतिरोधक क्षमता की कमी, बालों का झरना, मुहांसे,कब्ज, दन्त रोग आदि.

### एंटीऑक्सिडेंट्स के लाभ :

बढ़ती उम्र के प्रभाव को रोकना, हृदय रोग से मुक्त रखना, डायबिटीज नियंत्रित रखना, कैंसर के रिस्क कम करना, आँखों को रोग से बचाव, इम्यून पावर में वृद्धि, अनेक रोगों से मुक्त रखना...

मोरेक ड्रॉप्स का है अधिकतम ORAC. ORAC याने oxygen Redical Absorbance Capacity का अर्थ होता है फ्री रेडिकल्स को नष्ट करने वाले एंटीऑक्सिडेंट की क्रिया की माप, अधिक ORAC का अर्थ होता है

एंटीऑक्सिडेंट की अधिक एक्टिविटी,

मोरेक ड्रॉप्स के 100 ml की पोषण वैल्यू निम्नलिखित हैं :

Energy (Kcal)/100 mg 150.18 mg

VitaminC 34.52mg

VitaminE 02.81mg

Carbohydrate 34.68mg

Nitrogen 0.46mg

ORAC – 203418

इसके अतिरिक्त MORAC ड्रॉप्स में है उच्च ORAC वाले फलों के सत जैसे सीबकथोर्न, अकाई बेरी, ब्लू बेरी, मैंगो स्टीन, क्रैन्बैर्री, लौंग, अनार, लाल अंगूर, जिन्सेंग, नोनी, सिनामों और अनन्नास.

सावधानी-

दूध के साथ इसे मिश्रित कर उपयोग नहीं करें. यह औषधि नहीं बल्कि एक न्यूट्रीशियल ड्रिंक है.

उपयोग विधि: वयस्क-5-10 ड्रॉप्स शरीर की बेसिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है.

बच्चे (4-10 साल) 4 ड्रॉप्स जूस या जल के साथ



## कम्प्लीट हेल्थ

उम्र बढ़ने के साथ-साथ एनफलेमेट्री पाथवे के बंद होने से ब्रेन के नर्व सिग्नल डैमेज होते हैं और मानसिक समस्याएं पैदा होनी शुरू हो जाती हैं, जैसे पार्किन्सन और अलजाइमर। यह टैबलेट हमारे नर्व सिग्नल्स को बेहतर करता है और इन्फ्लेमेशन को खत्म करता है जिससे अलजाइमर व पार्किन्सन जैसी बीमारियों में आराम मिलता है। यह कौरटी सौल नामक हार्मोन को बढ़ाता है जिससे डिप्रेशन, एनजाइटी और तनाव में लाभ मिलता है। यह डोपामइन और सैरोटोनिन की मात्रा को बढ़ाता है जिससे सकारात्मक उर्जा मिलती है। पेट सम्बन्धी समस्याओं पर यह बहुत सकारात्मक प्रभाव डालता है। इसमें प्रचुर मात्रा में फाइबर होने की वजह से यह हमारी आंखों को साफ करता है और डाइजैस्टिव ट्रैक की कार्यक्षमता को बढ़ाता है, साथ ही कोलोन में जमी हुई गंदगी को बाहर निकालने में मदद करता है।



### हृदय रोगों के लिए -

यह हृदय रोगों में बहुत ज्यादा असरदार औषधि है। इसमें मौजूद एनथोसाइनिन कम्पाउण्ड की वजह से हार्ट अटैक की सम्भावना कम हो जाती है। एनथोसाइनिन हमारे शरीर के एच. डी.एल और एल.टी.एल. लेवल को ठीक करता है। इनका नियमित इस्तेमाल इस्टैरौल प्रदान करता है तथा नसों को रिलैक्स करता है तथा वेसोडाइलेटिंग इफैक्ट को बढ़ाता है। धमनियों को संकरा होने से बचाता है जिससे खून का प्रवाह सुचारु रूप से होता है। एक रिपोर्ट के अनुसार एनथोसाइनिंग का लगातार व नियमित इस्तेमाल हार्ट अटैक की संभावना को 32-40% तक कम करता है।

### मानसिक स्वास्थ्य -

उम्र बढ़ने के साथ-साथ एनफलेमेट्री पाथवे के बंद होने से ब्रेन के नर्व सिग्नल डैमेज होते हैं और मानसिक समस्याएं पैदा होनी शुरू हो जाती हैं, जैसे पार्किन्सन और अलजाइमर। यह टैबलेट हमारे नर्व सिग्नल्स को बेहतर करता है और इन्फ्लेमेशन को खत्म करता है जिससे अलजाइमर व पार्किन्सन जैसी बीमारियों में आराम मिलता है। यह कौरटी सौल नामक हार्मोन को बढ़ाता है जिससे डिप्रेशन, एनजाइटी और तनाव में लाभ मिलता है। यह डोपामइन और सैरोटोनिन की मात्रा को बढ़ाता है जिससे सकारात्मक उर्जा मिलती है।

### पेट सम्बन्धी समस्याएं -

पेट सम्बन्धी समस्याओं पर यह बहुत सकारात्मक प्रभाव डालता है। इसमें प्रचुर मात्रा में फाइबर होने की वजह से यह हमारी आंखों को साफ करता है और डाइजैस्टिव ट्रैक की कार्यक्षमता को बढ़ाता है, साथ ही कोलोन में जमी हुई गंदगी को बाहर निकालने में मदद करता है। यह पैरीस्टलिक मूवमेंट को बढ़ाता है। यह पेट की सभी समस्याएं जैसे आईबीएस और इनडाइजेशन भी को दूर करता है।

### उपयोग विधि: वयस्क--

1 या 2 टेबलेट्स प्रतिदिन / चिकित्सक के परामर्शनासार

## रजत संजीवनी



रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं के विरुद्ध नैनो सिल्वर तीन प्रकार से कार्य करती है :

1. सिल्वर ऑक्सीजन का एक शक्तिशाली कैरियर है, जीवाणु के संपर्क में आने के बाद यह ऑक्सीजन ६ बर्सेट ६ रिलीज करता है जिसके कारण जीवाणु की कोशिका-झिल्ली या दीवार क्षतिग्रस्त हो जाती है और उनका अंत हो जाता है.
2. सिल्वर उत्प्रेरक का कार्य करता है, एक-कोशिकीय बैक्टेरिया, फफूंदी या वायरस जिस एन्जईम का उपयोग अपने श्वसन या मेटाबॉलिज्म के लिए करते हैं उस एन्जईम को सिल्वर निष्क्रिय कर देता है जिससे जीवाणु खत्म हो जाते हैं, पर इससे आस-पास की कोशिकाओं या टिसु पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होने देता है.
3. सिल्वर के नैनो-पार्टिकल्स रोगाणुओं की कोशिकाओं की क्षतिग्रस्त दीवारों से अवशोषित होकर उनके डी.एन.ए. से जुड़ जाते हैं और उसके रिप्लिकेशन को रोक देते हैं जिसके संक्रमण आगे नहीं फैल सकता है.
4. तिहासिक मेडिकल टेक्स्ट के अनुसार कोलोईडल सिल्वर का उपयोग पुरातन काल से कई प्रकार के रोगों में हुआ है जैसे मुहांसे, दुर्गंधित सांस, मुंह के छाले, गनेरिया, कैंसर, एलर्जी, फोड़े, सोरिएसिस, एपेंडीसायटीस, हर्पीस, रद्द्यूमेटिक्स, जोड़ों के दर्द, एकजीमा, सर थोट, दस्त, सीफलिस, स्टेफ-इन्फेक्शन, लेप्रेसी, अपच, बर्न, नाक-कान-गला के सेप्टिक कंडीशंस, टी.बी. हूपिंग कफ, मलेरिया, मेनिंजायटिस, सायनुसायटिस, सर्दी, फ्लू आदि.



कुछ कैंसर वायरस के कारण भी होते हैं. नैनो सिल्वर में कैंसर कोशिकाओं को खत्म करने के रिपोर्ट मिले हैं. नैनो सिल्वर की अधिक कंसंट्रेशन का मतलब है रोगाणुओं या वायरस से तुरंत संपर्क. स्वस्थ रहने के लिए नैनो सिल्वर नियमित उपयोग के लिए उत्तम है क्योंकि इसके अत्यधिक इम्यून-पावर होने के कारण रोगों के होने की संभावना क्षीर्ण हो जाती है. यह एक प्रकार से शरीर का दूसरा इम्यून सिस्टम है. यह हड्डियों का निर्माण करने वाली कोशिकाओं को उत्प्रेरित करता है. कई प्रकार के कठिन संक्रमण को दूर कर सकता है और त्वचा तथा दूसरे सॉफ्ट टिस्युज को भी हील करने में सहायक है.

इसके नियमित उपयोग से जलने जैसी अवस्था के बाद होने वाले विषम स्थितियों से बचाव कर जीवन-अवधि बढ़ाने में मदद मिलती है.

नैनो सिल्वर में वायरस के विरुद्ध भी लड़ने की क्षमता के अनेक रिपोर्ट्स हैं.

### सुरक्षित

कई एंटीबायोटिक्स लिवर या किडनी को क्षतिग्रस्त कर सकते हैं. इनके निरंतर प्रयोग से बैक्टेरिया और वायरस इनसे रेसिस्टेंस हो जाते हैं और एंटीबायोटिक्स की मारक-क्षमता कम या खत्म हो जाती है, परन्तु सिल्वर का कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है क्योंकि यह प्राकृतिक है और अगर शरीर में इसकी अधिक मात्रा में मौजूदगी है तो किडनी के द्वारा यह बाहर फलश हो जाती है. इतने लम्बी अवधि से सिल्वर का उपयोग होने के बावजूद कोई बैक्टेरिया या जीवाणु सिल्वर से रेसिस्टेंस नहीं हैं.



## डाईबिटीज –

इसका नियमित इस्तेमाल पौलीफिनॉल जैसे कवरसिटीन वृ 3, ग्लाइकोसाइड्स, रोटीन की मात्रा को बढ़ाता है और ब्लड शुगर लेवल को मन्टेन करता है । लेबिल को बढ़ाता है जिससे डाईबिटीज को नियंत्रण में रखा जा सकता है ।

## सेल्युलर हैल्थ –

यह टैबलेट हमारे सेल्युलर हैल्थ पर अच्छी तरह से काम करती है तथा कैंसर उत्पन्न करने वाले कारकों पर भी काम करता है । यह तनाव स्मोकिंग, शराब तथा प्रदूषण, अनियमित खान-पान तथा अनियमित दिनचर्या के कारण उत्पन्न होने वाले सभी विकारों और टोक्सिंस को ठीक करता है । हमारे शरीर से फ्री-रैडिकल्स को बाहर निकालता है । यह फ्री-रैडिकल्स हमारे शरीर के सेल्स को अत्यधिक नुकसान पहुंचाते हैं । इस स्थिति को ऑक्सीडेंटिव स्टैथ कहा जाता है । यह टैबलेट हमारे शरीर से टोक्सिन को प्रभावशाली रूप से न्यूट्रीलाइज करके बाहर निकालता है ।

## कैंसर में –

इस टैबलेट में एकटिव डिटौक्सीफाइन एनजाइम होने की वजह से यह कैंसर सैल के विघटन यानि पौलीफिरेशन को रोकता है जिससे कैंसर उत्पन्न करने वाले सैल्स की मृत्यु हो जाती है ।

## रोग प्रतिरोधक क्षमता –

इसमें प्रचुर मात्रा में अमीनो एसिड, विटामिन A, आयरन और विटामिन B है, जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को ठीक करके उसको बढ़ाते हैं ।

इसमें प्रचुर मात्रा में अमीनो एसिड, एनथोसाइमिन, फलैवेनाइड, विटामिन, फैटीएसिड, क्लोजिन और कैराटीन है जिससे त्वचा लचीली तथा चमकदार बनती है तथा त्वचा और बालों सम्बन्धित समस्याओं में निजात मिलती है । जोकि फिनोलिक कम्पाउण्ड रिलीज करता है, जोकि कौस2, लाइफौक्सीजिनेट तथा इनटयूशिवल नाइट्रिक ऑक्साइड, जो कि शरीर में इंप्लामेशन उत्पन्न करते हैं, उनको रोकता है और गर्भावस्था में होने वाले इन्फ्लेमेशन में इसका बहुत अच्छा प्रभाव है ।

उपयोग विधि :

वयस्क – 1 या 2 चाय की चम्मच से 1 बार दिन में।

शिशु – आधा या 1 चम्मच से एक बार दिन और 1 बार रात में।

## शुभमशेल लिक्विड



आज कल हर दूसरा व्यक्ति किसी न किसी बीमारी से परेशान है। कुछ बीमारियों का इलाज होना संभव है और कुछ का होना संभव नहीं है। लेकिन अगर हम स्टेम सेल के बारे में जान लें तो हमें पता लगेगा कि करीब-करीब हर बीमारी का इलाज स्टेम सेल से संभव होता जा रहा है। हम आपको जिस खोज के बारे में बताने जा रहे हैं वो इस सदी की सबसे बड़ी खोज है, और वो है- स्टेम सेल!

उम्र बढ़ने के साथ शरीर की इम्यून सिस्टम भी कमजोर पड़ने लगती है, और आंतों के द्वारा पोषक तत्वों के अवशोषित करने की क्षमता भी कम हो जाती है। **More Stem Liquid (drop)** के रूप में उपलब्ध होने के कारण अवशोषण की प्रतिशत पाउडर की तुलना में अत्यधिक बढ़ जाती है इस प्रकार यह एक तेजी से कार्य करने वाला उच्च कोटि का उत्पाद है।

### **More STEM LIQUID (drop)** से लाभ -

1. व्यस्क स्टेम सेल्स का जीर्णोद्धार करके उम्रजनित रोगों को घटाता है।
2. हृदय प्रणाली के स्वास्थ्य को सुचारु रखता है।
3. रक्त में ग्लूकोज के स्तर को नियंत्रित रखता है।
4. रक्तचाप को नियंत्रित रखता है।
5. नाड़ी की सामान्य गति को बनाए रखता है।
6. कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित रखता है।
7. झुर्रियां आने से रोकता है।
8. सहनशक्ति एवं ऊर्जा बढ़ाता है।
9. प्रतिरक्षा प्रणाली को स्वस्थ रखता है।
10. जोड़ों को स्वस्थ रखता है।



उपयोग विधि: 5 ड्रॉप दिन में दो बार खाली पेट  
या भोजन से आधा घंटा पहले



## एलोमोर सुपर



एलोमोर सुपर एक उत्तम स्वास्थ्य पेय है। Wellness juice केवल स्वाद की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। एलोमोर सुपर को पोषक तत्वों का पावरहाऊस कहा जा सकता है क्योंकि इसमें लगभग सभी आवश्यक पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं। इसका सेवन नियमित करने से स्वास्थ्य की समस्याएँ दूर रहती हैं और रोगों की संभावना भी क्षीण हो जाती है।

‘एलोमोर सुपर हनी जिंजर लेमन जूस’ पोषक तत्वों का भंडार है क्योंकि इसमें शरीर के तंत्रों को सुचारु रूप से चलाने के लिए कई जरूरी पोषण-घटक निहित हैं। जैसा कि इस जूस के नाम से ही पता चलता है कि इस जूस में केवल एलोवेरा ही नहीं बल्कि इसमें अदरक, लेमन, शहद, मोरिंगा, ग्रीन टी, व्हीट ग्रास और करक्यूमिन के भी मिश्रण के कारण उन सब के अत्यंत लाभप्रद गुण भी समाहित हैं।

### एलोवेरा या घृत कुमारी

एलोवेरा एक प्रभावशाली, चमत्कारी, बहुमुखी औषधियुक्त गुणों से युक्त प्रसिद्ध हर्ब है। इसमें लगभग 75 सम्भाव्यतः सक्रिय घटक निहित होते हैं जैसे विटामिन ए, बी१, बी२, बी३, बी६, बी१२, फोलिक एसिड, एंजाइम, पॉलिसैचेराइड्स, फेटी एसिड्स और एंटी-ऑक्सीडेंट्स जैसे कि विटामिन सी और विटामिन इ. एंटी-ऑक्सीडेंट्स मुक्त कणों को नष्ट कर हमारे शरीर को रोगों से बचाते हैं और हमें सुरक्षित रखते हैं। एलोवेरा जूस में इनके अतिरिक्त स्वास्थ्य लाभ वाले कई मिनरल्स याने कि खनिज भी उपलब्ध होते हैं जैसे कि आयरन, कैल्शियम, मैग्नेशियम, मैंगनीज, कापर, सेलेनियम, सोडियम, पोटेशियम और जिंक। इस प्रकार यह एक सुपर फूड सप्लीमेंट है।

## एलो मोर सुपर जूस के मुख्य घटक -

### GINGER

जिंजर यानी कि अदरक में एंटीमायक्रोबिअल गुण हैं। यह विटामिन्स, मिनरल्स और बीटा-कैरोटीन का अच्छा स्रोत है। पेट के विकारों जैसे पेट की गैस, अपच, शूल, डायेरिया के उपचार में इसका उपयोग किया जाता है। ठण्ड, फ्लू, गठिया, मतली, मासिक धर्म के दर्द में भी इसका उपयोग किया जाता है।

### LEMON

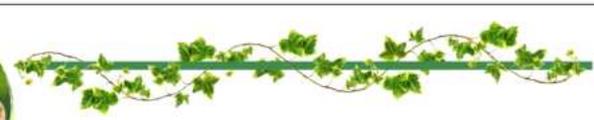
नीम्बू का रस विटामिन सी (एन्टीऑक्सीडेंट) का अत्यंत उत्तम स्रोत है। शरीर को इसके सेवन से अत्यधिक मिनरल्स जिसमें पोटेशियम भी शामिल है, मिलते हैं। पी.एच.स्तर को संतुलित रखने, वजन को नियंत्रित रखने, विषाक्त तत्वों को बाहर निकालने, कब्ज और एसिडिटी दूर करने, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, बालों को कोमल और चमकदार बनाने और थकान दूर करने के लिए जाना जाता है।

### MORINGA

मोरिंगा या सहजन में उत्कृष्ट पोषक तत्व पाए जाते हैं। विटामिन के अलावा जिंक, कैल्शियम और आयरन जैसे

पैक : 500 ml + 100 ml free

स्वास्थ्य क्रांति की ओर...



मिनरल सहजन (कतनउेजपबा) में पाये जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं। इसके सूजन और दर्द कम करने, शक्तिशाली मूत्रवर्धक होने, वजन कम करने में सहायक, क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत करने, यौन शक्ति बढ़ाने, पाचन-क्रिया सुचारु रखने के गुण समाहित हैं। मोरिंगा में उपस्थित विटामिन बी, प्रो विटामिन,बीटा-कैरोटीन, और प्रोटीन जैसे पोषक तत्वों के कारण चेहरे पर चमक और बाल भी स्वस्थ रखते हैं।

## GREEN TEA

ग्रीन टी एन्टीआक्सीडेंट का एक उत्तम स्रोत है। इसमें प्रचुर मात्रा में निहित पोलिफेनोल म्ळळ (म्चपहंससवबंजमबीपद हंससंजम)त्वचा में चमक और निखार लाने के लिए प्रसिद्ध है और एलोवेरा त्वचा में उपस्थित कोलेजेन को सपोर्ट करने के साथ ही त्वचा की कोशिकाओं को नमीयुक्त रखता है। इनके संयुक्त प्रभाव से त्वचा सुन्दर, कोमल, झुर्री-रहित और बेदाग दिखती है।

## WHEAT GRASS

व्हीट ग्रास जूस याने कि गेहूं के जवारे का रस के अनेकानेक लाभ हैं, जैसे बालों का जल्दी सफेद न होने देना और उनको घने, काले और मजबूत बनाना, मोटापे से मुक्ति, शुगर नियंत्रण, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, पाचन क्रिया में सुधार, कब्ज, एसिडिटी से राहत, एन्टी-आक्सीडेंट का प्रभाव के कारण महत्वपूर्ण है।

## HONEY

यह एन्टीबैक्टीरियल होने के साथ ही एन्टी-आक्सीडेंट भी है। शहद एक अच्छा |दजप-व•पकंदज है इसलिए ये बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करने में फायदेमंद है। शहद याददाश्त तेज करता है, कमजोर तंत्रिका तंत्र को ठीक करता है। शहद कामशक्तिवर्धक है। इसका सेवन पुरुषों में जमेजमेजमतवदम और महिलाओं में भ्रंजतवहमद हार्मोन बनाने के प्रक्रिया को तेज करता है। शहद में कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटैशियम, सोडियम और जिंक आदि खनिज तत्व पाए जाते हैं। इसके उपयोग से शरीर सुन्दर, सुडौल, सुदृढ़ होता है।

## CURCUMIN

हल्दी में कर्कुरमिन और विटमिन । भी पाए जाते हैं। हल्दी पाचन तन्त्र की समस्याओं, गठिया, ब्लड-सर्कुलेशन की समस्याओं, कैंसर, बैक्टीरिया के संक्रमण, उच्च रक्तचाप और एलडीएल कोलेस्ट्रॉल की समस्या और शरीर की कोशिकाओं की टूट-फूट की मरम्मत में लाभकारी है।

**उपयोग विधि :**

30 से 50 ml एक गिलास जल के साथ प्रतिदिन 2 बार



## एलो मोर जूस

### शहद, लेमन और अदरक के साथ हेल्दी, स्वादिष्ट एलोवेरा जूस

100% stabilized juice of Aloe barbadensis, honey, lemon extract, ginger extract.

अलोवेरा को 500 साल से प्राचीन औषधि के रूप में जाना जाता है। यह एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर है और साथ ही इसमें आयरन, पोटैशियम, क्रोमियम, सोडियम, कैल्सियम, जिंक, मैंगनीज, कई प्रकार के एमिनो एसिड्स और विटामिन A, विटामिन B1, विटामिन B6, B12, विटामिन C, निआसिन और फोलिक एसिड मौजूद होते हैं।

'मोरल' का **एलो मोर जूस** एक प्राकृतिक, शुद्ध और असरदार शक्तिवर्धक जूस है। इसमें Aloe barbadensis, शहद, लेमन और अदरक के सार निहित हैं। फास्ट फूड, पोल्यूशन, स्मोकिंग, शराब, गुटखा आदि बुरी आदतों के कारण शरीर में विषाक्त पदार्थ पैदा हो जाते हैं। एलो मोर जूस एक **Miracle Drink** यानि 'चमत्कारी पेय' है। इस पेय के अनगिनत लाभ हैं जैसे इसमें स्थित अलोवेरा जूस के गाढ़े होने के कारण पाचन नली से गुजरते समय यह वहां स्थित सभी टोक्सिंस को सिर्फ अवशोषित ही नहीं करता बल्कि उन्हें शरीर के बाहर भी निकाल देता है।

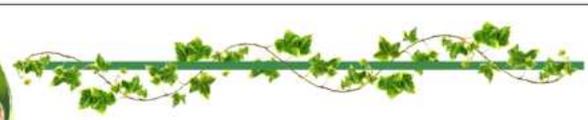
इसके उपयोग से इम्यून सिस्टम के एक प्रमुख तत्व पॉलीसेकराएड्स में वृद्धि होती है जिसके कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता अद्भुत रूप से बढ़ती है।

हमारा शरीर जब अधिक अम्लीय हो जाता है तो संक्रमण और रोगों की संभावना बढ़ जाती है। एलो मोर जूस पीने के बाद इसका पाचन तंत्र पर क्षारीय प्रभाव पड़ता है और इससे स्वस्थ रहने की खुशी मिलती है।

पाचन तंत्र पर **एलो मोर** के लेकजेटिव प्रभाव के कारण यह कब्जियत में अत्यंत लाभकारी है, पाचन तंत्र ठीक रहता है। पाईल्स के रोगियों के लिए भी फायदेमंद है। इसके नियमित उपयोग से रक्त में हीमोग्लोबिन की वृद्धि होती है।

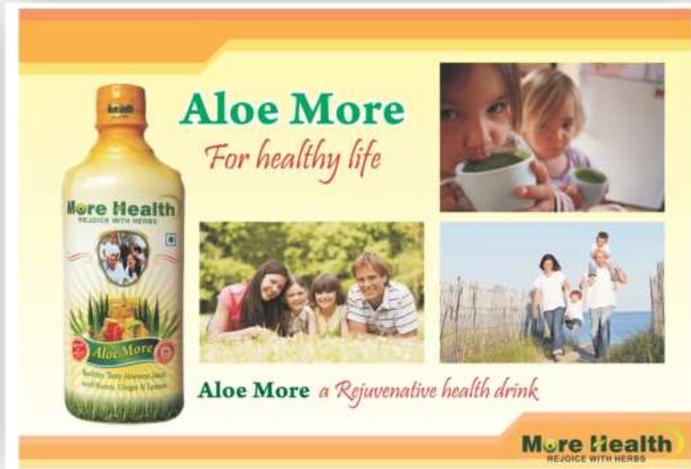
शोधों से ज्ञात हुआ है कि डायबिटीज में अलोवेरा के नियमित उपयोग से दो सप्ताह के अंदर खाली पेट में ब्लड ग्लूकोज (fasting blood glucose) और चार सप्ताह के अन्दर ट्रायग्लिसराईड का स्तर कम हो जाता है। इसके उपयोग से रक्त संचार सुचारू रहता है और यह ब्लड प्रेशर से पीड़ित लोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। एलोमोर जूस के नियमित सेवन से बार-बार भूख नहीं लगती है, वजन कम होता है और कमजोरी भी महसूस नहीं होती है। इसे रोजाना पीने से दांतों में चमक आती है, माउथ-फ्रेशनर की तरह कार्य करने के कारण यह ओरल कैविटी को जीवाणुओं से मुक्त रखता है और मुंह की दुर्गन्ध को भी दूर कर देता है। एलो मोर के नियमित सेवन से बाल भी घने, चमकीले और रूसी-मुक्त रहते हैं, त्वचा की चमक और कान्ति बढ़ने लगती है, त्वचा की नमी बरकरार रहती है।

पैक : 500 ml + 100 ml free



एलोमोर जूस पीने से त्वचा से सम्बंधित समस्यायें, मुहांसे, रूखी त्वचा, झुर्रियाँ, चेहरे के दाग-धब्बे, आँखों के काले घेरे दूर होते हैं। यह दिल से सम्बन्धित समस्याओं, जोड़ों के दर्द, डायबीटीज, यूरिन की समस्या, शरीर में जमा विषैले पदार्थ आदि को खत्म करने में समर्थ है।

एलोमोर जूस के सेवन से शारीरिक और मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है, स्मरण शक्ति बढ़ती है और शरीर में चुस्ती-फुर्ती बनी रहती है। स्त्री-रोगों में भी यह लाभकारी है। माहवारी से जुड़ी समस्याओं को इसके नियमित प्रयोग से दूर किया जा सकता है। एलोमोर जूस में शहद और नीम्बू भी मिले हैं इसलिए यह गैस, अपच और पाचन संबंधी समस्याओं से निजात दिलाता है और पाचन शक्ति भी बढ़ाता है। आँखों की रोशनी तेज होती है, आँखों का दर्द कम होता है। मोटापा कम करने के लिए एलोवेरा के साथ शहद और लेमन का मिश्रण बहुत फायदेमंद होता है। अदरक के साथ शहद और लेमन के भी सार मिश्रित हैं। सर्दी, जुकाम या खांसी होने पर एलोवेरा और शहद का मिश्रित पेय बहुत लाभदायक होता है। अदरक, लेमन और शहद के साथ मिश्रित होने के कारण एलो मोर जूस एक स्वादिष्ट पेय है जिसे बच्चे, जवान और बुजुर्ग सभी ले सकते हैं।



उपयोग विधि :

30 से 50 ml एक गिलास जल के साथ प्रतिदिन 2 बार



## जॉइंट रेस्ट कैप्सूल / आयल

जोड़ों में दर्द की शिकायत अघेड़ और वृद्धों को अधिक होती है। जोड़ों का दर्द कोई बीमारी नहीं बल्कि एक लक्षण है जो निम्न कारणों से हो सकता है—

**ऑस्टियो आर्थराइटिस**—यह गठिया बढ़ती उम्र के साथ होता है और इसका मुख्य कारण जोड़ों के मध्य पाई जाने वाली कार्टिलेज का घिस जाना है।

**रोरियाटिक आर्थराइटिस**—यह जोड़ों और त्वचा को प्रभावित करने वाली दीर्घकालिक बीमारी है। इसमें त्वचा और जोड़ों में सूजन और दर्द रहता है।

**सेप्टिक आर्थराइटिस**— यह जोड़ों में संक्रमण की वजह से होता है।

**गाउट**—यह जोड़ों में यूरिक-एसिड कणों के जमा होने से होता है। विशेष रूप से टखनों, पैरों की उँगलियों और एड़ियों के आस-पास दर्द रहता है।

### जॉइंट रेस्ट एडवांस में ग्लुकोसामिन के फायदे

ग्लुकोसामिन कार्टिलेज को स्वस्थ रखता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ जोड़ों में ग्लुकोसामिन की मात्रा घटती जाती है और यह जोड़ों के क्षय का प्रमुख कारण है। ग्लुकोसामिन के उपयोग से इस क्षय को रोका जा सकता है और गठिया से होने वाले दर्द और सूजन को कम किया जा सकता है। ग्लुकोसामिन शरीर के अन्दर **G.A.G.** (ग्लाइकोसामिनोग्लाइकान्स) को बढ़ाने में मदद करता है और कार्टिलेज को मजबूत बनाता है।

### सलाईगुग्गुल—

सलाईगुग्गुल में बॉसवेलिक एसिड और पोलिसाल पाई जाती है जो सूजन और दर्द को कम करने में प्रभावी हैं। जॉइंट रेस्ट एडवांस में पाई जाने वाली सलाई गुग्गुल पानी में घुलनशील है और इसके अन्दर वसा और जल दोनों में घुलनशील पदार्थ हैं जो शरीर के विभिन्न हिस्सों में शीघ्रता से पहुँच कर अपना प्रभाव दिखाते हैं।

**पैक :**  
60 कैप्सूल्स  
**पैक :**  
100ml

### जॉइंट रेस्ट के मुख्य संयोजक

ग्लुकोसामिन	500mg
एलोवेरा	10mg
सेलेनियम	50mcg
बासविलिया	25mg
M.S.M.	100mg
मैंगनीज सल्फेट	20mg
सर्कुमिन	25mg
विटामिन—सी	25mg
क्रोमियम	50mcg



**उपयोग विधि :** 2 कैप्सूल्स दिन में दो बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

## पाईलो बीट

### टैबलेट और ऑइंटमेंट



पाईल्स (बवासीर) या हेमोरोइड्स गुदा और रेक्टम की बीमारी है। गुदा-क्षेत्र में शिरायें सूज जाती हैं और रक्त-स्राव होने लगता है। बवासीर में रक्त-नलिकाएं चौड़ी हो जानती हैं जबकी फिशर में गुदा मार्ग में मल के कड़े ही जाने के कारण जख्म हो जाते हैं। बवासीर विभिन्न आकार का होता है और यह आंतरिक (गुदा के भीतर) या बाहरी (गुदा के बाहर) हो सकता है। आंतरिक बवासीर गुदा छिद्र के 2 से 4 cm भीतर की ओर होता है जबकि बाहरी बवासीर गुदा के बाहरी किनारे पर होता है।

#### पाईल-ओ-बीट के प्रत्येक कैप्सूल में है

**-अर्शकुठार रस-** कई औषधिय पौधों के मिश्रण से तैयार किया हुआ रस है यह पाचन-शक्ति को बढ़ाता है और भोजन के पाचन में सहायता करता है। यह वात और कफ को नियंत्रित करता है।

- अर्शोधनी वटी -** इसका उपयोग दोनों प्रकार की बवासीर (रक्तस्राव वाली और बिना रक्तस्राव वाली) के उपचार में किया जाता है। यह बवासीर के आकार को कम करता है और रक्तस्राव को रोकता है।
- एल्वा शुद्ध (एलोवेरा) -** प्राकृतिक एलोवेरा का उपयोग बवासीर में बहुत ही प्रचलित उपचार है। यह भोजन के पाचन में विटामिन और पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाता है। यह सूजन, जलन और दर्द को कम करने में सहायक है। इसका उपयोग बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार के बवासीर में लिया जाता है। एलोवेरा सुचारु नियमित मल त्याग में सहायक है।
- हरड़ चोटी (टर्मिनलिया चेलुला) -** इसे हरितकी भी कहते हैं। यह बवासीर, भगंदर और गुदा-मलाशयसम्बन्धी रोगों में बहुत ही लाभदायक है। यह पाचक रसों के स्राव को बढ़ाता है और अवशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने में सहायक है। इसकी विशेषता है कि कब्ज को भी दूर करता है, आँतों के द्वारा फ्लुइड्स को अवशोषित करने में सहायक है और यह पेट साफ रखने में बहुत प्रभावकारी है।
- कहवारा पिष्टी -** इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधि के तौर पर दस्त, मासिक-सम्बन्धी रोगों और रक्त-स्राव वाले बवासीर में किया जाता है।

#### पाईल-ओ-बीट के प्रत्येक कैप्सूल में है

अर्शकुठार रस (A. F. I.)	100 mg
अर्शोधनी वटी (A. F. R.)	150 mg
एल्वा शुद्ध (एलोवेरा)	75 mg
हरड़ चोटी (टर्मिनलिया चेलुला)	200 mg
कहवारा पिष्टी (A. F. I.)	25 mg

#### पैक -

10X10 कैप्सूल, 30gm ointment  
में भी उपलब्ध

उपयोग विधि : 1 या 2 कैप्सूल रोज 2 बार पानी के साथ  
या चिकित्सक के परामर्शानुसार



## डी-स्टोन

प्रत्येक वर्ष आधे करोड़ से अधिक लोग किडनी स्टोन समस्या से ग्रसित होकर अस्पतालों के आकस्मिक चिकित्सा विभाग में जाते हैं। किडनी स्टोन की समस्या तब होती है जब मूत्र में मौजूद साल्ट्स ठोस क्रिस्टल बना लेते हैं। ये स्टोन्स मूत्र-नली के मार्ग को अवरुद्ध कर देते हैं। इसके कारण इन्फेक्शन हो सकता है और किडनी डेमेज हो सकती है या अपना काम करना बंद कर सकती है। किडनी स्टोन्स भिन्न-भिन्न आकारों में और भिन्न-भिन्न जगहों पर विकसित हो सकते हैं। किडनी में बने स्टोन्स को गुर्दों की पथरी कहते हैं।

**किडनी या गुर्दे में स्टोन या पथरी होने के एक या एक से ज्यादा लक्षण हो सकते हैं, जैसे**

- पीठ के निचले हिस्से के दोनों ओर बहुत ज्यादा दर्द होना
- पेट में दर्द का उठना और दर्द का बने रहना
- मूत्र में रक्त का आना
- मिचली या उल्टी आना
- बुखार और ठण्ड लगना
- मूत्र में बहुत ज्यादा दुर्गन्ध आना

**किडनी में स्टोन होने के कारण**

- मूत्र में कैल्शियम, ऑक्सलेट, सिस्टाइन, या यूरिक एसिड का स्तर ज्यादा हो जाने पर स्टोन बनता है।
- मूत्र में इनके सामान्य स्तर पर रहने पर भी स्टोन बन सकता है।
- अन्य बीमारियों के उपचार के लिए ली गयी औषधियों के प्रयोग से भी स्टोन का बनना संभव है।

**डी.स्टोन के लाभ**

- पेट दर्द, मरोड़ में फायदे मंद
- सूजन खत्म करे
- पेट में ऐठन में फायदेमंद
- पेशाब से मैग्नीशियम का प्रवाह रोके
- पेशाब रुक-रुक कर न होने दे
- पेशाब की जलन में राहत दे
- मूत्र नली की गांठो को दूर करे



**पैक :**  
60 टैबलेट्स

**डी.स्टोन की प्रत्येक टैबलेट में है**

ट्रिब्यूलस टेरेंसट्रिस (गोखरू एक्सट्रैक्ट)	:60 mg
बरजीनिया लिग्यूलाटा (पाषाणभेद एक्सट्रैक्ट)	:60 mg
बोएरहैविया डिफ्यूसा (पुनर्नवा एक्सट्रैक्ट)	:60 mg
ब्यूटियामोना स्पर्मा (पलाश पुष्प)	:50 mg
अफैलम (शुद्ध शिलाजीत)	:20 mg
क्रैटीवा नर्वाला (वरुण छाल एक्सट्रैक्ट)	:55 mg
एकीरेंथस एस्पेरा (अपमार्गसार)	:20 mg
हजरल यहूद भस्म	:50 mg
श्वेत पर्पटी	:25 mg
एकेशिया गम (गोंद)	:30 mg
शर्करा	:q-s-

**उपयोग विधि : 1 टैबलेट दिन में 2 या 3 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार**

## स्टीविया अमृत



स्टीविया अमृत में हैं अत्यंत लाभदायक हर्ब्स स्टीविया और एफ.ओ.एस.(Fructo Oligo Saccharides)

स्टीविया के बारे में तो आप जानते हैं पर इसके साथ एफ.ओ.एस. क्यों मिलाया गया है? दोनों के संयोजन के क्या लाभ हैं ?

पहले यह जानें कि एफ.ओ.एस. क्या है. यह कार्बोहाइड्रेट वर्ग का एक प्रकार का घुलनशील रेशा (fibre) है जिसका पाचन हमारे शरीर के द्वारा नहीं होता और यह पेट से बिना परिवर्तित हुए आंत के 'कोलोन' भाग में पहुंचता है। एफ.ओ.एस. आंत के 'कोलोन' क्षेत्र में उपस्थित मित्र या लाभदायक बैक्टीरिया का भोजन है।

हमारे पाचन तन्त्र की नली में प्राकृतिक रूप से 'कैनडीडा एलवीकेंस' नामक ईस्ट मौजूद होता है. जब हम अधिक मीठा खाते हैं तो हमारे पाचन तन्त्र की नली में कैनडीडा की संख्या में वृद्धि हो जाती है। इस अवस्था को 'कैनडीडीएसिस' कहते हैं। अधिक मिठास वाले भोजन के अभाव में कैनडीडा की संख्या में वृद्धि नहीं हो पाती है। अतः 'कैनडीडीएसिस' को दूर करने के लिए हमें ऐसे मीठे खाद्य पदार्थ ग्रहण करने चाहिए जो मीठे तो हों पर कैनडीडा के विरुद्ध हों जैसे कि शक्कर का बेहतर और सुरक्षित विकल्प स्टीविया का भोजन या पेय में इस्तेमाल कहने का अर्थ यह है कि आंत में कैनडीडा की संख्या सामान्य से अधिक न हो इसके लिए ऐसा भोजन या पेय ग्रहण करें जिसमें शुगर की मात्रा न्यूनतम हो या न के बराबर हो जैसे स्टीविया।

इस प्रकार स्टीविया अमृत में उपलब्ध स्टीविया और एफ.ओ.एस. (Fructo-OligoSaccharides) के संयोजन के कई लाभ हैं:



- हानिरहित मिठास
- ब्लड शुगर के स्तर पर नगण्य प्रभाव
- ब्लड-शुगर के स्तर को स्थिर और नियंत्रित रखने में सहायक
- रेशेदार भोजन में वृद्धि
- आंत में लाभदायक बैक्टीरिया की संख्या में वृद्धि
- सुचारु पाचन और कब्ज से राहत
- जीरो कैलोरी
- आंत में लाभदायक बैक्टीरिया की वृद्धि

उपयोग विधि:  
चाय, काफी, दूध, लस्सी जैसे पेय में 1 या 2 बूंद



## स्पिरुलिना और स्पिरुलिना-एस्टाजेथिन



स्पिरुलिना एक प्रकार का सूक्ष्मत्व ब्लू-ग्रीन शैवाल है जो नदियों, झीलों और तालाबों में पाया जाता है। स्पिरुलिना को विश्व के गिने-चुने 'सुपरफूड' में से एक अति प्रचलित 'सुपरफूड' माना जाता है। यह सम्पूर्ण आहारपूरक की एक बेहतरीन 100% शाकाहारी विकल्प है जो परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक है। स्पिरुलिना में बीटा कैरोटीन नामक एन्टीआक्सीडेंट के साथ आयरन, प्रोटीन, विटामिन A, B, E, जिंक, कॉपर, सेलेनियम, पोटैशियम, मिनरल्स, एन्टीआक्सीडेंट एन्जाइम, फायटोन्यूट्रीएंट्स, गामा लिनोलीनिक एसिड (आवश्यक फैटी एसिड) और प्रोटीन भी होती हैं।

अत्यधिक एंटीबॉडीज बनाने के कारण स्पिरुलिना शरीर की संक्रमण प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। स्पिरुलिना की संरचना में करीब 62% प्रोटीन है। प्रोटीन का एक बेहतरीन उद्गम होने के कारण यह एक अत्यंत उत्तम आहारपूरक है।

स्पिरुलिना 'जीजेनट्यूईन' की प्रचुरता के कारण आँखों के स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी है। स्पिरुलिना में 'फायकोसायनिन' नामक एक असाधारण और दुर्लभ एन्टीआक्सीडेंट है जो हृदय और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने में अत्यंत ही प्रभावशाली है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि 'फायकोसायनिन' में नए स्टेम-सेल्स बनाने की अद्भुत क्षमता है।

एस्टाजेथिन को "कैरोटीनोइड्स का राजा" कहा जाता है। विश्व के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि यह एक अत्यंत प्रभावशाली कैरोटीनोइड एन्टीआक्सीडेंट है जो विटामिन E से 500 गुणा, विटामिन B से 60-65 गुणा और ल्युटीन से 5 गुणा अधिक प्रबल है। यह उन दुर्लभ पोषक-तत्वों में से एक है जो ब्लड-ब्रेन और ब्लड-रेटिना बैरियर को पार करने में सक्षम है।

### स्पिरुलिना एस्टाजेथिन के स्वास्थ्य लाभ

यह मानव शरीर, चक्षु और मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए एक बेहतरीन सुपरफूड है। रक्त में कोलेस्ट्रॉल कम कर, रक्त के अतिरिक्त गाढ़ेपन को कम कर, धमनियों के कड़ेपन कम कर रक्त संचालन तन्त्र को सुचारु रखना। हृदयरोग और पक्षाघात की संभावना कम करना। शरीर से विशैले तत्वों के निष्कासन में सहायक। बदलते मौसम से होने वाले रोगों से रक्षा। जोड़ों की समस्या को रोकना और चलने-फिरने में सहायक। क्षतिग्रस्त कोशिकाओं का नवीनीकरण और नई कोशिकाओं का निर्माण।

### प्रत्येक कैपसूल में है :

•Spirulina	496mg
•Astaxanthin	4mg
•Protein	Trace
•Fat	Trace
•Carbohydrate	Trace

डोज-

2 कैपसूल 1 ग्लास पानी के साथ प्रतिदिन 1 या 2 बार

## मोर हेल्थ ग्रीन टी



जापान और चीन के लोगों में हृदय रोग और कैंसर के रोगियों की प्रतिशत पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत कम होती है। इन दोनों देशों की अधिकतम जनसंख्या ग्रीन टी या ब्लैक टी का नियमित सेवन करती है। ग्रीन टी काफी फायदेमंद होती है, खासकर अगर बिना दूध और चीनी पी जाए। इसमें कैलोरी भी नहीं होती। इसी ग्रीन टी से हर्बल चाय तैयार की जाती है। ग्रीन टी में कुछ जड़ी-बूटियां मिला देने से हर्बल टी तैयार होती है। ग्रीन टी एंटीआक्सीडेंट से भरपूर है। ग्रीन टी में ORAC (Oxygen Radical Absorbency Capacity), EGCG (Epigallocatechin 3-gallate) एवं पॉलीफेनोल होते हैं जो एंटीआक्सीडेंट catechin से भरपूर हैं। एंटीआक्सीडेंट EGCG में पुराने रोगों से भी लड़ने की क्षमता होती है।

मोर हेल्थ हर्बल ग्रीन टी में हैं – ग्रीन टी सार (extract), अश्वगंधा, ब्राह्मी, एलोवेरा, शंखपुष्पी, येस्तिमधू, तुलसी, काली मिर्च, लेमन-ग्रास, अदरक, लौंग, पुदीना और सुक्रोस। अश्वगंधा में निहित एंटीआक्सीडेंट्स के कारण हृदय रोग के साथ अनेक रोगों से बचाव, शक्ति और स्फूर्ति मिलती है। ब्राह्मी, तुलसी, शंखपुष्पी आदि याददाश्त बढ़ाने, दिमाग तेज करने और मानसिक तनाव दूर करने में सहायक हैं। काली मिर्च, लेमन, अदरक मौसमी बीमारियों जैसे, सर्दी, जुकाम, खांसी और बुखार से आराम दिलाता है, शरीर का वजन नियंत्रित रखता है।

### मोर हेल्थ ग्रीन टी से लाभ – हृदय रोगों में लाभकारी

- कोलेस्ट्रॉल होगा कम
- धमनियों में खून जमने से रोकना
- कैंसर की आशंका को कम करना
- पाचन तंत्र में मजबूती
- सर्दी-जुकाम, सिर दर्द, कब्ज, मोटापा, तनाव आदि बीमारियों में इसका सेवन लाभकारी
- जोड़ों का दर्द रहेगा दूर
- तनाव होगा कम

- ताजगी और ऊर्जा से भरपूर
- अल्जायमर और पार्किन्संस के रोगियों में लाभप्रद
- चेहरे की झुर्रियों का कम होना
- फैंट होगा बर्न और मोटापा होगा कम
- याददाश्त बढ़ने लगेगी
- दांतों को कैविटी से बचाव



### उपयोग विधि:

प्रतिदिन 2 या 3 कप खाना खाने से 1 या 2 घंटे पहले या बाद में पीयें। खाने के तुरंत बाद नहीं पीना चाहिए। ग्रीन टी दूध या चीनी मिलाए बिना पीने से अधिक लाभ मिलता है अतः इसमें चीनी और दूध मिलाने से परहेज करें।

पैक : 150 ग्राम

# ओमेगा 3, 6, 9

पैक: 60 सॉफ्टजेल कैप्सूल



भागती जिन्दगी में अपनी सेहत के बारे में भी सोचिये। अगर आप स्वस्थ रहना चाहते हैं, सोचते हैं कि बढ़ती उम्र का प्रभाव जल्द नजर न आये, चुस्त-दुरुस्त रहें तो ओमेगा 3, 6, 9 सप्लीमेंट लेने की आदत डालें। आज-कल के रोजमर्रा के खान-पान में इनका अभाव हमें अस्वस्थ कर सकता है।

ओमेगा फैटी एसिड्स असंतृप्त (unsaturated) फैटी एसिड्स हैं। फैटी एसिड्स शरीर के सभी तंत्रों के सामान्य तरह से कार्य करने के लिए जरूरी है। इनमें से उन दो आवश्यक फैटी एसिड्स ओमेगा 3 और 6 का निर्माण हमारा शरीर नहीं करता है जो मानसिक विकास, नियंत्रित रक्त संचालन, रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। ओमेगा 3 फैटी एसिड (EPA/DHA) स्फिरुलिना और मछली में पाई जाती है और यह मानसिक विकास के लिए आवश्यक है। इसके नियमित प्रयोग से सूजन, जोड़ों के दर्द, कैंसर और हृदय रोग की संभावना कम हो जाती है। ओमेगा 3 फैट्स, कॉन्जुगेटड लिनोलेक एसिड और गामा लिनोलेनिक एसिड जैसे कुछ फैट होते हैं जो शरीर के हार्मोन्स में बदलाव कर भूख को कम करते हैं और डाइटिंग करने में भी मददगार होते हैं। गर्भवती स्त्रियों के लिए ओमेगा 3 फैटी एसिड बहुत आवश्यक है।

ओमेगा 3 फैटी एसिड की कमी से थकान, कमजोर याददाश्त, त्वचा में सूखापन, अवसाद, अनियंत्रित रक्त संचालन और हृदय की समस्या हो सकती है। ओमेगा 6 फैटी एसिड को गामा लिनोलीनिक एसिड (GLA) भी कहते हैं। नई खोजों से पता चलता है कि यह सूजन, दमा, एक्जिमा, त्वचा-संक्रमण, एजिंग, छोटी हड्डियों के जोड़ों के दर्द, डायबिटीज, मोटापा, धमनीकलाकाठिन्य (atherosclerosis) के विरुद्ध कार्य करती है। ओमेगा 9 फैटी एसिड प्राकृतिक रूप से हमारे कई प्रकार के भोज्य पदार्थों में भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। यह कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम करने और इन्फ्लेमेशन दूर करने के लिए महत्वपूर्ण है। ओमेगा 3 और 6 का अनुपात उचित होना आवश्यक है।

## ओमेगा 3, 6,9 के लाभ :

- प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत करना
- लिवर को सुचारू रूप से कार्यरत रखना
- रक्त और मस्तिष्क में जमने वाले थक्कों को रोकना
- कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्त चाप नियंत्रित रख हृदय रोगों से रक्षा
- जोड़ों के रोगों में फायदेमंद त्रायग्लिस
- डायबिटीज और गठिया में लाभदायक
- शरीर में HDL (लाभदायक फैट) के मात्रा बढ़ाना और LDL, ट्रायग्लिसराइड (हानिकारक फैट) कम करना
- बार-बार होने वाले गर्भपात रोकने में सहायक
- मानसिक विकास, शारीरिक ऊर्जा बढ़ोतरी और स्मरण-शक्ति में बढ़ोतरी



डोज :

1 सॉफ्टजेल कैप्सूल दिन में 2 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

स्वास्थ्य क्रांति की ओर...

## परिकल्प सिरप/कैप्सूल



स्त्रियों में मासिक-धर्म एक सामान्य प्रक्रिया है और यह इस बात का परिचायक है कि उसकी प्रजनन क्षमता बरकरार है। यह मासिक चक्र स्त्रियों के हार्मोन्स के साथ जुड़ा है। मासिक स्राव के दौरान स्त्रियों को दर्द, सुस्ती, इत्यादि की शिकायत रहती है और चिड़चिड़ापन रहता है। इस मासिक-स्राव का चक्र सामान्यतया 25 से 35 दिनों का होता है। सामान्यतया यह स्राव 3 से 7 दिनों तक चलता है।

### महिलाओं के सुन्दर शारीरिक विकास के साथ ही उनके मुश्किल दिनों का विश्वसनीय साथी

हार्मोन्स के असंतुलन, संक्रमण, इत्यादि कारणों से कई स्त्रियों में यह चक्र अनियमित हो जाता है। इसके अलावा कुछ स्त्रियों में रक्त-स्राव के दौरान काफी कष्ट होता है। इसके अलावा स्त्रियों में ल्युकोरिया की समस्या भी काफी पाई जाती है। इसे प्रदर के नाम से भी जाना जाता है। प्रदर दो प्रकार का होता है—श्वेत प्रदर एवं रक्त प्रदर। मासिक धर्म की अनियमितता और प्रदर दोनों ही स्त्रियों के लिए काफी कष्टदायी होते हैं। मासिक धर्म की अनियमितता एवं प्रदर का कोई संतोषजनक इलाज ऐलोपथिक पद्धति में नहीं है।

**परीकल्प** – बारह प्राकृतिक औषधियों का एक समुचित और जांचा-परखा फार्मूला है, जो स्त्रियों को इन कष्टपूर्ण दिनों में एक सच्चे साथी की तरह सहारा देता है। परीकल्प के समस्त संयोजक एक-दूसरे के पूरक और सहक्रियाशील हैं जो स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाते हैं, मासिक स्राव को सामान्य बनाते हैं, तनाव और अवसाद को दूर करते हैं और स्त्रियों को शक्ति और ऊर्जा देकर उन्हें अज्ञात कारणों से होने वाले बाँझपन से बचाते हैं। परिकल्प में लौह तत्व बढ़ाने वाली औषधी सम्मिश्रित है जिससे रक्त प्रदर से होने वाले लौह तत्व की कमी को दूर करने में सहायता मिलती है।

### परीकल्प के लाभ

- परीकल्प मासिक-धर्म को नियंत्रित करता है और रक्त-स्राव को सामान्य बनाता है।
- परीकल्प स्त्रियों में गर्भधारण की सम्भावना को बढ़ाता है।
- परीकल्प स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए पोषक तत्व प्रदान करता है।
- परीकल्प स्त्रियों की त्वचा के लावण्य को बनाये रखता है, उसकी कांति को बढ़ाता है।
- हर्बल तत्वों के कारण परिकल्प का प्रयोग लम्बी अवधि के लिए किया जा सकता है।
- परीकल्प का उपयोग अन्य दवाओं के साथ बिना किसी साइड-इफेक्ट के किया जा सकता है।
- परीकल्प योनि की अन्तः दीवारों के लचीलेपन और शक्ति को बढ़ाता है।

### पैक :

परिकल्प सिरप— 200ml  
परिकल्प कैप्सूल—60 कैप्सूल

### परिकल्प सिरप की संरचना—हर 10 ml में

अशोक छाल (सरका इंडिका)	1000 mg
लोधरा (सिम्पलोकोस रेसीमोसा)	500 mg
बाला (सिडा कार्डिफोलिया)	75 mg
काली मूसली (कुर्कुलिगो ऑर्किआइड्स)	75 mg
शिवलिंगी (ब्राइओनिया लैसीनियोसा)	125 mg
असगंध (विथानिया सौमनीफेरा)	125 mg
गुडहल फूल (हिबिस्कुस रोजासाईनेंसिस)	75 mg
नागरमोथा (सिप्रस रोटंडस)	75 mg
सतावर (एसपेरेजस रेसीमोसा)	75 mg
पलाश पुष्प (वूटिया फ्रंडोसा)	125 mg
धावा फूल (बुडफोर्डिया फ्रुक्टीओसा)	125 mg
नागकेसर (मेसुआ फेरा)	75 mg
पुद्ध कसिस (फेरस सल्फेट)	20 mg

उपयोग विधि सिरप - 10 उम्र दिन में 2 बार कैप्सूल -  
1 या 2 कैप्सूल दिन में 2 बारचिकित्सक के परामर्शानुसार



कर - कु - लाइट

पैक : 60 कैप्सूल

## कर्कुमिन (Curcumin)

हल्दी में एंटीवायरल, एंटीऑक्सीडेंट, एंटीफंगल और सूजन विरोधी गुण होता है और कर्कुमिन (Curcumin) हल्दी में पाए जाना वाला एक सक्रिय तत्व है और इसमें दर्द से लड़ने की क्षमता होने के साथ साथ दुसरे चिकित्सा गुण भी होते हैं और कैंसर से लड़ने की अदभुत क्षमता होती है।

कर्कुमिन (Curcumin) शक्तिशाली दर्द निवारक दवा के रूप में भी काम करता है और यह सूजन करने वाले प्रोटीन के निर्माण में स्कावट बनता है और दिमाग को दर्द का संदेश भेजने वाले न्यूरोट्रांसमीटर पदार्थ च को भी रोक देता है और अध्ययन से पता चला है कि संधिशोथ (rheumatoid arthritis) के पुराने दर्द में भी आराम दिलाता है।



## कर - कु - लाइट के लाभ -

- एल्जाइमर रोग में याद्दाश्त कम हो जाती है व यह रोग ब्रेन के अन्दर हुए अनियंत्रित इन्फ्लेमेशन के कारण होता है। करक्यूमिन सार अपने एंटी-इन्फ्लेमेट्री गुण के कारण ब्रेन में एकत्रित प्लाक फैट को दूर कर देता है जिसके ऑक्सीजन के बहाव में सुधार आ जाता है।
- मानसिक अवसाद दूर करने में सहायक है अपने एंटी-ऑक्सीडेंट दूँ के कारण स्नायु कोशिकाओं के विकास में योगदान देता है।
- शरीर के अतिरिक्त वजन को दूर करने में सहायक है पित्त के स्राव को बढ़ाता है जो फैट को तोड़ने में सहायक है।
- मुँह के छालों को दूर करने में उपयोगी टर्मेरिक के एंटी सेप्टि, जखम भरने और कूलिंग एक्शन के कारण मुँह के अन्दर की समस्याएँ दूर करने में सहायक है।

उपयोग विधि:  
एक कैप्सूल प्रतिदिन

# अमृत जूस रहें आप खुश

( नीली और एलोवेरा सहित 14 घटकों से निर्मित )

## - बेल (Aegle Marmelos)

कब्ज, दस्त, पेचिश, एसिडिटी, रक्त विकार, स्कर्वी, बवासीर, बढ़े कोलेस्ट्रॉल, अपच, सूजन दूर करने में लाभकारी।

## - हल्दी (Curcuma Longa)

अपच, गले का संक्रमण, सर्दी, लिवरजन्य रोग, ब्लड में शुगर की अधिकता, बढ़े कोलेस्ट्रॉल, जोड़ों के दर्द, अल्सर में अत्यंत फायदेमंद।

## - आंवला (Emblica Officinalis)

विटामिन सी से भरपूर, खांसी, जुखाम, डायबीटीज, कब्ज और अत्यधिक एसिडिटी में बहुत उपयोगी है।

## - जेठी-मध (Glycyrrhiza glabra)

एसिडिटी, अपच, अल्सर, अधिक कोलेस्ट्रॉल, मासिक धर्म के पहले की गड़बड़ी, दमा, एकिजमा, सोरिएसिस, त्वचा संक्रमण के रोकथाम और निदान में लाभप्रद।

## - स्टीविया (Stevia)

डायबिटीज और मोटापे जैसी बीमारी से राहत, दांतों, वजन कम करने, गैस, पेट की जलन, दिल की बीमारी, चमड़ी रोग और चेहरे की झुर्रियों की बीमारी में भी कारगर है।

## - रिपरुलिना (Spirulina)

आदर्श अनुपूरक आहार, प्रोटीन, आयरन, विटामिन, मिनरल और प्रोविटामिन का प्राकृतिक स्रोत। एंटी ऑक्सीडेन्ट्स के साथ प्राकृतिक एंटी-ऐजिंग का गुण, आंखों की रोशनी की रक्षा, तन्त्रिकाओं को नियंत्रित, तनाव मुक्त करना, कोलेस्ट्रॉल को कम करना, हृदय को स्वस्थ रखना, शरीर को सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखना।

## - करी पत्ता (Murraya Koenigii)

एंटीडायबिटिक, एंटीबैक्टेरियल, एंटीऑक्सीडेंट एंटीफंगल गुणों से युक्त, दस्त, वमन, दर्द, सूजन में लाभ, तनाव कम करना, याददाश्त बढ़ाना, लिपिड के स्तर कम करना, मोटापा कम करना, पैन्क्रैआटिक ग्रंथि के बीटा सेल्स को सुरक्षित रखना और इसके कार्य में सुधार लाना।

## - पोदीना (Mentha Arvensis)

आमाशय मजबूत करना, मासिक धर्म की रुकावटों को दूर करने वाला, गर्भाशय को उत्प्रेरित करने के अतिरिक्त इसके उपयोग से अजीर्ण, आंत में कृमि, पेटदर्द, त्वचा पर पित्त, उल्टी, अतिसार से राहत मिलती है।





#### - दूब-घास (Cynodon Dactylon)

इसमें प्रोटीन, एल्केलॉइड्स, ग्लायकोसाइड्स, प्रोटीन और एन्जाइम होते हैं। इसका उपयोग कई आम शिकायतों में किया जाता है जैसे- कमजोरी, जख्म, चोट, बवासीर, चक्षु रोग, त्वचा-रोग, मिर्गी, अपच, कब्ज, उल्टी करने की इच्छा, ल्यूकोरिया, माहवारी में गड़बड़ी, योनि स्राव आदि।

#### - सप्तरंगी (Casearia Esculenta)

डायबिटीज में अत्यधिक प्रभावशाली। इसके अलावा लिवर और किडनी की बीमारी, डाएरिया, भूख की कमी, बवासीर, अत्यधिक पसीना, और स्त्रियों की मासिक-धर्म की समस्याओं को दूर करने में समर्थ है। रक्त के विकार दूर करता है और पाचन सुव्यवस्थित रखता है।

#### - दालचीनी (Cinnamon)

गठिया में अत्यंत लाभदायक। कठिन माहवारी, उच्च रक्तचाप, खुजली, जोड़ों का दर्द, मुहांसे, याददाश्त की कमी, एजिंग, तथा स्त्रियों में होने वाले 'पॉलीसिस्टिक ओवरी सिन्ड्रोम' में अच्छा असर। 'पॉलीसिस्टिक ओवरी सिन्ड्रोम' के लक्षण होते हैं- तैलीय त्वचा, मुहांसे, बालों का झड़ना, अवसाद, चित्त में बराबर परिवर्तन, माहवारी का अनियमित होना या बंद हो जाना, सीने, चूचुक, चेहरे या अवांछित जगहों पर बालों का उगना, पेट की चर्बी बढ़ जाना, वजन का कम नहीं होना आदि।

#### - नौनी (Morinda Citrifolia)

अनुपूरक के रूप में फेफड़ों के कैंसर में बहुत लाभदायक, तनाव दूर कर रिलैक्स देने वाला, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, ब्लड-शुगर को नियंत्रित रखने, लिवर की सुरक्षा करने का कार्य और आरोग्यदायक। मुहांसे और याददाश्त में कमी की शिकायतों को दूर करने वाला।

#### - घृत कुमारी (Aloe Barbadensis)

एजिंग, मुहांसा, सर्दी, जलने, पेट संबंधी समस्याएँ, अम्ल का अभाव, भित्ति-पेशी में ग्रंथि ऊतकों का अतिक्रमण, योनि में अत्यधिक खुजली के उपचार में लाभदायक।

पैक- 500+100ml

उपयोग विधि

30-50 एम.एल. गुनगुने जल के साथ प्रतिदिन 2 बार

## बायो- डेटॉक्स फुट पैच

टॉक्सिंस को करे कैच



सजीव कोशिकाओं और सजीव प्राणियों के शरीर में टॉक्सिंस या जहरीले पदार्थ बनते रहते हैं जो हमारे शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते रहते हैं। प्रदूषण, कीटनाशक, धुआं टॉक्सिंस के बाहरी स्रोत हैं जबकि हानिकारक बैक्टीरिया और ईस्ट, मानसिक दबाव और तनाव, नकारात्मक विचार, मुक्त कण (free radicals) टॉक्सिंस के भीतरी स्रोत हैं। इनके अतिरिक्त तैयार खाद्य पदार्थ (processed food), धूम्रपान, शराब, टेप वाटर, फास्ट फूड, घर की सफाई करने वाले सामान, सौन्दर्य प्रसाधन आदि के नियमित इस्तेमाल से भी हमारा शरीर 100 से भी अधिक टॉक्सिंस ग्रहण करता रहता है। इनके कारण थकान, अनिद्रा, आँख, पेट, त्वचा की समस्याएं और अन्य गंभीर रोग हो सकते हैं।

### डेटॉक्स फुट पैच क्या है ?

डेटॉक्स फुट पैच एक टी बैग की तरह दिखता है जिसमें हैं 6 प्रकार के प्राकृतिक अवयव जैसे डेक्स्ट्रीन, यूकेलिप्टस, ऊडविनेगर, मेंथोल, टर्मालिन, सिलिका डायमिथिकोन सिलिएट। ये संयोजक शरीर को विषाक्त तत्वों से मुक्त करने में एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं। जब इन्हें तलवों में चिपकाया जाता है तो इनके दबाव के कारण उसमें गर्मी आती है और उस क्षेत्र में रक्त संचालन बढ़ जाता है। शरीर से निस्तारित हुए किसी भी टॉक्सिन को फुट पैच अवशोषित कर लेता है-**\*Principles of Eastern medicine\*** के अनुसार टॉक्सिंस हृदय से शरीर के सबसे निचले भाग जैसे पैर और तलवों की ओर स्थान्तरित होकर वहां जमा हो जाते हैं। परम्परागत चायनीज मेडिसिंस में पैर-तलवों को "दूसरा हृदय" और आंतरिक स्वास्थ्य का दर्पण माना जाता है।

दिन में जब हम खड़े होकर चलना शुरू करते हैं तो ग्रेविटी टॉक्सिंस को तलवों की ओर नीचे खींच लेती है। डेटॉक्स फुट पैच इसी सिद्धांत पर काम करती है। बायो-डीटॉक्स फुट-पैच में स्थित डेक्स्ट्रीन प्रीबायोटिक की तरह "लाभदायक बैक्टीरिया" को भोजन देने का कार्य करता है। मानव शरीर के मल में बहुत मात्रा में टॉक्सिंस या हानिकारक तत्व मौजूद रहते हैं जिनको नियमित रूप से शरीर के बाहर निकालना कठिन होता है। डेक्स्ट्रीन शरीर के विभिन्न टॉक्सिंस से संलग्न होकर उन्हें मलोत्सर्ग के द्वारा बाहर निकालने में सहायक है। इस प्रकार डेक्स्ट्रीन विषैले बैक्टीरिया को पाचन तन्त्र से निष्कासित करने के साथ-साथ लाभदायक बैक्टीरिया की वृद्धि में भी सहायता करता है। युक्लिप्टस में एंटीऑक्सीडेंट, एंटीजर्म, एंटीवायरल, एंटीइन्फ्लेमेट्री और एक्स्पेक्टोरेंट के भी गुण हैं। टॉक्सिंस और हानिप्रद जीवाणुओं को शरीर से साफ कर बाहर निकालने में युक्लिप्टस भी सहायक है।

टूरमेलाइन ब्राजील में पाया जाने वाला खनिज है जो इन्फ्लारेड किरणों को निकालता है और नेगेटिव आयन्स की उत्पत्ति होती है। चायनीज मेडिकल के अनुसार हमारे तलवे (sole) में 60 संवेदनशील मेरेडियन एक्यूप्रेसर बिन्दु होते हैं। ये शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंगों के परावर्तक जोन हैं। नेगेटिव आयन्स एक्यूप्रेसर मेरिडियन बिन्दुओं को विभिन्न अंगों को टॉक्सिंस बाहर निकालने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। इससे परिसंचरण बढ़ता है और शरीर से विषाक्त चीजों के बाहर निकालने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। इस प्रकार टूरमेलाइन शरीर की अंदरूनी सफाई के साथ-साथ ऊर्जा भी प्रवाहित करने का कार्य करता है। उड विनेगर शरीर के सूजे भागों से टॉक्सिंस खींच लेता है।



## उपयोग विधि

रात्रि में सोने से पहले पैरों को धोकर सुखा लें। बॉयो डिटॉक्स एधेसिव की सहायता से दोनों तलवों पर बॉयो-डिटॉक्स फुट पैच की सफेद रंग की औषधियुक्त सतह चिपका दें। सुबह में इन पैचों को निकाल कर फेंक दें। आप पायेंगे कि रात में पैच जो सफेद रंग का था, टॉक्सिंस को अवशोषित कर गन्दला हो चुका है।

## बॉयो-डिटॉक्स फुट पैच से लाभ :

- रात्रि में सुखद नींद
- स्वस्थ्य परिसंचरण
- सुबह में अत्यधिक तरोताजा
- स्वस्थ्य रहने का एहसास
- पैरों की सूजन और दर्द से आराम
- ऊर्जा में वृद्धि
- इम्युनिटी में वृद्धि
- तनाव में कमी
- शरीर से बाहर निकले टॉक्सिंस को देखा जा सकता है
- सम्पूर्ण प्राकृतिक



पैक: 6 फुट-पैच

## सॉफ्टऑन



एक नए प्रकार की सैनेटरी नैपकिन, जो न केवल महिलाओं की स्वच्छता की मांग को पूरा करती है बल्कि इसके अतिरिक्त **Anions** ( नेगेटिव चार्ज आयन ) के लाभ भी प्रदान करता है । इसे महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए जाना जाता है ।

### सॉफ्टऑन की खासियत :

- लीकेज को रोकने के लिए दोतरफा सुरक्षा
- सूखे और मुलायम एहसास के लिए 100% प्राकृतिक कपास की परत
- Anion strip दुर्गन्ध दूर करती है और मासिक धर्म की दुश्वारियों को कम करती है ।
- कीटाणु मुक्त हवादार पेपर जो अवशोषित होने के लिए मासिक द्रव्य को केंद्र में लाये
- बायोडिग्रेडेबल पॉलिमर जेल जो प्रभावी ढंग से गीलेपन को अवशोषित करके पैड को सूखा रखे
- विसंक्रमित हवादार पेपर अतिरिक्त सुरक्षा के लिए
- निचली परत हवा का परिसंचरण बनाए रखे जो नमी ओर गर्मी से मुक्ति दिलाये
- पूर्णतया विषहीन गोंद जो इसे स्थिर रखे

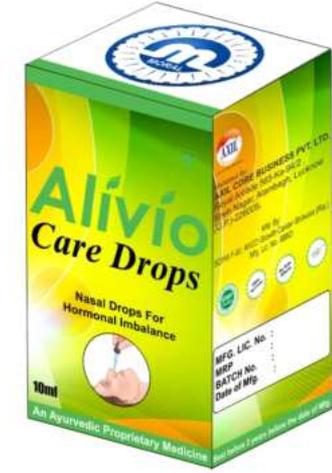


पैक : 10 पैड्स



## एलीविओ ड्रॉप्स

पूर्णतया आयुर्वेदिक विज्ञान पर आधारित हर्बल सप्लीमेंट जो मास्टर ग्लैंड के रूप में कार्य के साथ-साथ पिट्यूटरी ग्रंथि से संबंधित समस्याओं से लड़ने में मदद करता है यह हार्मोनल विकारों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं जैसे- जोड़ों का दर्द, अनियमित रूप से वजन बढ़ना/घटना, याददाश्त में कमी, बवासीर, दृष्टि दोष, लीवर सम्बन्धी समस्याओं को नियंत्रित करता है यह पिट्यूटरी ग्रंथि में समस्या के कारण होने वाले हार्मोनल असंतुलन को नियंत्रित करता है यह महिलाओं से संबंधित समस्याओं जैसे रजोनिवृत्ति, गर्भावस्था, और जीवाणु संक्रमण, मासिक धर्म में अनियमितता आदि के लिए भी असरदार प्रोडक्ट है



### एलीविओ ड्रॉप्स के लाभ :

- इतिहास में पहला ऐसा प्रोडक्ट जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इतने सारे बेनेफिट्स के साथ आता है
- पिट्यूटरी ग्रंथि की समस्याओं के लिए निजाद दिलाये
- महिलाओं से संबंधित समस्याओं के निवारण लिए विशेष उत्पाद, पिट्यूटरी ट्यूमर के प्रभाव को कम करने के लिए विशेष उपयोगी
- शरीर में होने वाले हार्मोनल विकारों को नियंत्रित करे
- जोड़ों में दर्द, लीवर सम्बन्धी समस्याओं, मधुमेह आदि से लड़ने में मदद करे

उपयोग का तरीका –  
नाक के दोनों छेदों में 1-1 बूंद सुबह एवं शाम को

# प्योरीमोर



प्योरीमोर रक्त को शुद्ध रखने की औषधि है। इसमें हैं— मुंडी बटी, पित्तपत्रा, चोबचीनी, नीम, अन्तमुल, शरापुन्खा अर्त्मुसिया, शरापुन्खा, हरिटाकी, प्रियांगु, चिरायता और दारुहरिद्रा।

## - मुंडी बटी

इस पौधे के सभी भाग औषधीय गुणों से भरपूर हैं। पौधे के सभी भागों का उपयोग कई रोगों जैसे रक्त विकार, भूख की कमी, जोंडिस, फायलेरिया, बुखार आदि के उपचार में किया जाता है।

## - पित्तपत्रा

रक्त बनाने और रक्त की अशुद्धता दूर करने के लिए यह अत्यंत उपयोगी है। बालों में चमक और बनावट में सुधार लाकर एन्टी-एजिंग लुक देता है।

## - चोबचीनी

रक्त शुद्धिकरण के अतिरिक्त जोड़ों की सूजन और दर्द दूर करने में लाभकारी है।

## - नीम

रक्त विकार दूर करने के लिए यह एक प्रसिद्ध हर्ब है। यह एंटीसेप्टिक, एंटी-फंगल, और एंटी-वायरल गुणों से युक्त है तथा त्वचा-रोग, अल्सर और मसूड़ों की बीमारियों से भी निजात दिलाता है।

## - अन्तमुल

इसके पुष्प के औषधीय गुणों के कारण इसका उपयोग रक्त को शुद्ध रखने के अतिरिक्त दमा और ब्रोंकायटिस के इलाज में भी किया जाता है।

## - अर्त्मुसिया

लिवर में बाइल या पित्त के स्राव में सुधार लाकर लिवर में बने अवांछित पदार्थों को बाहर निकाल देता है। अक्सर इसका उपयोग जोंडिस और हेपेटाईटिस की बीमारियों में किया जाता है।

## - शरापुन्खा

इसका उपयोग रक्त, हृदय, लिवर, प्लीहा के रोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है।

## - हरिटाकी

इसका उपयोग लीवर को सुरक्षित रखने, कफ, गले की खराश और श्वसन सम्बन्धी रोगों में लाभ के लिए किया जाता रहा है।

## - प्रियांगु

रक्त विकार, शरीर में जलन, बुखार, त्वचा रोगों में अधिक लाभप्रद है।

## - चिरायता

एसिडिटी, कब्ज, वर्म, अनिद्रा, मलेरिया, दमा आदि में लाभदायक है।

## - दारुहरिद्रा

आयुर्वेद में इसका महत्व त्वचा-रोगों, खुजली, डायबीटीज और मूत्र-नलिका में संक्रमण को दूर करने के कारण है।



इंगित लेप्रोसी, ल्यूकोडर्मा, त्वचा-रोग

डोज:

10 एम.एल. (दो चाय की चम्मच) 100 एम.एल. पानी में

पैक: 200 एम.एल



## मेरिटो सिरप

किसी व्यक्ति की कार्यक्षमता और उसके सोचने की शक्ति उसके दिमाग पर ही निर्भर करती है। एकाग्रता की कमी के कारण अक्सर बच्चों का भी ध्यान पढ़ाई से दूर भागता है। हमारा मस्तिष्क हमारी इच्छाओं, संवेगों, मन, बुद्धि, भावनाओं, चेतना, ज्ञान, अनुभव, व्यक्तित्व इत्यादि का केन्द्र भी है। कई बार शारीरिक और मानसिक दुर्बलता या किसी लम्बी बीमारी के कारण मस्तिष्क पर असर पड़ने लगता है और हमारी स्मरण शक्ति कम हो जाती है।

**मेरिट के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मस्तिष्क का भी तेज होना अति आवश्यक है।**

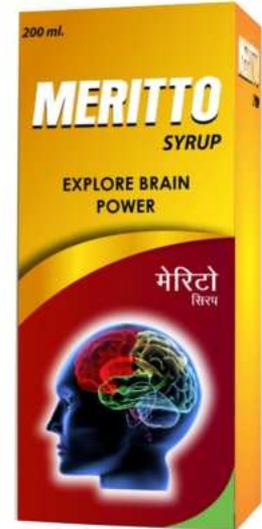
क्या याददाश्त कमजोर है? क्या आपके बच्चे पढ़ते तो हैं पर ध्यान केन्द्रित नहीं का पाते या भूल जाते हैं, क्या छोटी-छोटी बातें भी भूल जाते हैं? क्या मानसिक सतर्कता में कमी है? क्या किसी विषय में ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं? क्या बौद्धिक क्षमता में कमी महसूस करते हैं? क्या मानसिक तनाव रहता है और ठीक से नींद नहीं आती है? क्या अपनी योग्यता और वांछित विशेषता को किसी के समक्ष रखने में परेशानी होती है?

मानसिक शक्ति बढ़ने के लिए साइंस टेक्नोलॉजी की इस आधुनिक दुनिया की एक अद्भुत प्रोडक्ट है मेरिटो सिरप।

**मेरिटो सिरप निम्नलिखित 15 अत्यंत उपयोगी और प्रभावशाली घटकों से समृद्ध है।**

**मेरिटो सिरप के प्रत्येक 5 एम.एल. में है:**

Brahmi (Bacopa Monnieri)	500mg	Kraunch Beej (Mucuna Prurina)	150mg
Shankpushpi (Convolvulus Pluricaulis)	300mg	Safed Musli (Asparagus Adscendens)	50mg
Ashwagandha (Withania Somniera)	300mg	Guduchi (Tinospora Cordifolia)	25mg
Shatawari (Asparagus Racemosa)	100mg	Daruhaldi (Berberis Aristat)	25mg
Amla (Embllica Officinalis)	300mg	Bhringraj (Eclipta Alba)	25mg
Harad (Terminalia Chebula)	100mg	Musta (Cyperus Rotundus)	25mg
Baheda (Terminalia Belerica)	100mg	Kasamarda (Cassi Occidentalla)	25mg
Arjun Chhal (Terminalia Arjuna)	100mg	Sugar	q-s-

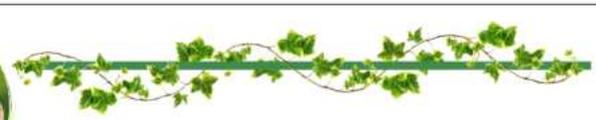


### - शंखपुष्पी

शंखपुष्पी मानसिक दुर्बलता को दूर करती है। याददाश्त बढ़ाने, मस्तिष्क की क्रियाशीलता बढ़ाने, नींद नहीं आने की शिकायत दूर करने, मानसिक शक्ति बढ़ाने, नाड़ियों (Nerves) को मजबूत रखने और बुद्धि विकसित करने के लिए शंखपुष्पी एक उत्तम टॉनिक है। यह मानसिक तनाव भी दूर करने में सहायक है।

### - ब्राह्मी

अनिद्रा, याददाश्त की कमी, लगातार कार्य करने से हुई मानसिक थकावट, एकाग्रता की कमी, कार्यक्षमता में कमी जैसी स्थितियों में ब्राह्मी के उपयोग से आश्चर्यजनक लाभ होता है। इसके सेवन करने से बच्चों में एकाग्रता और स्मरण शक्ति बढ़ती है जिससे वे पढ़ाई में दिलचस्पी लेने लगते हैं। इसके औषधीय गुणों द्वारा तनाव, अवसाद जैसे मानसिक रोग रोग हो जाते हैं तथा स्मरण शक्ति का विकास भी होता है। यह औषधि मस्तिष्क के तंतुओं में नवीन ऊर्जा उत्पन्न करती है।



### - अश्वगंधा

यह मेधावर्धक है और इसके उपयोग से अवसाद (Depression) और मानसिक तनाव (Tension) के लक्षण दूर होते हैं । यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट और एंटीमाइक्रोबियल है । स्मरण शक्ति बढ़ती है, चित्त शांत रहता है । भावनात्मक असंतुलन दूर करने और स्वाभाविक नींद लाने के लिए अश्वगंधा एक अच्छी दवा है । अश्वगंधा के प्रभाव से मन में नकारात्मक विचार आने बंद हो जाते हैं । यह तनाव, और शारीरिक कमजोरी को दूर करने वाली औषधि है ।

### - शतावरी

यह मस्तिष्क के स्नायु तंत्र (Nervous System) की नाड़ियों (Nerves) को भी आराम और पोषण प्रदान करती है । यह स्त्रियों, पुरुषों, किशोरों, बूढ़ों सभी के लिए अत्यंत गुणकारी है । इसके नियमित उपयोग से बालक की बुद्धि, स्मरण-शक्ति और आत्मविश्वास बढ़ता है । शतावरी मस्तिष्क के लिए बलकारक भी है ।

### - आंवला

आंवला विटामिन सी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है । मस्तिष्क सम्बन्धी दुर्बलता दूर करता है और स्मरण शक्ति बढ़ाने में अत्यंत लाभकारी है । दिमाग को शीतलता प्रदान करता है और मन को शान्त रखता है ।

### - हरद

इसके उपयोग से मस्तिष्क की दुर्बलता दूर हो स्मरणशक्ति बढ़ती है । अच्छी नींद और तनावमुक्ति के लिए भी हरद एक उत्तम हर्ब है ।

### - बहेड़ा

मस्तिष्क को ताकत प्रदान करता है, सिर दर्द को दूर करता है, आंखों व दिमाग को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाता है

### - अर्जुन की छाल

स्मरण शक्ति बढ़ाने और मस्तिष्क की कार्यशैली बढ़ाने में यह बहुत ही कारगर है । मानसिक तनाव को कम कर प्रफुल्लित रखता है ।

### - क्रौंच बीज

क्रौंच बीज के सार के सेवन से दिमाग तेज होता है और यह मन व मस्तिष्क को शांत करने वाली भी होती है ।

### - सफ़ेद मूसली

इसके प्रयोग से शारीरिक क्षमता बढ़ती है, मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ती है । मानसिक थकान, मांसपेशियों में कमजोरी, कमजोर याददाश्त, तनाव दूर करने में भी लाभदायक है

### - गुड़ची

यह नवीन उर्जादायक एवं रोग प्रतिकारक क्षमता को बढ़ने वाला औषध स्मरण शक्ति, धृति शक्ति का विकास करता है । यह मंदबुद्धिता का निवारण करता है ।

### - दारुहल्दी

इसके गुणों के कारण इसे कस्तूरीपुष्प भी कहा जाता है : इसका उपयोग लिवर, बुखार, आंत के संक्रमण, सूजन, जख्म, आँख और त्वचा के रोगों को दूर करने में भी किया जाता है ।



### - भृंगराज

बालों को स्वास्थ्य प्रदान करने के साथ-साथ स्मरणशक्ति बढ़ाने वाला तथा मस्तिष्क की कमजोरी भी दूर करता है ।

### - मुश्ता

अत्याधिक प्यास लगना, सीने में जलन, अधिक गर्मी लगना, चिड़चिड़ापन, बात-बात पर क्रोधित हो जाना, कब्जियत, बुखार आना, अत्यधिक पसीना आना आदि पित्तज ग्रहणी के लक्षण हैं, मुश्ता के सेवन से इस रोग से निवृत्ति प्राप्त होती है ।

### - करमादा

कब्ज और पाचन सम्बन्धी समस्याओं को दूर करता है और लैक्सेटिव का कार्य करता है।

### मेरिटो सिरप के नियमित उपयोग से लाभ

मानसिक दुर्बलता को दूर करता है ।

एकाग्रचित होने की क्षमता में वृद्धि लाता है ।

स्मरण शक्ति तेज करता है ।

बुद्धिवर्धक

दिमाग को शीतलता प्रदान करता है और मन को शान्त रखता है ।

नाड़ियों (Nerves) को मजबूत रखने और बुद्धि विकसित करने में लाभकारी नवीन उर्जा उत्पन्न कर मानसिक शांति और मनोबल वृद्धि दोनों को बढ़ाता है ।

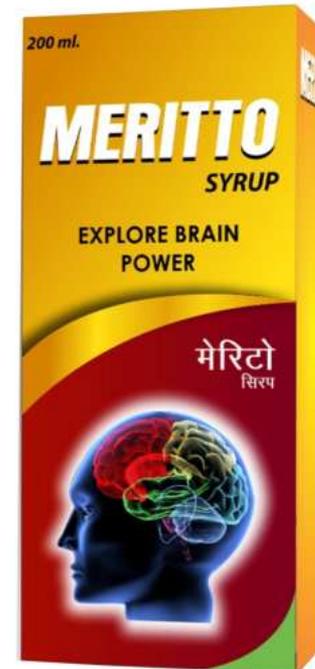
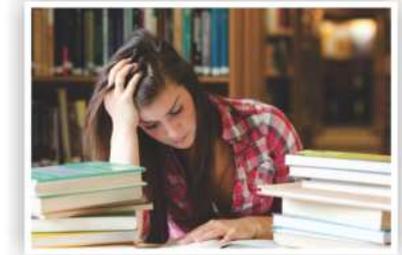
मस्तिष्क की क्रियाशीलता बढ़ाता है ।

मानसिक शक्ति बढ़ाता है ।

### इंगित:

मानसिक तनाव-दबाव, याददाश्त की कमी, अनिद्रा, एकाग्रता में कमी.

पैक : 200 एम.एल.



डोज :-

5 से 10एम.एल. प्रतिदिन 2 बार भोजन के बाद या चिकित्सक के परामर्शानुसार

# मोरोसिल



भारत में मृत्यु होने के 10 शीर्ष कारणों में से लिवर का रोग भी एक है।

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि देश में हर साल लगभग दो लाख लोग लिवर की बीमारियों से दम तोड़ देते हैं। 100 से भी अधिक प्रकार के लिवर की बीमारियाँ मनुष्य को शैशव-काल, यौवनावस्था या वृद्धावस्था—किसी भी अवस्था में प्रभावित कर सकती हैं। यकृत या लिवर (Liver) शरीर की सबसे बड़ी ग्रन्थि है, जो पित्त (Bile) का निर्माण करती है। पाचन क्षेत्र में अवशोषित आंत्ररस के उपापचय (metabolism) का यह मुख्य स्थान है।

लिवर एक शक्तिशाली de-toxification केंद्र है। कई रसायनों, शराब, प्रदूषण, जहर। दवाइयों और अन्य विषाक्त पदार्थों के विषैले प्रभाव को दूर करता है। लिवर की कोशिकाएँ वसा तथा विटामिन्स का संश्लेषण एवं संचय का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त अन्य कार्य भी सम्पादित करती है जैसे – एन्जाइम का स्राव करना, विटामिन्स का संचय, अमोनिया को यूरिन में परिवर्तित करना, उत्सर्जी पदार्थों का निष्कासन, पुराने लाल रक्त कणों को नष्ट करना, रक्त कणों का निर्माण, रुधिर प्रोटीन का संश्लेषण, जीवाणुओं का भक्षण, लसीका उत्पादन, संचय कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखना। लिवर खराब होने के कई कारण हो सकते हैं जैसे शराब का अधिक सेवन करना, धूम्रपान अधिक करना, खट्टा ज्यादा खाना, अधिक नमक सेवन, विषाक्तता (किसी दवा, केमिकल या वायरस के कारण), किसी लंबी बीमारी के कारण, मोटापा और डायबिटीज, कुपोषण, पेसटीसाईड्स और रसायनयुक्त खाद्य : फल, सब्जी, गर्भ के कारण लीवर का खराब होना, नशीली दवाएँ और यहां तक एचआईवी, अत्यधिक तनाव और चिंता, केमोथेरेपी, संक्रमण जैसे टी. बी., वाइरल हैपेटायटीस A, B और C, शरीर में विटामिन बी की कमी होना, एंटीबायोटिक दवाइयों का अधिक मात्रा में सेवन करना आदि अल्कोहल सम्बन्धित रोगों से जीवन को खतरा पैदा करने वाले रोग हैं: हेपेटाइटिस, फैटी लिवर डिजीज और सिरोसिस। आपके लिवर की सुरक्षा, स्वास्थ्य और उचित क्रिया-कलाप के लिए है मोरोसिल कैप्सूल और सर्पेंसन— सिलिमरिन, लेसिथिन और विटामिन बी का सम्मिलित मिश्रण।

## मोरोसिल सर्पेंसन के प्रत्येक 5 एम.एल.में है

Silymarin 80%	35mg
Soya Lecithin	125mg
Vitamin B1 Hcl	0-75mg
Vitamin B2 phosphate	0-75mg
Niacinamide(Vitamin B3)	7-5mg
D&panthenol	2-5mg
Vitamin B6	0-75mg
Vitamin B12	0-50mcg

## मोरोसिल कैप्सूल

Silymarin 80%	70mg
Soya Lecithin	250mg
Vitamin B-Complex	



## सिलिमैरिन

जर्मन वैज्ञानिकों के समूह ने आविष्कार किया एक सक्रिय flavonoid complex का – जिसका नाम है सिलिमैरिन जिसमें हैं मिल्क-थीस्ल के सारे औषधीय गुण। पिछले 10 वर्षों में सिलिमैरिन के बारे में करीब 12000 लेख प्रकाशित हो चुके हैं। सिलिमैरिन को एंटीऑक्सीडेंट और लिवर की सुरक्षा के लिए अत्यंत प्रभावशाली, सक्रिय और लाभदायक सप्लीमेंट माना जाता है।



## सिलिमेरिन के मुख्य कार्य :

- बहाव अल्कोहल या विषैले तत्वों से क्षतिग्रस्त हुए लिवर की कोशिकाओं को पुनर्जीवित करता है ।
- वाइरल हेपेटायटीस के उपचार में पूरक के रूप में ।
- सिरोसिस के रोगियों के उत्तर-जीविता दर (SURVIVAL RATE) को बढ़ाता है ।
- लिवर को औद्योगिक विषैले तत्वों, दवाइयों के दुष्प्रभाव से सुरक्षित रखता है ।
- लिवर को अन्य बीमारियाँ जिससे लिवर का नुकसान हो सकता है, से बचाने में सहायक है ।
- पित्त के कारण हुए लिवर की क्षति को रोकने में सक्षम है ।
- गोल-स्टोन न बनने देने में सहायक है ।
- लिवर के द्वारा पित्त को उत्प्रेरित करता है ।
- भूख बढ़ाता है और प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाता है ।
- पाचन – प्रक्रिया स्वस्थ रखने में अत्यंत प्रभावकारी है ।
- विटामिन ई से दस गुणा ज्यादा प्रभावकारी ANTIOXIDANT है ।



लेसिथिन रेशेदार तन्तु (fibrous tissue) जिसके कारण सिरोसिस होती है, को लिवर में तोड़ने की प्रक्रिया को तेज करता है, अल्कोहल के कारण लिवर में हुई क्षति को फिर से दुरुस्त करने में सहायक है और लिवर के उचित क्रिया-कलाप के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । विटामिन बी कम्प्लेक्स- लिवर-रोग या अल्कोहल के सेवन से शरीर में विटामिन्स बी की कमी हो जाती है और अल्कोहल के विषैले तत्वों में परिवर्तित होने के कारण भी फ्री रेडिकल्स की संख्या बहुत ज्यादा हो जाती है । मोरोसिल कैप्सूल और सस्पेंसन में विटामिन ए, बी 2, बी 3, बी 5 बी 12, भी मौजूद हैं क्योंकि विटामिन बी. की लिवर के आवश्यक कार्य-कलापों में महत्वपूर्ण सहायक की भूमिका होती है जैसे – लिवर में प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट के चयापचय में पाचक-रस की तरह प्रभाव, लिवर की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को सुधारने की प्रक्रिया को तेज करना, लिवर द्वारा विषाक्त तत्वों के दुष्प्रभाव को खत्म करने की प्रक्रिया को बढ़ावा देना और लिवर में हुई विटामिन बी-कम्प्लेक्स की कमी को पूरा करना ।

इंगित: (पूरक के रूप में)- कमजोर लिवर के कारण हुए अपच, भूख की कमी, वजन का कम होने जैसी स्थितियों में जिनमें लिवर-कोशिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, अल्कोहलिक लिवर रोग, लिवर में fatty change, स्व-प्रतिरक्षित (Autoimmune) हीपेटाइटिस ।

डोज : वयस्क- सिलिमेरिन 70 - 140 एम.जी. 2 - 3 बार प्रतिदिन या चिकित्सक के परामर्शानुसार  
बच्चे: 5 mg / kg body weight / प्रतिदिन 2 - 3 divided doses में  
या चिकित्सक के परामर्शानुसार

सावधानी : गर्भावस्था, स्तनपान कराते वाली महिलाओं में

पैक: मोरोसिल सस्पेंसन 200 एम.एल. / मोरोसिल कैप्सुल 10X10

स्वास्थ्य क्रांति की ओर...

## मोरल बाल अमृत

मोरल बाल अमृत के प्रत्येक 100 एम.एल. में है:

मको	(Solanum Nigrum)	50mg
निलोफर	( Nymphaea Alba)	50mg
सैंडल	(Sanctalum Alba)	50mg
गुलाब फुल की पत्तिया	(Rose petal)	50mg
भाभ्रिंग	(Embella Ribes)	50mg
सौंफ	(Foeniculum Vulgare)	50mg
सोया	(Anthem Sowa)	100mg
रेवेन चीनी	(Rheum Emodi)	50mg
पुदीना	(Mentha Sylvestris)	50mg
बड़ी इलायची	(Amomum Subulatum)	50mg
छोटी इलायची	(Elettaria Cardamomum)	2-5mg
धनिया	(Coriandrum Sativum)	50mg
बाखुम्बा	(Careya Arborea)	50mg
गाजबन	(Onosma Bracterlum)	50mg
अबरेशम	(Silk Pods)	20mg



मको, निलोफर, गुलाबफूल की पत्तियां, सफेद चंदन, कसुम, बायखोला, अजवाइन, जीरा, जुफा, पुदीना, धनिया, सौंफ, रेवनद चीनी :  
दस्त, डीसेन्ट्री, अपच, कमजोरी, दमा, श्वसन नली में संक्रमण, सर्दी, कफ, बुखार, पेट दर्द, अधोवायु में अति लाभदायक

### - रेवनद चीनी

पेट साफ़ करने, बुखार कम करने, आंत में मौजूद कीड़ों को खत्म करने, पेट दर्द से निजात दिलाने और निर्बल पाचन, कब्ज (बुखार, संक्रमण, जख्म के साथ ) जैसी स्थितियों में बहुत फायदेमंद। जुफा, बुखार कम करने में सहायक। भवास नलिकाओं में आए जमाव को दूर करना, और एक्स्पेक्टोरेंट, रक्त और भवास नली के संकुचन को सामान्य बनाना, तथा सूजन दूर करना, लिवर स्वस्थ रखना, मूत्रवर्धक, समुचित पाचन, एंटीबैक्टीरियल, पेट से गैस निकालने के लिए उत्तम।

### - पुदीना, रेवनद चीनी

मुंह के अन्दर के संक्रमण दूर करना, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना और दांतों के दर्द, सूजे मसूड़ों और मुंह के छालों के कारण हुई समस्याओं से निजात दिलाने में अत्यंत प्रभावी।

शिशु के बार-बार रोने के क्रम को कम करना।

### ईंगित :

शिशु के पेट दर्द, दांत निकलने कई समस्या से सम्बंधित दस्त और डीसेन्ट्री, उल्टी, लिवर का बढ़ जाना, पेट में वायु।

पैक: 100 एम.एल

डोज: 1 से 2 चाय के चम्मच से दिन में 2 बार दूध या पानी के साथ या चिकित्सक के परामर्शानुसार।

## खांसी कफ शिरप

Ephedra (सोमलता)	100mg
Viole odorata (बनफशा)	50mg
Ammonium chloride (नौसादर)	10mg
Tanken Bhasma A.F.I.	10mg
Potassium Nitros (कल्मिशोरा)	10mg
Alphagi camelorum (जुफा)	50mg
Vitis vinifera (मुनक्का)	50mg
Solanum Ūanthocarpum (कंटकारी)	100mg

Glycirrhiza glabra (मुलेठी)	50mg
Mentha sylvestris (पुदीना)	2mg
Elettaria cardamomum (बड़ी इलायची)	10mg
Piper cubeba Linn (कवाबाबी चीनी)	10mg
Ocimum sanctum (तुलसी)	25mg
Zingiber officinalis (अदरक रस)	25mg
Sugar	45%

### ईफेड्रा:

- लघु अथवा सूक्ष्म श्वासनलिकाओं सम्बन्धी दर्द से आराम दिलाता है।
- सौम्य या मध्यम श्रेणी की दमा के रोगियों की श्वास नलिका को फैला देता है जिससे वे साँस आसानी से ले सकें और कफ भी बाहर निकल सकें।
- इसके लेने के एक घंटे बाद ही इसका प्रभाव दिखने लगता है।
- गले की घरघराहट को नियंत्रित करता है।

### नौसादर, टंकण भस्म, जुफा और मुनक्का:

- सर्दी, खांसी और ज्वर से राहत दिलाता है।
- श्वास नलिकाओं में रोमक या सिलिया की गति बढ़ा देता है ताकि कफ आसानी से बाहर निकल सके।
- म्यूकस या बलगम को पतला कर बाहर निकालने में सहायता करता है।
- श्वास नली के दर्द से आराम दिलाता है।

### बड़ी इलायची और कंटकारी :

- कफ बाहर निकालने और ज्वर कम करने में सक्षम हैं।
- दमा, क्रोनिक कफ, साँस लेने में परेशानी, श्वास नलियों में एलर्जी और प्रतिश्याई बुखार (catarrhal fever) में लाभदायक
- दमा, कफ और श्वास नली के संकुचन के कारण हुए दर्द से आराम

**पुदीना :** यह एन्टीट्युसिव है और दमा वाली कफ के लिए यह अत्यंत उपयोगी है।

**तुलसी :** दमा और ब्रोंकायटिस के रोगियों में बलगम को गतिशील करती है

**अदरक रस :** प्लेटलेट को सक्रिय रखने वाले कारक का प्रतिरोध कर दमा और एलर्जी की शिकायत को दूर करने में सहायता करता है।

डोज:

1 से 2 चाय के चम्मच गुनगुने पानी के साथ या चिकित्सक के परामर्शानुसार

पैक : 100 एम.एल.

स्वास्थ्य क्रांति की ओर...



## लिव-मी शिरप / कैप्सूल

लिव-मी शिरप के प्रत्येक 10 एम.एल. में है :

Sharpunkha	(Tephrosia Purpurea)	500mg
Makoi	(Solanum nigrum)	500mg
Bhumi Amla	(Phyllanthus niruri)	500mg
Revandchini	(Rheum emodi)	25mg
Kutki	(Picorhiza kurora)	250mg
Kasani	(Cichorium intybus)	350mg
Mai	(Tamarix gallica)	750mg
Vavring	(Embelia ribes)	75mg
Pipal	(Piper longum)	225mg
Arjun Chhal	(Terminalia arjuna)	75mg
Bhring Raj	(Eclipta alba)	75mg
Kalmegh	(Andrographis paniculata)	75mg
Sugar Base		



### - मकोई :

यदि लीवर ठीक नहीं है, अपच की शिकायत है, पेट खराब है या आँतों में संक्रमण है। प्लीहा बढ़ गयी है या फिर पेट में पानी भर गया है ऐसी सभी स्थितियों में मकोई का प्रयोग अत्यंत लाभप्रद है।

### - शर्पुनखा

मुंह के अन्दर के संक्रमण दूर करना, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना और दांतों के दर्द, सूजे मसूड़ों और मुंह के छालों के कारण हुए समस्याओं से निजात दिलाने में अत्यंत प्रभावी।

### - भूमि आंवला

हेपेटायटीस और जॉडिस के इलाज के लिए भूमि आंवला बहुत कारगर है। लिवर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालता है, इसके नियमित प्रयोग से चार या पांच दिनों में ही बिलिरुबिन, SGPT और SGOT का स्तर कम होने लगता है। यह भी लिवर की कोशिकाओं का पुनर्जनन करने में यह समर्थ है।

### - कटुकी

लिवर में होने वाले चयापचय की क्रिया में सुधार लाता है। लिवर में जमा अतिरिक्त फ़ैट को दूर कर देता है, पित्त के बनने और निष्कासित होने की क्रिया को बढ़ाता है। गॉल-ब्लैडर को स्वच्छ करता है और अगर इसका नियमित उपयोग किया जाय तो गॉल-स्टोन को भी खत्म कर सकता है।

### - कालमेघ

इसके बिना लिवर की कोई भी औषधि सम्पूर्ण नहीं मानी जाती है। हेपेटाइटिस, फ़ैटी लिवर, अल्कोहलिक लिवर रोग के उपचार के लिए यह एक उत्तम हर्ब है। लिवर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालता है और इसमें अवस्थित एल्केलोइड्स लिवर की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं का पुनर्जनन करने में समर्थ है।



### भृंगराज

वैसे तो यह बालों के स्वास्थ्य के लिए सर्वोपरि है पर नई खोजों से पता चला है कि भृंगराज के उपयोग से भी लिवर की कोशिकाओं का पुनर्जनन हो सकता है। यह फैटी लिवर, अल्कोहलिक लिवर रोग और अत्यधिक विषैले तत्वों या अन्य कारणों से क्षतिग्रस्त हुए लिवर की समस्याओं को दूर करने में सहायता करता है।

### कासनी

लिवर या किडनी की अधिक खराब अवस्था में भी कासनी दिव्य औषधि के रूप में कार्य कर सकती है। यह रक्त विकार भी दूर करती है, लिवर और किडनी के रोगों में इसका स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव है।

### रेवन्द चीनी :

यह कड़े मल को साफ़ करता है, भूख बढ़ाने में मदद करता है, लिवर को उत्तेजित करता है। अपच और दस्त की शिकायत दूर करता है।

### माई

अल्कोहल या रसायनों के कारण हुई लिवर की क्षति, बिगड़े हुए लिवर, पाचन और अवशोषण में गड़बड़ी, भूख की कमी, जॉडिस, हेपेटाइटिस और ब्लड ग्लूकोज के स्तर में उतार-चढ़ाव जैसे रोगों में माई के प्रयोग से बहुत फायदा मिलता है।

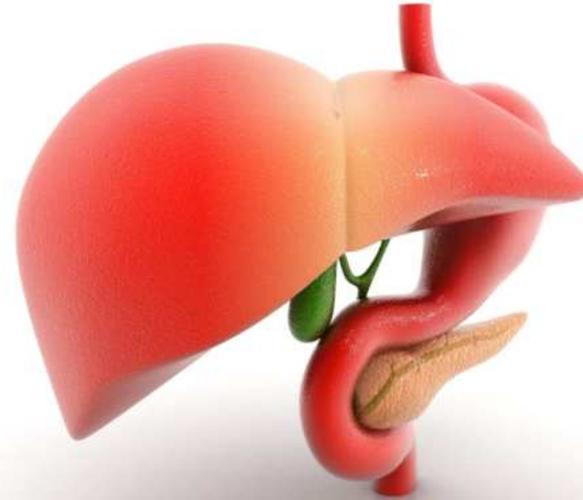
इंगित लिवर में सूजन और जलोदर, भूख की कमी, लिवर और प्लीहा के कार्यों में बाधा के कारण रूकावट, अल्कोहल के कारण क्षतिग्रत लिवर, जॉडिस और लिवर जन्य रोगों में, अपच में,

### डोज:

लिव मी सिरप (वयस्क) - 2 चाय का चम्मच (10 एम.एल.) दिन में दो बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

लिव मी टैबलेट (वयस्क)- एक या दो टैबलेट प्रतिदिन दो बार

बच्चे- एक चाय का चम्मच (5 एम.एल) प्रतिदिन दो बार



लिव मी सिरप : 200एम.एल  
लिव मी 60 टैबलेट

## मोर प्राश

पैक : 500 ग्राम



### इसके मुख्य अवयव हैं -

- शंखपुष्पी
- बड़हडी
- अर्जुन
- गोखरू
- बेल
- भूमि आंवला
- हरीतकी
- गुड़ची
- विदारी कंद
- शतावर
- छोटी इलायची
- बड़ी इलायची
- अश्वगंधा
- वरहीकंद
- द्राक्ष आंवला



### मोर प्राश के लाभ –

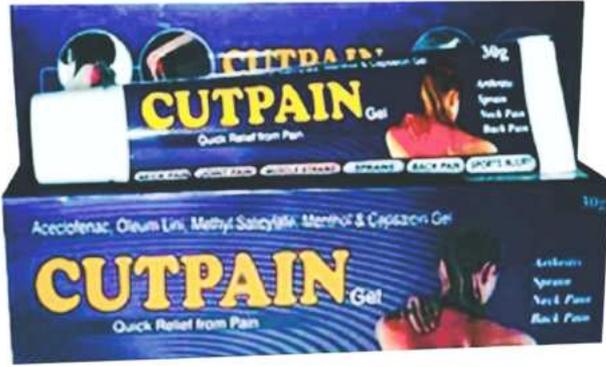
- दिमाग तेज करता है और याददाश्त बढ़ाता है
- उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है
- जोश प्रदान करता है
- पर्यावरण प्रदूषण से रक्षा करता है
- सूर्य की पराबैंगनी किरणों से रक्षा करता है
- हर उम्र के लोगों के लिए उपयोगी
- विटामिन सी का सबसे अच्छा स्रोत
- हर मौसम में उपयोगी

डोज : 1-1 चम्मच खाने के बाद



## कटपेन जेल

पैक : 30 ग्राम



एसेक्लोफेनक एक पावरफुल एंटी-इंफ्लामेटरी है जो सूजन, लाली, दर्द और ताप को कम कर इनसे जल्दी निजात दिलाता है। यह करीने से स्किन में अवशोषित होकर अपना पूरा प्रभाव डालता है। कैप्सासिन स्किन पर होने वाले खुजली और इरिटेशन के विरुद्ध बहुत तीव्रता से कार्य कर दर्द की अनुभूति नहीं होने देता है।

ओलियम लिन में आवश्यक फैटी एसिड्स होते हैं जिनका सौम्य एंटी-इंफ्लामेटरी प्रभाव है। इसका असर त्वचा पर आरामदायक है। मिथाइल सैलीसैलाइलेट भी एक विश्वसनीय एंटी-इंफ्लामेटरी है। मेंथॉल रक्त-नलिकाओं को फैलाता है और रक्त प्रवाह बढ़ाने में सहायक है। इरिटेशन नहीं होने देता है, दर्द दूर करने में सहायक है और इसका ठंडा-ठंडा असर सुखद एहसास कराता है। कटपेन जेल तैलीय त्वचा के लिए भी बहुत अनुकूल है। लोशन और फोम की तरह, बड़े और रोम वाले जगह पर बड़ी आसानी से फैल जाते हैं। जेल में चिपकने की समस्या नहीं होती है। त्वचा में बहुत आसानी से और तेज गति से अवशोषित होते हैं। यह विशेषता है कि जेल त्वचा पर तेजी से रगड़ी जा सकती है यह फैलने में सक्षम है।



### इसके 30g ट्यूब में है:

एसेक्लोफेनक आइ.पी.	1.5%
ओलियम लिन बी.पी.	3%w/w
कैप्सासिन यू.एस.पी.	0.01%w/w
बेंजाइल एल्कोहल आइ.पी.	1%w/w

**उपयोग विधि-** प्रभावित जगह पर दिन में 3 से 4 बार लगायें, घिसें नहीं।

## आर्थोसुधा किट



'आर्थराइटिस' यानि जोड़ों का असहनीय दर्द । आम बोल-चाल की भाषा में इसे गटिया कहा जाता है। ब्लड में यूरिक एसिड की अधिकता से भी यह रोग होता है। शरीर के अलग-अलग जोड़ों में युरेट क्रिस्टल जमा हो जाते हैं जिससे जोड़ों में सूजन और दर्द होने लगता है। आर्थराइटिस में एक या अधिक जोड़ प्रभावित हो सकते हैं । लिखते समय, उठते-बैठते समय, सीढियां चढ़ते समय, टाइप करते समय, सुबह उठते समय, कुछ पकड़ते समय, जोड़ों में उठने वाले सूजन, दर्द और अकड़न के कारण अधिक पीड़ा और परेशानी होती है। इस रोग में जोड़ों में गांठें बन जाती हैं। यह रोग वैसे लोगों को आक्रान्त करता है जिनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, किडनी ठीक से कार्य नहीं करती है । पुरुषों में 60-65 की उम्र के बाद और स्त्रियों में मेनोपॉज के बाद आर्थराइटिस से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है। इसमें हड्डियों को सपोर्ट और सुरक्षित रखने वाले कार्टिलेज और सॉफ्ट टिशू का टूटना प्रारंभ हो जाता है और जोड़ों का लचीलापन कम हो जाता है जिससे वे कड़े हो जाते हैं और सूजन तथा असहनीय दर्द होने लगता है ।

आर्थराइटिस कई प्रकार के होते हैं परन्तु इनमें जो व्यापक हैं वे हैं : ऑस्टियो आर्थराइटिस में अस्थियों के जोड़ बिगड़ जाते हैं और घुटना मोड़ना कष्टप्रद हो जाता है। 'रह्यूमेट्वोइड संधिशोथ' (rheumatoid arthritis) में शुरुआत में यह कलाई के जोड़ों में दर्द आरम्भ होकर उँगलियों, घुटनों, अंगूठों में बढ़ता जाता है।

सोरियासिस संधिशोथ (psoriatic arthritis) में रोगी सोरिएसिस से पीड़ित होता है जिसके कारण सोरियासिस संधिशोथ विकसित हो जाता है।

**आर्थोसुधा किट** गिर गाय के दूध के सिद्ध-घृता में संसाधित किया गया उत्पाद है जिसके कारण इनमें निहित तत्वों की गुणवत्ता अधिक है और लाभ भी शीघ्र मिलने लगता है । सिद्ध-घृता के कारण इनके द्वारा संसाधित प्रोडक्ट में उपलब्ध तत्वों की घुलनशीलता, अवशोषण, वितरण और स्थायित्व अधिकतम हो जाता है और उनकी उपयोगिता का लाभ मिलता है। आर्थोसुधा एक अद्भुत प्राकृतिक उत्पाद है जिसके नियमित उपयोग से आशाजनक परिणाम मिलते हैं।

**आर्थोसुधा किट में 3 जार हैं :**

### आर्थोसुधा जार-१

इस जार में 60 सॉफ्ट जेल कैप्सूल होते हैं और प्रत्येक कैप्सूल में होते हैं :

निर्गुन्डी (Vitex negundo)45.45 mg

महारसनादी (Generic)90.90 mg

चोपचीनी (Rheum emodi)22.75 mg

मेथी (Trigonella Foenum graecum)45.45 mg

दशमूलादी (Generic)90.90 mg

शुद्ध गुग्गुल (Balsamodandron mukul)45.45 mg

संठी (Zinziber officinale)22.75 mg

शलाकी (Boswellia serrata)45.45 mg

अस्थि श्रंखला (Vitis quadrangularis)45.45 mg

Processed in Sidha Ghruta in COW MILK 500 mg

GO-GHRUTA 500 mg

**डोज : 2 सॉफ्ट जेल कैप्सूल प्रतिदिन खाली पेट भोजन के पहले दूध या गुनगुने जल के साथ।**



### आर्थोसुधा जार-2 (शलाकिसुधा जार)

इस जार में 60 सॉफ्ट जेल कैप्सूल होते हैं और 300 mg के प्रत्येक कैप्सूल में हैं :

शलाकी एक्स्ट्रेक्ट (Boswellia serrata) 300mg

(Standardized to contain 65% Boswellic Acid = 195mg)

**शालाक्री** – अपने सूजन विरोधी गुणों के लिए और शरीर की हड्डियों के नजदीक के ऊतकों की मरम्मत करने में सक्षम होने के गुण के लिए उपयोगी हैं।

**डोज :** 1 सॉफ्ट जेल कैप्सूल प्रतिदिन 2 बार भोजन के बाद हलके गर्म जल के साथ।

### आर्थोसुधा जार-3 (गुग्गुलसुधा जार)

इस जार में 60 टैबलेट्स होते हैं और 500 mg के प्रत्येक टैबलेट में है :

शुद्ध गुग्गुल (Commiphora mukul) 500 mg

(Standardized to contain 1: Guggalsterones 5mg)

गुग्गुल – ऊतकों को मजबूत बनाने के लिए उपयोगी है।



आर्थोसुधा किट के नियमित प्रयोग से गठिया, आर्थराइटिस, जोड़ों के दर्द इत्यादि से बहुत आराम मिलता है। आर्थोसुधा के लगातार उपयोग के साथ अगर शारीरिक वजन को नियंत्रित रखें, गतिशील रहें, नियमित व्यायाम करें, सही पोश्चर में उठें-बैठें तो इससे शीघ्र फायदा दिखने लगता है।

**डोज :** 1 टैबलेट प्रतिदिन 2 बार भोजन के बाद गुनगुने जल के साथ

## फेमोकैयर किट

लगभग 35 वर्ष की उम्र तक आते-आते स्त्रियों में इस्ट्रोजेन हार्मोन के उत्पादन में कमी आने लगती है। इसकी कमी से स्त्रियों में कई प्रकार की समस्याएं (चिड़चिड़ापन, अवसाद, थकावट, कामेच्छा में कमी) होने लगती हैं। इस अवस्था में शरीर की सामान्य क्रियाओं को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि स्त्रियों को इस्ट्रोजेन हार्मोन की पूर्ति की जाए। बाजार में सिंथेटिक इस्ट्रोजेन्स उपलब्ध हैं जो फायदा तो पहुंचाते हैं लेकिन साथ ही कई साइड-इफेक्ट्स भी देते हैं। सिंथेटिक इस्ट्रोजेन के लगातार इस्तेमाल से कैंसर होने का भी खतरा बना रहता है। अतः यह आवश्यक है कि इस्ट्रोजेन की कमी को प्राकृतिक स्रोतों से पूरा किया जाए। पौधों से प्राप्त इस्ट्रोजेन को फाईटो इस्ट्रोजेन कहा जाता है।



### फेमोकैयर किट के उपयोग से होने वाले लाभ

- यह स्त्रियों के लिए सम्पूर्ण टॉनिक है
- यह त्वचा के लावण्य और कांति को बनाये रखता है
- यह स्त्रियों में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक है
- स्त्रियों के स्तनों के आकार और सौन्दर्य को बढ़ाता है
- पाचन-क्रिया को मजबूत बनाता है
- यह गैस और एसिडिटी की समस्या को कम करता है
- इसके सेवन से जोड़ों के दर्द से मुक्ति मिलती है
- मासिक धर्म के दौरान रक्त-स्राव को सामान्य रखता है
- गर्भाशय को स्वस्थ रखता है और प्रदर से मुक्त करता है
- गर्भ धारण करने की संभावना को बढ़ाता है
- महिलाओं में अज्ञात कारणों से होने वाले गर्भपात को रोकता है
- किशोर उम्र की और रजोनिवृत्ति की ओर अग्रसर महिलाओं के लिए विशेष लाभदायक है।

### प्रत्येक फेमोकैयर कैप्सूल में पाए जाने वाले अवयव

शतावरी (एसपैरेजस रेसीमोसस)	: 38.45 mg
अशोक (सरका इंडिका)	: 76.90 mg
कुमारी (एलो इंडिका)	: 38.45 mg
लोधरा (सिम्लोकस रेसीमोसस)	: 115.40 mg
यष्टिमधु (ग्लाइसेराहिज ग्लेब्रा)	: 38.45 mg
दशमूल (जेनेरिक)	: 76.90 mg
मुद्गपर्णी (फैसीओलस ट्राईलोबस)	: 38.45 mg
मशपर्णी (टेराम्नस लैबिआलिस)	: 38.45 mg

### प्रत्येक शतावरीकेयर कैप्सूल में पाए जाने वाले अवयव

शतावरी का सार (एसपैरेजस रेसीमोसस)	: 250 mg
शतावरी चूर्ण (एसपैरेजस रेसीमोसस)	: 100 mg

### प्रत्येक मेथीकेयर कैप्सूल में पाए जाने वाले अवयव

मेथी का सार (ट्राईगोनेला फीनम)	: 250 mg
मेथी चूर्ण (ट्राईगोनेला फीनम)	: 250 mg



उपयोग विधि : 1 या 2 कैप्सूल रोज 2 बार पानी के साथ  
या चिकित्सक के परामर्शनुसार



## डायबोसुधा किट

जैसा कि हम जानते हैं भारत को 'डायबेटिक कैपिटल ऑफ दी वर्ल्ड' कहा जाता है। हमारे देश और पुरे विश्व में डायबिटीज-ग्रस्त लोगों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है। डायबिटीज जब अनियंत्रित हो जाती है तब कई जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है जैसे हार्ट अटैक, स्ट्रोक, किडनी का फेल हो जाना, अंधापन, किसी विशेष स्थान पर नर्व का कार्य न करना, परिधीय तंत्रिकाविकृति (peripheral neuropathy), अंग विच्छेदन (amputation), सेक्स-सम्बंधित समस्याएं, खड़े रहने पर चक्कर आना, कब्जियत, मिचली, डायरिया आदि।

डायबोसुधा किट में 3 जार होते हैं :

**डायबोसुधा जार-१** इसके 550 mg के प्रत्येक टेबलेट में है :  
निम्न लिखित श्रेष्ठ हर्बस के सत्व निहित हैं :

आँवला (Embllica officinale)	100 mg
बेलपत्र (Aegle mamelese)	25 mg
बिवाला (Pterocarpus marsupium)	75 mg
गुड़मार (Gymnema sylvestre)	50 mg
गुड़ूची (Tinospora cordifolia)	100 mg
हल्दी (Curcuma longa)	25 mg
जम्बुबीज (Syzygium cumini)	30 mg
करेला (Momordica charantia)	25 mg
ममेजवा (Enicostemma litorale blume)	50 mg
त्रिकातु पाउडर (Generic preparation)	70 mg

भावना द्रव्य :

कुमारी स्वरस (छाल, काढ़ा), ऊदमबर (जड़, काढ़ा)

**डायबोसुधा जार-२** इसके 425 mg के प्रत्येक कैप्सूल में है :

जम्बुबीज सार (Eugenia jambolana)	250 mg
जम्बुबीज पाउडर (Eugenia jambolana)	175 mg
(Standardized to contain 2% Bitter = 8.5 mg)	
(6% सैपोनिंस = 25.5 mg )	

**डायबोसुधा जार-३** इसके 450 mg के प्रत्येक कैप्सूल में है :

करेला सार (Momordica charantia)	250 mg
करेला पाउडर (Momordica charantia)	200 mg
(Standardized to contain 2% Bitter = 9-9 mg)	



## डायाबोसुधा किट



**गुडूची :** डायबिटीज के रोगियों में अस्त-व्यस्त मेटाबॉलिज्म के कारण संक्रमण की संभावना अधिक रहती है। गुडूची एक इम्यूनो मोड्यूलेटर है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा कर इसकी संक्रमण से रक्षा करता है, ग्लूकोज के मेटाबॉलिज्म को नियंत्रित करता है, श्वेत रक्त कण के प्रभाव को बढ़ाता है।

**हल्दी :** हल्दी में कर्कूमिन (Curcumin) नाम का यौगिक होता है जो इंसुलिन के स्तर को संतुलित करने और मधुमेह विरोधी दवाओं (anti-diabetic drugs) की प्रभावकारिता को बढ़ाने में मदद करता है। एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होने के नाते, हल्दी शरीर में इंसुलिन प्रतिरोध को कम करने के साथ-साथ शरीर में फ्री-रेडिकल्स के प्रभाव को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त यह एंटी-एलर्जिक, एंटी-इन्फ्लेमेट्री और एंटी-इन्फेक्टिव भी है।

**करेला :** यह अग्नाशय (pancreas) को उत्तेजित कर इन्सुलिन के स्राव को बढ़ाता है। इसमें निहित 'कैरेटिन' ब्लड शुगर नियंत्रित करने में सहायक है। करेला में इन्सुलिन के समान पॉलीपेप्टाइड होते हैं जिसके दुष्प्रभाव इन्सुलिन की तुलना में बहुत कम होते हैं। यह ब्लड शुगर के स्तर को सामान्य बनाता है और ग्लायकोसायलेटेड हीमोग्लोबिन कम करता है।

कुछ अध्ययन में तो यह भी पाया गया कि करेला-एक्सट्रेक्ट की अल्पशर्करारक्तता प्रभाव (hypoglycemic effect) टोल्ब्युटामाईड से भी अधिक है।

**बेलपत्र / बिल्व :** बेलपत्र प्रोटीन, फैट, मिनरल्स, क्रूड फाइबर, और एनर्जी का एक बहुत ही अच्छा स्रोत है। इसका मुख्य घटक 'लिमोनीन' लाइपोप्रोटीन, लिपिड पेरोक्सिडेशन और एंटीऑक्सीडेंट एन्जाइम्स के क्रियाकलापों को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है। बेलपत्र में निहित अवयव शुगर के स्तर और इन्सुलिन के उत्पादन को नियंत्रित करता है।

**बिल्वाला :** इसमें निहित घटक एक प्रकार का फलेवोनॉइड 'टेरोस्टिलबेन' अग्नाशय की बीटा-कोशिकाओं को फिर से नई शक्ति प्रदान करता है और उनको अधिक इन्सुलिन के स्राव के लिए उत्प्रेरित करता है। यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को भी कम करता है। इसके अतिरिक्त यह फास्टिंग ब्लड शुगर (FBS), पोस्ट ब्रानडियाल ब्लड शुगर (PBS) और ग्लायकोसायलेटेड हीमोग्लोबिन स्तर को कम करता है। यह डायबिटीज से होने वाले जटिलताओं को भी रोकने में सहायक है।





**गुरमाड़ :** यह जड़ी-बूटी गुड़ अथवा मीठेपन को नष्ट करती है। इसका सेवन रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने और शरीर में इन्सुलिन बढ़ाने में सहायक होता है। यह शरीर में मेटाबॉलिज्म या चयापचय की प्रक्रिया, शारीरिक वजन को संतुलित रखने और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को भी नियंत्रण में रखने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

गुरमाड़ पैंक्रीयाज को उत्तेजित (stimulate) करता है, बीटा-सेल्स को नई शक्ति प्रदान करता है जिसके कारण इन्सुलिन का स्राव बढ़ जाता है। गुरमाड़ ग्लूकोज के आंत के द्वारा होने वाले अवशोषण को रोकने तथा ग्लूकोज के उपयोग को भी बढ़ाने में भी कारगर है। टाईप 1 और 2 दोनों डायबिटीज में यह लाभकारी है।

**जम्बुबीज :** इसके बीजों में विद्यमान जम्बोलिन शरीर में पहुंचकर भोजन के साथ ग्रहण किए गए स्टार्च को शुगर में नहीं बदलने देता जिससे रक्त में शुगर सामान्य से अधिक नहीं हो पाती। जामुन में फलेवोनॉइड्स, फेनॉल्स प्रोटीन और कैल्शियम भी पाया जाता है, जो सेहत के लिए फायदेमंद होता है। जामुन में एंटी-ऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत होती है। यह पाचन तंत्र के लिए भी लाभकारी है।

**मामेज्वा :** इन्सुलिन के उपयुक्त स्राव और प्रोइन्सुलिन को इन्सुलिन में परिवर्तित करने की क्रिया में इजलेट के CAMP का महत्वपूर्ण रोल होता है। मामेज्वा CAMP कंटेंट बढ़ाने में सहायता करता है और यह इजलेट कोशिकाओं का पुनरुद्धार (regenerate) करता है।

**त्रिकटु :** पाचन, मोटापा और कोलेस्ट्रॉल को त्रिकटु नियंत्रित करता है, HDL बढ़ाता है और ट्रायग्लिसराईड तथा LDL स्तर को कम करता है।

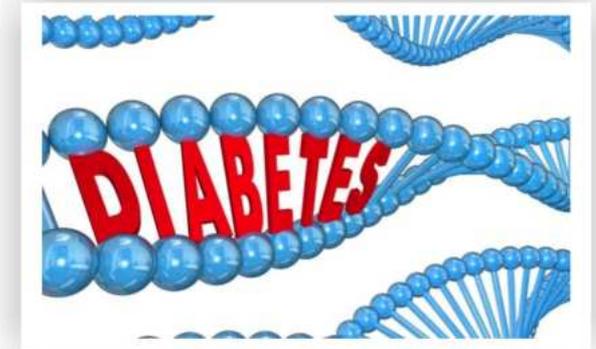
**उपयोग विधि :**

**डायबोसुधा जार-१** 1 टेबलेट प्रतिदिन दो बार भोजन के पहले ६ चिकित्सक के परामर्शनासार बेहतर परिणाम के लिए इसे दूध या गुनगुने जल के साथ लेना चाहिए।

**डायबोसुधा जार-२** 1 कैप्सूल प्रतिदिन दो बार भोजन के पहले / चिकित्सक के परामर्शनासार इसे गुनगुने जल के साथ लेना चाहिए।

**डायबोसुधा जार-३** 1 कैप्सूल प्रतिदिन दो बार भोजन के पहले / चिकित्सक के परामर्शनासार इसे गुनगुने जल के साथ लेना चाहिए।

गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलायें 'डायबोसुधा' का सेवन चिकित्सक के परामर्शनासार करें।



## फिटमैक्स

(एंटीऑक्सीडेंट, लायकोपिन, मल्टीविटामिन मल्टीमिनरल और जिनसेंग)



पैक: 10X10 कैप्सूल्स

फिटमेक्स के कैप्सूल में कोरियाई जिनसेंग का सार 42.5mg, लायकोपिन 10% पाउडर 2000mg के साथ एल-लायसिन, ल्यूटिन, विटामिन सी, इ, बी-2, बी-6, बी-1, बी-12, डी-3, फोलिक एसिड, बायोटीन तो हैं ही और इसके अतिरिक्त आवश्यक खनिज या मिनरल्स भी हैं जैसे मैग्नेशियम, कैल्शियम, फोस्फोरस, आयरन, जिंक, मैंगनीज, सिलिकोन, कोपर, क्रोमियम, मोलीबिडीनम, भेनेडीयम, बोरॉन, सेलेनियम, क्रोमियम, टिन और निकेल।

### जिनसेंग:

- मानसिक एकाग्रता बढ़ाता है।
- अवसाद, चिंता, थकावट और मानसिक दबाव दूर करता है।
- ऊर्जा प्रदान करता है।
- शरीर के प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
- रक्त में शक्कर के स्तर को कम करने में लाभदायक है।
- रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम कर हृदय को स्वस्थ रखता है।
- नींद नहीं आने की शिकायत दूर करता है।
- नपुंसकता और स्तंभनदोष (erectile dysfunction) की शिकायतों को दूर करने में बहुत असरदार है।

**एल-लायसिन** की कमी से भूख की कमी, थकावट, एनीमिया, मिचली, चक्कर आना, बालों का झरना और प्रजनन तंत्र की शिकायतें हो सकती हैं। आंत से कैल्शियम को तेज गति से अवशोषित होने में सहायता करता है। **बायोटीन** शरीर के एंजाइम का एक घटक है। फैट और कार्बोहाइड्रेट को तोड़ देता है। आँखों, नाक और मुँह के इर्द गिर्द होने वाले पपड़ीदार फुंसी तथा बालों के पतले होने की समस्याओं से निजात दिलाता है। बालों और नाखूनों को मजबूत बनाता है। ब्लड सुगर को नियंत्रित रखता है। ल्यूटिन एक कैरोटीनाईड विटामिन है जो बीटा कैरोटीन और विटामिन **A** से सम्बंधित है। यह आँखों के लिए एक उत्तम विटामिन है। यह प्रकाश को फिल्टर करती है और आँखों को सूर्य के प्रकाश के द्वारा क्षतिग्रस्त होने से रक्षा करती है। मोतियाबिंद नहीं बढ़ने देने में सहायक है।

खुराक (व्यस्क) : प्रतिदिन एक कैप्सूल चिकित्सक के परामर्शनासार



## मोरन्यूट्री प्लस पाऊडर

पैक : 200 ग्राम

### मोरन्यूट्री प्लस पाऊडर

मोरन्यूट्री प्लस 200 ग्राम के पैक में उपलब्ध है और इसके संघटक हैं रू माल्टोडेक्सट्रिन, गऊ-कोलोस्ट्रम, कोकोआ सोलिड्स, सोया प्रोटीन, मिल्क सोलिड्स, डी.एच.ए., माल्ट का सार, स्टीविया-पत्तियों के सार, विटामिन ए, सी, डी3, बी1, बी2, बी12, कैल्शियम, आयरन, जिंक और मिनरल्स.बच्चों से लेकर बूढ़ों तक हर उम्र के लोगों के लिए बेहद जरूरी होता है प्रोटीन।

प्रोटीन हमारे शरीर में हर ऊतक, अंग और मांसपेशियों का निर्माण खंड है। यह ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है.प्रोटीन अणु एक जटिल संरचना है जो 20 एमिनो एसिड नामक अणुओं से बनी होती है। इन 20 में से नौ आवश्यक (Essential amino acids) हैं, जिसका अर्थ है कि शरीर उन्हें अपने आप नहीं बना सकता है। अन्य 11 को अन्य प्रोटीन या पोषक तत्वों से बनाया जा सकता है। कैलोरी ऊर्जा यानि एनर्जी को मापने की एक इकाई है. प्रोटीन में प्रति ग्राम 4 कैलोरी है, जिसका मतलब है कि हमें प्रति दिन 50-175ग्राम की आवश्यकता है।



सोया प्रोटीन में सेचुरेट फैट की मात्रा बहुत कम पायी जाती है जिसके कारण हृदय रोग (Heart Diseases) , स्तन कैंसर (Breast Cancer ) और अन्य बिमारियों से हमारा बचाव होता है। इसके उपयोग से हड्डियां मजबूत रहती है, हड्डियों से जुडी समस्या को दूर करती है, इम्युन सिस्टम मजबूत होता है, आँतों में स्थित कोलेस्ट्रॉल की सफाई कर देता है, इसमें मिलने वाला फाइबर ब्लड ग्लूकोज को कम करने में मदद करता है। बाडी-बिल्डिंग और वजन बढ़ाने वालों के लिए भी सोया प्रोटीन एक अच्छा विकल्प है।महिलाओं के मासिक धर्म बन्द होने से शरीर में एस्ट्रोजन की मात्रा कम होने लगती है. जिससे घुटनों में दर्द, पेट का भारी होना, मासिक धर्म में होने वाले सूजन, कमर में दर्द जैसी समस्याओं हो सकती हैं. सोया प्रोटीन ऐसी स्थितियों में निजात दिलाता है। महिलाओं में हड्डियों को कमजोर होने की ओस्टियोपोरोसिस के खतरे से बचा सकता है.

माल्टोडेक्सट्रिन एक पौष्टिक पॉलीसेकेराइड है. इसमें मिठास बहुत ही कम होती है . प्रोडक्ट में इसके एडिटिव होने के कारण प्रोडक्ट की घुलनशीलता और शैल्फ लाईफ बढ़ जाती है, कम से कम नमी अवशोषित होती है. प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में वसा या चीनी के विकल्प के रूप में यह कार्य करता है. इसके उपयोग से फैट या वसा में वृद्धि नहीं होती है.

खुराक (व्यस्क) : 15 ग्राम, दिन में दो बार  
या डॉक्टर की सलाह के अनुसार

## थायरोसिल



**काली मिर्च :** काली मिर्च में पिपेराइन नामक रसायन की मात्रा अधिक होती है जिसमें फैट को जलाने की अद्भुत शक्ति है। इस प्रकार वसा यानि फैट के विघटन के लिए यह अत्यधिक उपयोगी है। अक्सर स्त्रियों में थायरॉक्सिन लेवल कम होने से शारीरिक वजन में वृद्धि होती है, इसलिए काली मिर्च मोटापा घटाने में सहायक है। मैंगनीज का उत्तम स्रोत होने के कारण यह थायरॉइड के क्रिया-कलापों को नियंत्रित करने और हड्डियों को भी मजबूत बनाने में सहायक है।

**शुद्ध गुग्गुलु :** इसमें थायरॉइड के क्रिया-कलाप नियंत्रित करने, आयोडिन के ग्रहण को बढ़ाने और सिरम कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने के गुण समाहित हैं। यह थायरॉइड हारमोन T4 को T3 (अत्यधिक सक्रिय हार्मोन) में बदलने की प्रक्रिया को भी उत्प्रेरित करता है जिससे चयापचय (Metabolism) और फैट-बर्न की गति तेज हो जाती है। T3 और T4 के उचित अनुपात को बनाये रखने में भी यह सहायक है।

**पिप्पली :** सेलीनियम की कमी से थायरॉइड ठीक से कार्य नहीं कर पाता है। पिप्पली सेलीनियम के अवशोषण को बढ़ा देती है। अनेक शोधों में यह पाया गया है कि पिप्पली रसायन हायपोथायरॉयाड में बहुत लाभ देता है।

**लाल मिर्च :** लाल मिर्च में मौजूद कैप्सासिन तत्व भूख कम कर सकता है और कैलोरी को जलाते हुए एनर्जी के लेवल को बढ़ाता है।

**अशद भस्म :** यह T4 हार्मोन को सक्रिय हार्मोन T3 में परिवर्तित करने में सहायक है। थायरोसिल थायरॉइड ग्रंथि सम्बन्धी रोगों के अतिरिक्त सूजन, इन्फ्लेमेशन, थकावट, कमजोरी, वजन की अधिकता (weight gain) में भी लाभदायक है।



पैक :  
10 x10 कैप्सूल

डोज :  
चिकित्सक के परामर्शानुसार



भारत में 4.5 करोड़ के आस-पास थायरॉइड के रोगी हैं और इनमें आधी संख्या महिलाओं की है। थायरॉइड मानव के गले में स्थित तितली के आकार की एक प्रमुख ग्रन्थि (Gland) है, जिससे थायरॉइड हार्मोन का स्राव होता है जो हमारे मेटाबॉलिज्म की दर को नियंत्रित करता है यानी जो भोजन हम खाते हैं उसे ऊर्जा में बदलने का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त हृदय, कोलेस्ट्रॉल, मसल्स और हड्डियों को भी प्रभावित करता है।

अधिक तनाव या टेंशन, दवाओं के साइड-इफेक्ट्स, थायरॉइड ग्रंथि की हार्मोन बनाने की क्षमता में कमी हो, भोजन में आयोडीन की कमी या ज्यादा इस्तेमाल, परिवार में किसी को थायरॉइड की समस्या, रजोनिवृत्ति आदि इस रोग के मुख्य कारण हैं।

T3 का सामान्य स्तर: 3 से 8

T4 का सामान्य स्तर: 4 से 11



T3 और T4 के स्तर के सामान्य नहीं होने पर समस्याएँ :

अत्यधिक थकावट, वजन में वृद्धि, हेवी पीरियड्स, कम तापमान में सहनशक्ति की कमी, यादाश्त की कमी, बालों में सूखापन और भुरभुरापन, आवाज में भारीपन आदि।

**TSH:** यह एक हार्मोन है जो थायरॉइड के कार्य को प्रोत्साहित करता है। इसलिए इसे Thyroid Stimulating Hormone कहते हैं। ब्रेन में स्थित पीट्यूटेरी ग्लैंड इसका उत्पादन करता है। TSH थायरॉइड ग्लैंड में T3 (Triiodothyronine) और T4 (Thyroxine) के बनने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है।

T3, T4 और TSH की मात्रा और इन हार्मोनों का संतुलन शरीर के अन्दर मेटाबोलिज्म को प्रभावित करता है। जब T3 और T4 का स्तर कम होता है तो शरीर थायरॉइड को प्रोत्साहित करने के लिए अधिक TSH और T3, T4 के स्तर के अधिक होने पर कम TSH बनाता है।

TSH के स्तर को दूसरे कारक भी प्रभावित करते हैं जैसे : थायरॉइड ग्लैंड में सूजन, भोजन में आयोडीन की कमी, आनुवांशिकता, प्रेगनेंसी, विकिरण, अवसाद दूर करने वाली औषधि का प्रयोग, कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली दवाएं, स्टेरॉयड, केमोथेरेपी आदि के प्रयोग।



## हाइपरथायराइडिज्म और हाइपोथायराइडिज्म

### हाइपरथायराइडिज्म :

वयस्क में : T3 और T4 का स्तर सामान्य से अधिक पर TSH का स्तर 0.4 mIU/L से कम होने पर थायरॉइड ग्लैंड अति सक्रिय हो जाती है और थायरॉइड हार्मोन का अधिक उत्पादन होने लगता है । ऐसी स्थिति में एंटीथायरॉइड औषधियों का प्रयोग किया जाता है ।

जो Thyroxin के डोज लेते हैं उनमें TSH स्तर 2.5 से 0.4 mIU/L होना चाहिए 2.5 mIU/L से कम आदर्श स्तर है ।

### हाइपोथायराइडिज्म :

वयस्क में : T4 का स्तर सामान्य से कम पर TSH का स्तर 0.4 mIU/L से अधिक होने पर थायरॉइड ग्लैंड कम सक्रिय हो जाती है – थायरॉइड हार्मोन का कम उत्पादन होने लगता है । ऐसी स्थिति में आम तौर पर थायरॉइड हार्मोन की वैकल्पिक औषधि हो सकती हैं और भोजन में फेरबदल की राय भी दी जाती है ।

**ब्राह्मी :** T3 हार्मोन के स्तर में बिना किसी बदलाव के थायरॉइड T4 हार्मोन के स्तर को बढ़ाता है । सोचने, समझने और याद रखने की शक्ति में वृद्धि के लिए मस्तिष्क में मौजूद रसायनों को उत्प्रेरित करने के साथ ही मस्तिष्क की कोशिकाओं को अल्जाइमर रोग से भी बचाता है । इसका उपयोग पीठ, कमर और जोड़ों के दर्द, एपिलेप्सी, मानसिक कमजोरी जैसी शिकायतों में भी किया जाता है ।

**पाषाणभेद :** यह मूत्र नली या किडनी में स्थित स्टोन को बनने से रोकने और उसे तोड़ देने के लिए अत्यधिक उपयोगी है । इसके उपयोग से ज्वर भी कम हो जाता है । इसकी जड़ में एंटीडायबिटिक गुण निहित हैं ।



**थायरोसिल** के प्रत्येक कैप्सूल में हैं 8 अद्भुत प्रभावशाली हर्ब्स के एक्सट्रैक्ट जो थायरॉइड के रोगियों के लिए बहुत लाभदायक हैं :

ब्राह्मी एक्सट्रैक्ट (Bacopa monnieri)	150 mg
काली मिर्च एक्सट्रैक्ट (Piper nigrum)	50 mg
शुद्ध गुग्गुल (Commiphora Mukul)	150 mg
पाषाणभेद एक्सट्रैक्ट (Bergenia lingulat)	80 mg
पिप्पली एक्सट्रैक्ट (Piper longum)	80 mg
लाल मिर्च एक्सट्रैक्ट (Capsicum annum)	10mg
यशद भष्म	10 mg
सफेद कत्था (Acacia catechu)	20mg

## गैस्टोमोर



गैस्टोमोर गैस सम्बंधित समस्याओं से छुटकारा दिलाता है। यह अल्सर, अति अम्लता, खट्टी डकारों और गैस से छुटकारा दिलाता है। भोजन को पचाने के लिए एवं बैक्टीरिया को मारने के लिए पेट में एसिड का उत्पादन होता है। इस एसिड के अभाव में भोजन का पाचन सुचारु रूप से नहीं हो सकता लेकिन एसिड पेट की अंदरूनी सतह को गला भी सकता है। इससे बचने के लिए प्राकृतिक रूप से आंतों में एक अंदरूनी सुरक्षात्मक परत होती है। सामान्य रूप से इस सुरक्षा परत में कोई टूट-फूट नहीं होती है जिससे एसिड का दुष्प्रभाव आंतों पर नहीं होता। जब इस परत में कहीं टूट-फूट हो जाती है तो ऐसी अवस्था में अल्सर उत्पन्न हो जाते हैं और व्यक्ति को काफी तीव्र दर्द होता है। यह दर्द सबसे अधिक छाती और पेट के बीच में होता है। इस अल्सर का मुख्य कारण बैक्टीरिया एच0पाईलोरी बैक्टीरिया द्वारा संक्रमण, लम्बे समय तक दर्द-निवारक दवाओंका सेवन, मसालेदार भोजन एवं तनाव हैं।

### गैस्टोमोर के लाभ

- **नागरमोथा**- भूख बढ़ाता है, गैस कम करता है, पेट दर्द से मुक्ति दिलाता है और पाचन-क्रिया के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करता है। नागरमोथा में संकोचक गुण होता है, जिससे यह आंतों की भीतरी परत में आई सूजन को कम करता है। पेट से उचित समय में भोजन को पेट से छोटी आंत की ओर भेजता है और पेट-दर्द को कम करने में सहायक है।
- **मुलेठी**- मुलेठी में लीवर संरक्षक गुण पाये जाते हैं जिससे यह लीवर कोशिकाओं को विषाणुओं एवं स्व-प्रतिरक्षा से होने वाले नुकसान से बचाता है। मुलेठी अल्सर को रोकने में सहायक है।
- **बंसा**- बंसा उलटी, मतली और खट्टी डकारों से छुटकारा दिलाने में सहायक है।
- **सोवा**- पेट फूलना और अधोवायु को कम करता है। सोवा भूख बढ़ाता है और साथ ही यह जठराग्नि वर्धक है जिससे खाना, आसानी से पचता है। सोवा हिचकियों को रोकने में अत्यंत लाभदायक है।
- **आंवला**- एक अदभुत फल है, जिसमें प्रकृति में पाया जाने वाला सबसे अच्छा और ज्यादा विटामिन-सी पाया जाता है। आंवला शरीर के त्रिदोषों वात, कफ और पित्त को संतुलित करता है। आयुर्वेद में भी आंवला को दीपनपाचन भूख बढ़ाने वाला और अनुलोम कब्ज घटाने वाला कहा गया है।
- **पीटपाप्रा**- यह आंतों की कृमियों और परजीवियों को नष्ट करता है और अतिअम्लता को घटाता है।

### गैस्टोमोर का योग-हर 10 ml में

नागरमोथा (सायप्रस रोटनडस)	120 mg
मुलेठी (ग्लाइसीराईजा ग्लैब्रा)	120 mg
बंसा (अधैतोदा वासिका)	120 mg
सोवा (अनेथम सोवा)	240 mg
आंवला (एम्ब्लिका ओपिफिसिनैलिस)	320 mg
पीटपाप्रा (फुमैरिया ओपिफिसिनैलिस)	160 mg
पटोलपत्र (ट्राईकोसैन्थिस डाईका)	320 mg
सिंघाड़ा (ट्रेपॉईडी विसपिनोसा)	110 mg



पैक :  
200 ml

उपयोग : 10ml दिन में 3 बार, 10 उस पानी के साथ

# स्लिम पावर

रहें फिट, ट्रिम और स्लिम



स्लिम दिखने के साथ हर समय फिट रहना आज महिलाओं और पुरुषों की पहली चाहत है। आजकल मोटापा एक आम समस्या बन गयी है। वजन कम करने के लिए लिये उपभोग किए जाने वाले खाद्य पदार्थों में यह ध्यान रखना चाहिए कि उनमें प्रोटीन की मात्रा अधिक हो और चर्बी तथा कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम हो। मोटापा और शरीर का वजन बढ़ना, ऊर्जा के सेवन और ऊर्जा के उपयोग के बीच असंतुलन के कारण होता है। मोटापे के कारण कई गंभीर रोग हो सकते हैं जैसे डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, लिवर, दिल या किडनी के रोग, यौन रोग, मधुमेह, हृदय रोग, गठिया, पीठ दर्द, स्लीप एपनिया अनिद्रा, जोड़ों की बीमारी आदि।

**वजन घटाने और पतला शरीर हासिल करने के लिए 4 सम्पूर्ण प्राकृतिक अवयवों से समृद्ध एक अच्छा आयुर्वेद उत्पाद है : स्लिम पावर कैप्सूल :**

- अगर भूख कम लगे, चयापचय (metabolism) की गति बढ़ जाए जिससे अधिक कैलोरी जले तो वजन कम होने लगती है।
- सौंठ का सार – स्लिम पावर में निहित सौंठ का सार रक्त संचार के गति में तीव्रता लाता है जिसके फलस्वरूप शरीर में ऊर्जा बढ़ती है और तापमान भी बढ़ जाता है।
- शुद्ध गुग्गुल – इसमें मल को ढीला करने वाले, रक्त को साफ करनेवाले, फैट कम करने वाले और कोलेस्ट्रॉल कम करने के गुण होते हैं। यह शरीर से फैट को कम करने में मदद करता है। गुग्गुल में एक ही समय में शरीर में 'अच्छा कोलेस्ट्रॉल (HDL) के स्तर को बढ़ाने और अवांछित कोलेस्ट्रॉल (LDL), ट्राइग्लिसराइड्स को कम करने के गुण हैं। गुग्गुल थायरॉइड हार्मोन के स्राव में वृद्धि लाता है जिससे चयापचय (metabolism) की गति बढ़ जाती है, अधिक कैलोरी जलती है और वजन कम करने में सहायता करती है।
- लहसुन का सार – लहसुन में मौजूद एलीसीन (allicin) जो कि सल्फरयुक्त घटक है, यह मोटापे को कम करने के लिए शरीर में मेटाबॉलिज्म के दर को बढ़ाता है। हमारे शरीर के मेटाबॉलिज्म फैट सेल को नियंत्रित रख कर अतिरिक्त फैट जमा होने नहीं देते। लहसुन शरीर में वसा के अतिरिक्त जमाव को भी रोक देता है।
- पुष्करमूल सार : इसमें निहित एलेनोलेकटॉन इंसुलिन की संवेदनशीलता बढ़ाता है जिससे इंसुलिन का स्राव कम होने के कारण शरीर में वसा की मात्रा कम संचित हो जाती है। यह कोलेस्ट्रॉल (LDL) और ट्राइग्लिसराइड्स की मात्रा कम करने और वजन घटाने में सहायक है।
- पहाड़ी इमली – वजन घटाने के लिहाज से इमली का सेवन फायदेमंद होता है। इसमें निहित हायड्रोक्सीसिटिक एसिड फैट और कोलेस्ट्रॉल के बनने और संचित होने की प्रक्रिया कम करता है। इसके कारण ऊर्जा की आवश्यकता पड़ने पर शरीर पहले से संचित फैट का उपयोग करता है। इसके फलस्वरूप संचित वसा या फैट की मात्रा कम होने से वजन और मोटापा कम होने लगता है। यह शरीर में सेरोटोनिन के स्तर को भी बढ़ाती है।

पैक: 1X5X10 कैप्सुल्स.

डोज :

2 कैप्सूल गुनगुने जल के साथ प्रतिदिन नाश्ता और रात्रि के भोजन से आधा घंटा पहले।



## तुलसामृत

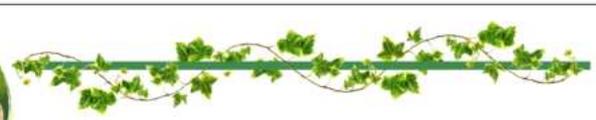
जड़ी बूटियों की रानी

तुलसी विश्व प्रसिद्ध औषधि है और उच्चतम कोटि का रसायन है। पुराने समय से लेकर आजतक तुलसी के इस्तेमाल की खास वजह भी इसके औषधीय गुण ही हैं। भारतीय संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदों में भी तुलसी के गुणों एवं उसकी उपयोगिता का वर्णन मिलता है। तुलसी को लोग जीवनदाता मानते हैं। तुलसी की सामान्यतः 7 प्रजातियाँ पाई जाती हैं— काली तुलसी, मरुआ तुलसी, राम तुलसी या वन तुलसी, कर्पूर तुलसी, कृष्ण तुलसी, शुक्ला तुलसी और ऑसीमम विरिडी।

आयुर्वेद में तो तुलसी को उसके औषधीय गुणों के कारण विशेष महत्व दिया गया है। तुलसी ऐसी औषधि है जो ज्यादातर बीमारियों में काम आती है। इसमें मौजूद एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-कैंसर तत्व तनाव को भी दूर रखते हैं और पाचन क्रिया भी सही रखते हैं। तुलसी में अनेक जैव सक्रिय रसायन पाए गए हैं। तुलसी कई बीमारियों के लिए एक हर्बल उपचार है। प्राचीन समय से इसका उपयोग अलग-अलग बीमारियों के उपाय के लिए किया जाता रहा है। तुलसी के सेवन से शरीर को कई प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट व पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।



- पेट संबंधी शिकायतें दूर होती हैं, थकान दूर होती है, सहनशीलता बढ़ती है और शरीर को कई प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट व पोषक तत्व प्राप्त होते हैं।
- इसमें मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट्स की भरपूर मात्रा किसी और हर्ब के मुकाबले सबसे ज्यादा मात्रा में पाई जाती है।
- मधुमेह के रोगियों के शरीर में ब्लड ग्लूकोज का स्तर कम करने के लिए तुलसी काफी फायदेमंद होती है।
- तुलसी में मौजूद विटामिन सी और दुसरे एंटीऑक्सीडेंट हृदय संबंधी रोगों से बचाते हैं।
- इसके प्रयोग से रक्तचाप (blood pressure) व रक्तवसा (Cholesterol) को नियंत्रित रखा जा सकता है।
- रक्त में हीमोग्लोबीन को बढ़ाने में अत्यंत सहायक है।
- स्मरण-शक्ति तेज करती है।
- ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, इन्फ्लूएंजा, खांसी और ठंड जैसी बीमारियों से बचाव करता है। तुलसामृत की 2 बूंदें थोड़े अदरक के रस या शहद के साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से दमा और खांसी में बहुत लाभ मिलता है।
- दांत के दर्द में, मसूड़ों से रक्त रिसने, दांत में कीड़ा लगने जैसी अवस्था में तुलसामृत की 4-5 बूंदें रुई पर लगाकर मसूड़े और दांत पर रखें।
- गर्म जल में तुलसामृत की 4-5 बूंदें दाल कर गार्गल करने से गले या मुंह में छाले या दर्द, आवाज बैठ जाने की अवस्था में आराम मिलता है।



## कई प्रकार के बुखार में तुलसी लाभदायक होती है

- तुलसी पित्तनाशक, वातनाशक, कुष्ठरोग निवारक, पसली में दर्द, खून में विकार, कफ और फोड़े-फुन्सियों के उपचार में अत्यधिक फायदा करती है।
- सर्दी, खांसी, निमोनिया को दूर करने में अत्यंत लाभदायक है।
- रात्रि को सोते समय यदि तुलसी की बूंदों को बॉडी आयल में मिलाकर हाथ-पैरों पर मालिश कर लिया जाए तो मच्छर पास नहीं आयेंगे।
- नींबू के रस में तुलसामृत की 4-5 बूंदें मिलाकर चेहरे पर लगाया जाये तो चर्मरोग मिटता है और चेहरा खिलता है।
- तुलसी के अर्क में एंटी-इनफ्लेमेटरी गुण, ब्लड-शुगर कम करने का गुण, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने का गुण और एंटी-कैंसर तत्व भी मौजूद होते हैं।
- तुलसामृत की कुछ बूंदें हर्बल क्रीम में मिलाकर चेहरे पर लगाने से दाग, मुहाँसे, झुर्रियां दूर करने में बहुत ही लाभदायक है।
- तुलसी में मौजूद एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-कैंसर तत्व तनाव को भी दूर रखते हैं और पाचन क्रिया भी सही रखते हैं।
- 200 से भी ज्यादा बीमारियों जैसे फ्लू, जोड़ों के दर्द, पथरी, एलर्जी, लिवर में संक्रमण, गैस, गठिया, रक्तस्राव, तनाव, वीर्य की कमी, थकावट, भूख नहीं लगना, उल्टी आदि में तुलसी के सेवन से आराम मिलता है।
- सर्दी, कफ, छींक, सिर-दर्द, दस्त में तुलसामृत की दो बूंदें शहद में मिलाकर सेवन करने से बहुत राहत मिलती है। बच्चों के लिए भी बहुत लाभदायक है।
- दिन के भोजन के बाद तुलसी की एक बूंद लेने से पेट की बीमारियाँ होने की सम्भावना कम हो जाती है।
- गर्भावस्था में प्की 4 से 5 बूंदें लेने से मिचली और उल्टी की शिकायत दूर हो जाती है।

स

**दुष्प्रभाव:** कोई दुष्प्रभाव नहीं

**उपलब्धता:** 20 मि.ली.



**सेवन विधि :**

1-1 बूंदें तुलसामृत की एक ग्लास जल या चाय में मिलाकर प्रतिदिन 4-5 बार लें या चिकित्सक के परामर्श अनुसार लें

# ग्रीन मोर

अलग-अलग प्रकार के पोषक तत्वों को प्राप्त करने के लिए कई प्रकार के भोजन हमें लेने पड़ते हैं जो आजकल के जीवन-शैली में मुश्किल होता है। ग्रीनमोर टेबलेट में सुपरफूड स्पायरुलिना सहित 14 हर्ब्स के सार उपलब्ध हैं। ग्रीनमोर एक न्यूट्रिशनल सप्लीमेंट होने के साथ ही सुपर डायजेस्टीव ब्लेंड है जिसमें निहित हैं अनेक लाभदायक कार्बनिक रूप में हर्ब्स जैसे- बार्ली ग्रास, आल्फल्फा, स्पायरुलिना, फलेक्स बीज, सीसम बीज, सूर्यमुखी बीज, तुलसी, अश्वगंधा, टर्मेरिक, आमला, पिप्पली, मेथी बीज, और अजवायन के सार। संयुक्त रूप से अच्छे स्वास्थ्य के लिए ग्रीनमोर के कई लाभदायक प्रभाव हैं :



## ग्रीन मोर के लाभ -

- कम फैट पर एन्टीआक्सीडेंट्स, प्रोटीन, मिनरल्स, विटामिन और कैल्शियम की अधिकता
- इम्युनिटी और शारीरिक ऊर्जा बढ़ाने के लिए, एन्टीएजिंग
- बालों की समस्या, वजन कम करने के लिए, एनीमिया दूर करने में सहायक
- कब्ज से राहत, आँतों की सफाई, सुचारु पाचन और रक्त-संचालन के लिए
- जोड़ों के सूजन और दर्द से राहत दिलाने में सहायक
- रक्त-चाप, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर नियंत्रण, मेनोपोज के लक्षणों से राहत
- मांस-पेशियों के विकास और लिवर को स्वस्थ रखने के लिए
- आँखों के रोग में, नींद न आने की समस्या, सिरदर्द, खांसी से आराम दिलाने में सहायक
- स्वस्थ त्वचा, हड्डियों की मजबूती, हृदय की मांस-पेशियों की सुरक्षा के लिए
- स्ट्रेस, तनाव, मायग्रेन दूर करने में मदद करना
- अनियमित पीरिअड्स की समस्या, साँसों की दुर्गन्ध दूर करने, चेहरे की चमक के लिए
- महिलाओं के स्तन-दूध बढ़ने में सहायक
- यौन क्षमता में वृद्धि, निखरी और सुंदर त्वचा के लिए उपयोगी
- मष्तिष्क की कमजोरी दूर करना



उपलब्धता :  
60 कैप्सूल की बोतल

खुराक : वयस्क - 2 टेबलेट्स प्रतिदिन 2 बार खाली पेट/  
चिकित्सक के परामर्शनासार

## मोरल मोरिंगा एडवांस



पैक : 60 कैप्सूल

**मोरिंगा :** इस पेड़ के लगभग सभी अंग (पत्ती, फूल, फल, बीज, डाली, छाल, जड़ें, बीज से प्राप्त तेल आदि) खाये जाते हैं, एशिया और अफ्रीका में कच्ची फलियाँ (ड्रम स्टिक) खायी जाती हैं, कम्बोडिया, फिलिपाइन्स, दक्षिणी भारत, श्रीलंका, अफ्रीका में पत्तियाँ खायी जाती हैं, विश्व के कुछ भागों में नयी फलियाँ खाने की परम्परा है जबकि दूसरे भागों में पत्तियाँ अधिक पसन्द की जाती हैं। इसके फूलों को पकाकर खाया जाता है और इनका स्वाद खुम्भी (मशरूम) जैसा बताया जाता है, अनेक देशों में इसकी छाल, रस, पत्तियों, बीजों, तेल, और फूलों से पारम्परिक दवाएँ बनायी जाती हैं। इस पेड़ के विभिन्न भाग अनेकानेक पोषक तत्वों से भरपूर पाये गये हैं।

### मोरिंगा निम्न बीमारियों में लाभदायक है -

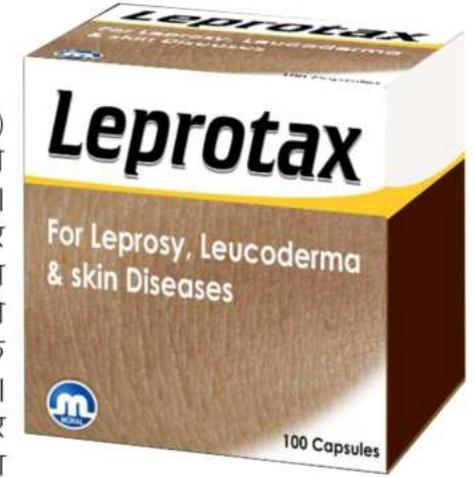
- एनीमिया
- आर्थायतीस
- जोड़ों के दर्द
- रहुमेटीज्म
- अस्थमा
- कैंसर
- कब्ज
- किडनी स्टोन
- डायबीटीज
- डायरिया
- एपिलेप्सी
- पेट दर्द
- पेटध्आंत के अल्सर
- सिर-दर्द
- हृदय सम्बन्धी समस्याएँ
- हाय ब्लड प्रेशर

- इसमें 36 प्राकृतिक इन्फ्लेमेट्री एजेंट्स पाए जाते हैं
- इसमें 46 विभिन्न एंटी-ओक्सीडेंट्स और सभी आवश्यक एमिनो-एसिड्स पाए जाते हैं जो मांशपेशियों, हारमोंस, एन्जाइम्स, न्यूरोट्रांसमीटर्स और इम्युनोग्लोबिंस के लिए जरूरी है
- बीटा-कैरोटीन की अधिकतम मात्रा को यह विटामिन ए में बदल देती है जिसके कारण बचपन में अंधेपन की बीमारी की संभावना कम हो जाती है
- इसका इस्तेमाल सूजन कम करने, सेक्स ड्राइव बढ़ाने, प्रेगनेंसी रोकने, इम्युनिटी बढ़ाने, स्तन में दूध की मात्रा बढ़ाने, और न्यूट्रीशनल सप्लीमेंट और टॉनिक की तरह नियमित रूप से उपयोग करने के लिए भी पुरे विश्व में किया जाता है

डोज: एक कैप्सूल प्रति दिन



## लेप्रोटेक्स



कोढ़ एक विशेष प्रकार की बैक्टीरिया के संक्रमण से होता है। कोढ़ या कुष्ठरोग (लेप्रोसी) या हन्सेन रोग (Hansen's disease) एक जीर्ण रोग है जो माइकोबैक्टीरियम लेप्राई (Mycobacterium leprae) नामक बैक्टीरिया के कारण होता है। लेप्रोसी (Leprosy) शब्द प्राचीन ग्रीक भाषा के शब्द λέπρα [léprā] एक बीमारी, जो त्वचा को छिलकेदार बना देती है, से निर्मित है। यह मुख्य रूप से मानव त्वचा, ऊपरी श्वसन नली की म्यूकस मेम्ब्रेन, परिधीय तंत्रिकाओं (peripheral nerves), आंखों और शरीर के कुछ अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करता है। अगर त्वचा पर पाये जाने वाले पीले या ताम्र रंग के धब्बे जो सुन्न हों या रंग तथा गठन में परिवर्तन दिखाई दे, तो यह कुष्ठ रोग के लक्षण हो सकते हैं। इस रोग के विकसित हो जाने के बाद भी रोगी सामान्यतः अपने को इस रोग से ग्रसित होने की कल्पना नहीं कर पाता। जब यह रोग और अधिक बढ़ता है तो यह मांस-मज्जा और हड्डी तक पहुँच जाता है। मांस-पेशियों का क्षय होने लगता है, हड्डी भी गलने लगती है और वह गलित कुष्ठ का रूप धारण कर लेता है। इसका समय पर उपचार नहीं करने से त्वचा, हाथ-पैरों, आँखों, नसों, नितम्बों पर सुन्न और रंगहीन दाग पाए जाते हैं और क्षतिग्रस्त भी हो सकते हैं। यदि लक्षण प्रकट होते ही कुष्ठ रोग का उपचार आरंभ कर दिया जाए तो इस रोग से मुक्त होना निश्चित है। मनुष्य स्वस्थ होकर अपना सारा कार्य पूर्ववत् कर सकता है।

### कुष्ठ सामान्यतः तीन प्रकार का ही होता है।

- तंत्रिका कुष्ठ (Nerve leprosy)—इसमें शरीर के एक अथवा अनेक अवयवों की संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। सुई चुभोने पर भी मनुष्य किसी प्रकार का कोई कष्ट अनुभव नहीं करता।
- ग्रंथि कुष्ठ (Lepromatous leprosy)—इसमें शरीर के किसी भी भाग में त्वचा से भिन्न रंग के धब्बे या चकत्ते पड़ जाते हैं अथवा शरीर में गाँठे निकल आती हैं।
- मिश्रित कुष्ठ (Mishrit leprosy)—इसमें शरीर के अवयवों की संवेदनशीलता समाप्त होने के साथ-साथ त्वचा में चकत्ते भी पड़ते हैं और गाँठे भी निकलती हैं।

### सफेद दाग

सफेद दाग को वीटिलिगो या ल्यूकोडर्मा के नाम से भी जाना जाता है। यह एक प्रकार का त्वचा रोग है। त्वचा के बाहरी परत में मेलेनिन नामक द्रव्य होता है जिसके कारण त्वचा का रंग प्राकृतिक और सामान्य होता है, पर शरीर के किसी भाग से जब मेलेन्साइट्स पूरी तरह से खत्म हो जाते हैं तो उस हिस्से का रंग सफेद होने लगता है। ल्यूकोडर्मा का सम्बन्ध डायबिटीज या थायरॉइड से भी हो सकता है। यह रोग स्पर्श करने से नहीं फैलता है।

लेप्रोटेक्स 19 प्रभावशाली अवयवों के सम्मिश्रण से निर्मित एक विश्वसनीय प्राकृतिक उपचार है। वे अवयव हैं: अनंतमूल, मस्तयारा, पित्तपरा, चिरायता, ऊनाब, मेहंदी मंडी बटी, छोटी हरद, मकोई, चोब्वीनी, बाकुची, दारुहल्दी, शुद्ध गंधक, गंधक रसायन, मनदुर भस्म, स्वर्ण माक्षिक, रस माणिक्य, महा मजिस्थादिघन और किशोर गुग्गल।



### - अनंतमूल

आयुर्वेद के मतानुसार यह सूजन कम करती है, मूत्ररेचक है, अग्निमांद्य, ज्वर, रक्तदोष, उपदंश, कुष्ठ, गठिया, सर्पदंश, वृश्चिकदंश इत्यादि में उपयोगी है।

### - चिरायता

वैज्ञानिक मतानुसार चिरायता का रासायनिक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि इसमें ओफेलिक एसिड, चिरायनिन और एमेरोजेण्टिन नामक ग्लाइकोसाइड्स, जेन्टीयोपीक्रीन, सुअर्चिरिन, नामक जैन्थोन होते हैं। उल्लेखनीय है कि एमेरोजेण्टिन नामक ग्लाइकोसाइड संसार के सबसे अधिक कड़वे पदार्थों में से एक होता है। कृमि-सेग, कुष्ठ, सभी में इसका परिणाम तुरंत होता है। लीवर प्लीहा पर इसका प्रभाव सीधा पड़ता है (कालाजार में भी अत्यंत उपयोगी)। ज्वर मिटाकर यह दौर्बल्य को भी दूर करता है। यह एक कारगर एंटीबायोटिक है।

### - मस्तयाश

एंटीबैक्टीरियल, अशुद्धि दूर करने वाला, स्नायविक विकार को दूर करने वाली औषधि।

### - मेहंदी

कुष्ठ रोग को पूरी तरह से ठीक करती है। खून के विकार, उल्टी, कब्ज, कफ-पित्त, कुष्ठ (कोढ़), बुखार, जलन, रक्तपित्त, पेशाब करने में कठिनाई होना (मूत्रकृच्छ) तथा खुजली आदि रोगों में मेहंदी काफी लाभकारी है।

### - छोटी हरड़

हरीतकी संपूर्ण शरीर के लिए फायदेमंद है विशेष रूप से कब्ज, बवासीर, पेट के कीड़ों को दूर करने, नेत्र ज्योति व भूख बढ़ाने, पाचन दुरुस्त रखने में।

### - पित्तप्रा

रक्त शुद्ध करने वाली, मूत्रवर्धक, रेचक (laxative), पेट दर्द, बुखार, डायरिया, जोंडिस, लेप्रोसी, टी.बी. और रक्त-विकार में लाभदायक।

### - ऊनाब

सूजन और दर्द से आराम, बालों को विकसित करना, मुंह के छालों से आराम, एन्टीडायबीटीक।

### - मकोई

लेप्रोसी, त्वचा संक्रमण, जखम भरने, सूजन दूर करने, बैक्टीरियल संक्रमण, जोड़ों और हड्डियों के संक्रमण और गैंग्रीन वाले जखम ठीक करने में सहायक।

### - श्मार्लेक्स चायना

लेप्रोसी, ल्यूकोडर्मा और यौन-रोगों को दूर करने में लाभदायक

### - बाकुची

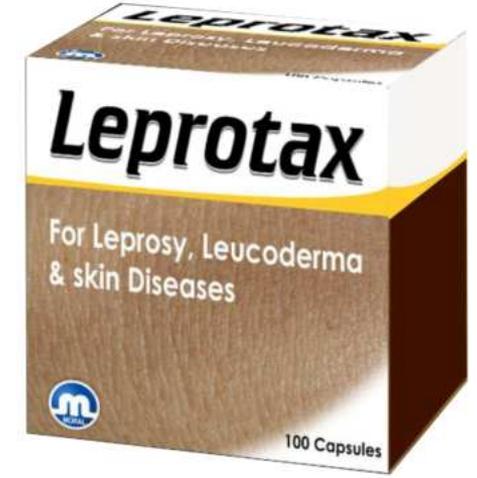
लेप्रोसी, ल्यूकोडर्मा और त्वचा-रोगों से मुक्त करने में अत्यंत सहायक

### - दारुहल्दी

जखम भरने और स्नायविक विकार को दूर करने वाली औषधि

### लेप्रोटैक्स से लाभ

- कुष्ठ रोग के कारण शरीर के प्रभावित भागों को सामान्य अवस्था में लाना
- त्वचा में हुए हानि या क्षय को रोकना
- त्वचा पर हुए धब्बों को त्वचा के मूल रंग की तरह बनाना
- जख्म बनने से रोकना
- आँखों को क्षतिग्रस्त होने से बचाना
- कुष्ठ रोग के कारण हुए सुन्नपन को दूर करना
- रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि लाना
- जख्म का तेज गति से भरना
- मवाद आना कम होना
- दर्द से आराम
- स्नायु विकृति का दूर होने लगना
- पाचन का स्वस्थ होना



पैक : 100 कैप्सूल

डोज:

2 कैप्सूल दो बार खाली पेट या चिकित्सक के परामर्शानुसार

## मोर स्टेम डबल स्टेमसेल

इस सदी की सबसे बड़ी खोज है स्टेम सेल्स। जन्म के समय शिशु अपनी माँ से जिस नाड़ से जुड़ा होता है उसमें होता है— भ्रूणीय स्टेम सेल्स। इसकी सहायता से 25-30 सालों तक अनेक बिमारियों से उस बच्चे को गंभीर बिमारियों से बचाया जा सकता है पर इसे संरक्षित रखना तकनीकी तौर पर अत्यधिक मुश्किल और खर्चीला होता है।

आज दुनिया में कई प्रकार के रोगों के निदान में स्टेम सेल्स वरदान की तरह सिद्ध हो रहे हैं। स्टेम सेल्स हमारे शरीर के सभी अंगों में स्थित होते हैं और जिनका उपयोग शरीर स्वयं को प्राकृतिक रूप से अपनी मरम्मत करने के लिए उपयोग करता रहता है। स्टेम सेल एक सादी स्लेट की तरह है जिसका उपयोग शरीर अपनी आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार की कोशिकाओं के निर्माण के लिए करता रहता है। स्टेम सेल्स विभिन्न क्षतिग्रस्त अंगों के पास पहुँच कर उन अंगों की कोशिकाओं का रूप धारण कर लेते हैं, यहाँ तक कि उनके 'जेनेटिक कोड' भी। इस प्रकार शरीर रोगग्रस्त या क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की जगह उसी प्रकार की नई कोशिकाओं का पुनर्निर्माण कर लेता है। उदाहरणस्वरूप मान लें कि पैंक्रियाज ग्रंथि के कुछ सेल्स के क्षतिग्रस्त, कमजोर या स्थानान्तरित होने के कारण ग्रन्थि में बीटा-सेल्स नहीं बन पाने और इंसुलिन के भी नहीं बन पाने के फलस्वरूप डायबिटीज हो सकती है। यदि स्टेम सेल्स से पैंक्रियाज ग्रंथि का उपचार किया जाय तो यह फिर से बीटा-सेल्स जैसी कोशिकाओं का निर्माण या जीर्णोद्धार कर ग्रंथि को पुनर्जन्म दे सकती है। है न आश्चर्यजनक! रिसर्च बताते हैं कि जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, मनुष्य के शरीर के अन्दर वयस्क

स्टेम सेल्स की परिसंचरण की गति

कम होती जाती है। हमारे जन्म के समय 100% रहती है परन्तु स्टेम सेल्स की परिसंचरण की गति 35 साल की उम्र में 45%, 50 साल की उम्र में 50% और 65 साल की आयु में 90% कम हो जाती है जिसके कारण हम कई प्रकार के संक्रमण और आस्टीओपोरोसीस के शिकार हो जाते हैं। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध कुछ हर्ब्स ऐसे भी हैं जो नए स्टेम सेल्स विकसित कर सकते हैं और हड्डियों को अधिक मजबूती प्रदान कर जीवन-अवधि बढ़ाने में समर्थ हैं।

### मोर-स्टेम डबल स्टेम सेल्स इसके मुख्य घटक हैं :

सेब के स्टेम सेल्स (Apple stem cell)	300mg
अंगूर के स्टेम सेल्स (Grape stem cells)	300mg
पॉलीगोनम मल्टीफ्लोरम, (Polygonum multiflorum)	50mg
अकाई बेरी(Acai berry)	30mg
एस्त्रागलि रेडिक्स (Astragali radix)	30mg
एन्जेलिसी सायनेंसिस (Angelicae sinensis)	20mg.



### — सेब के स्टेम सेल्स (Apple stem cell):

स्विट्जरलैंड में 18वीं शताब्दी के सेब के वृक्ष की प्रजाति 'मैलस ड्यूमेस्तिका' की सेब महीनों तक बिना सड़े-गले रह सकती है क्योंकि इस पेड़ के हरे सेब के स्टेम सेल्स में ऐसे आनुवंशिक कारक होते हैं जो त्वचा और बालों के स्टेम सेल्स को लम्बे समय तक युवा, सुरक्षित और स्वस्थ रखते हैं। यह एन्टी एजिंग है। मायबेल्ली बायोकेमिस्ट्री लैब ने एक नोवेल प्लांट सेल कल्चर टेक्नॉलॉजी विकसित कर ली है जिसकी सहायता से दुर्लभ और सुरक्षित प्रजातियों से बड़े पैमाने पर स्टेम सेल्स को विकसित किया जाता है।

### — अंगूर के स्टेम सेल्स (Grape stem cell):

सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों के संसर्ग में लगातार रहने से त्वचा में सिकुड़न और झुर्रियां पड़ जाती हैं, त्वचा ढीली पड़ जाती है। त्वचा की कोशिकाओं में इन किरणों के कारण बने मुक्त कण (free radicals) और टॉक्सिंस त्वचा के आधारीय स्तर में विद्यमान एपिडर्मल एडल्ट स्टेम सेल्स को क्षतिग्रस्त या नष्ट कर देते हैं। अंगूर के बीज और बाहरी परत में फेनोलिक यौगिकों के अतिरिक्त उन एनटीआक्सिडेंट की प्रचुरता होती है जो विटामिन सी से 20 गुणा और विटामिन ई से 50 गुणा अधिक प्रभावी है। आप जानते ही हैं कि एंटीआक्सिडेंट मुक्त कणों (free radicals) को नष्ट कर देते हैं जिससे त्वचा जवां, तनी हुई, झुर्रिरहित और सुंदर बनी रहती है।

### — पॉलीगोनम मलटीफ्लोरम (Polygonum Multiflorum)

इसके प्रभाव हैं: एन्टीऑक्सीडेंट की गतिविधि को बढ़ा देना। लाल रक्त कणों की झिल्ली को मजबूती प्रदान करना और उनकी वृद्धि और विकास में सहयोग, मांस-पेशियों और टेंडन को शक्ति प्रदान करना। यह स्नायुरोग, जोड़ों और पीठ के दर्द, निम्न रक्तचाप में भी उपयोगी है।

### — आर्गन फल (Argan fruit)

बालों को झरने, गिरने, टूटने, हल्के, पतले और काँतिहीन होने से रोक देता है क्योंकि यह बालों को जड़ से टिप तक पोषण प्रदान करता है। कालक्रमानुसार केशकूप (hair follicles) के जरण या पुराने हो जाने की प्रक्रिया के विरुद्ध यह बालों के जड़ स्टेम सेल्स के ह्रास को रोक देता है, सुषुप्त कोशिकाओं को उद्दीप्त करता है और प्राकृतिक रूप से बालों के रिपेयर होने की प्रक्रिया को तेज करता है।

### — ब्लू बेरी

इसमें पाई जाने वाली एन्थोसायनिन नामक एंटीऑक्सीडेंट ब्रेन के अन्दर बनने वाली फ्री रेडिकल्स को नष्ट करने के अतिरिक्त सूजन, कामेच्छा की कमी जैसी शिकायतों को दूर करती है। इसमें निहित ओमेगा 3-6 और 9 फैटी एसिड्स के कारण यह चर्म रोग, हार्ट अटैक और कैंसर होने की संभावना कम करती है। विटामिन B2 और B3 की मौजूदगी शरीर को ऊर्जा प्रदान करने के अतिरिक्त याददाश्त भी बढ़ाती है। अकाई बेरी नए स्टेम सेल्स की उत्पत्ति में भी सहायक है।

### — एरआगली रेडिकस

इसमें अन्तर्निहित सेपोनिन्स कोलेस्ट्रॉल कम करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। फ्लेवोनोइड्स फ्री रेडिकल्स को नष्ट करता है और कैंसर या दिल की बीमारियों को होने से रोकता है। इसका एक और घटक पॉलीसेक्राइड्स जीवाणुओं के संक्रमण से बचाव करता है।

### एन्जेलिशी सायलेशिस

रक्त सक्रिय रखने, माहवारी नियंत्रित करने, मासिक-धर्म के दर्द को दूर करने, आंत में चिकनापन लाने और अनिद्रा दूर करने के लिए उपयोगी है।



इस प्रकार डबल स्टेम सेल्स के नियमित उपयोग से कई लाभ मिलते हैं :

- स्टेम सेल्स के सेवन से शरीर के 80% सेल्स सक्रिय हो जाते हैं।
- त्वचा के सेल्स की सुरक्षा
- पुरुष और महिलाओं में हारमोन संतुलन
- बढ़ती उम्र के प्रभाव से बचाव
- लिवर, फेफड़ों और किडनी के कार्यों को संतुलित रखना
- शुगर स्तर कम करना, संतुलित रक्त संचार
- मोतियाबिंद, मायोपिया और आँखों की समस्याओं से बचाव
- याददाश्त बढ़ाना
- कब्ज और पाचन की समस्या में लाभकारी
- मोटापा कम करना
- चिंता, थकान, अनिद्रा दूर करना





## हाई-नोर/लो-नोर

### संक्षिप्त में जान लें कि ब्लड प्रेशर या रक्त चाप किसे कहते हैं ?

ब्लड प्रेशर रक्तवाहिनियों में बहते रक्त द्वारा वाहिनियों की दीवारों पर डाले गये दबाव को कहते हैं। धमनियां वे नलिकाएं हैं जो पंप करने वाले हृदय से रक्त को शरीर के सभी उतकों और अंगों तक ले जाती हैं। हृदय रक्त को धमनियों में पंप करके धमनियों में रक्त प्रवाह को विनियमित करता है और इसपर लगने वाले दबाव को ही रक्तचाप या ब्लड प्रेशर कहते हैं। किसी व्यक्ति का ब्लड प्रेशर सिस्टोलिक / डायस्टोलिक प्रेशर के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है, जैसे कि 120 / 80 ऊपर की संख्या अर्थात सिस्टोलिक धमनियों में दबाव को दर्शाती है। नीचे वाली संख्या अर्थात डायस्टोलिक रक्त चाप धमनियों में उस दबाव को दर्शाती है जब संकुचन के बाद हृदय की मांसपेशियां शिथिल हो जाती हैं।

एक स्वस्थ वयस्क व्यक्ति का सिस्टोलिक रक्तचाप मरकरी के 90 और 120 मिलीमीटर के बीच होता है। सामान्य डायस्टोलिक रक्तचाप मरकरी के 60 से 80 मि.मि. के बीच होता है। मेडिकल विज्ञान के अनुसार सामान्य रक्तचाप 120/80 होना चाहिए। यदि आप भी हाई या लो ब्लड प्रेशर की समस्या से परेशान हैं तो आपके लिये 'मोरल फार्मास्युटिकल्स' प्रस्तुत करते हैं हाई-नोर (HIGH-NOR) और लो-नोर (LO-NOR)।

### | हाई-नोर |

(7 अति प्रभावी हर्ब्स से समृद्ध)

अनुचित खानपान, अत्यंत गरिष्ठ भोजन का सेवन, फास्ट फूड, फसलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले कीटनाशक, प्रिजर्वेटिव्स के कारण शरीर में बने टॉक्सिंस, मानसिक तनाव, गुस्सा, अत्यधिक मात्रा में नमक का सेवन, धूम्रपान और शराब का सेवन, महिलाओं में हॉर्मोन के बदलाव के कारण, किसी विशेष दवाई के कारण, रात को देर तक जागने के कारण, चिंता, शारीरिक श्रम, व्यायाम की कमी के कारण हाई ब्लड प्रेशर की समस्या आम हो गयी है। गर्दन के पीछे के हिस्से में दर्द, घबराहट और कंपकंपी महसूस होना, चक्कर आना और बिना काम किए थकान का रहना, उच्च रक्तचाप के प्रमुख लक्षण हैं। उच्च रक्त चाप या हाई ब्लड प्रेशर की वजह से हार्ट फेल एंजाइना, हार्टअटैक आदि की संभावना बढ़ जाती है। उच्च रक्तचाप के कारण शरीर के अनेक अंग जैसे किडनी, आँखें, क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। पैरालिसिस होने की संभावना हो सकती है। व्यक्ति की 50 साल की आयु के आस-पास हृदय की मांस-पेशियाँ कमजोर होने लगती हैं जिसके कारण भी ब्लड-प्रेशर और धडकन बढ़ जाती है। जब हृदय के स्पंदन से रक्त संचार पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न होता है तब उस अवस्था को हाई ब्लड प्रेशर या उच्च रक्तचाप कहते हैं, मगर जब उच्च रक्तचाप की स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तब उस अवस्था को हाइपरटेंशन कहते हैं।



## — अर्जुन छाल

लिवर और हृदय को "को-एन्जाईम क्यू-10" की अत्यधिक आवश्यकता होती है। बढ़ती उम्र के साथ "को-एन्जाईम क्यू-10" का क्षय होने लगता है। ऊर्जा के उत्पादन और संचारण के लिए, LDL कोलेस्ट्रॉल की क्षति रोकने के लिए और हृदय के कार्यों को सामान्य रखने के लिए "को-एन्जाईम क्यू-10" महत्वपूर्ण है। शोधों से पता चला है कि अर्जुन 'बीटा ब्लॉकर' की तरह कार्य करता है। इसकी छाल में मौजूद "को-एन्जाईम क्यू-10" और अर्जुनोइड्स हाई ब्लड प्रेशर को कम करने और हृदय के कार्यों को सामान्य रखने में सक्षम है।

इनके प्रमुख गुण हैं कि यह हृदय की मांस-पेशियों में उचित मात्रा में रक्त प्रवाह होने में (anti-ischemic), एंटीआक्सीडेंट (antioxidant), फैट या लिपिड के उच्च स्तर को कम करने (hypolipidemic) और धमनियों में फैट के जमाव को रोकना (antiatherogenic)। इसमें अन्य प्रभावशाली घटक हैं : ट्रायटरपीनोइड्स, बीटा-सायटोस्टेरोल और ग्लायकोसाइड्स।

## — आंवला

यह ट्राइग्लिसराइड्स को कम करने और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सामान्य रखने और हृदय तथा रक्त नलिकाओं को स्वस्थ रखने के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक हर्ब है। आंवला के इतने लाभ इसके एक उत्तम एंटीआक्सीडेंट होने के कारण हैं जो इसमें प्रचुर मात्रा में मौजूद विटामिन सी और टेनिंस की विशेषताओं के कारण है।

## — मुक्ता शक्ति भस्म

कैल्शियम कार्बोनेट और कॉफिओलीन इसके मुख्य घटक हैं। मुक्ता शक्ति भस्म के गुण हैं : एंटीआक्सीडेंट, हार्ट-बीट या हृदय स्पन्दन को सामान्य रखने में सहायता करना। इसके अतिरिक्त यह हार्टबर्न, एसिडिटी, अपच, खट्टी डकार, लिवर और पेट-दर्द, मानसिक तनाव के कारण भूख की कमी, कफ, शरीर में कैल्शियम की कमी, आस्टीओपोरोसिस, सूजन / दर्द के कारण जोड़ों के दर्द आदि में भी फायदा पहुंचाता है।

## — पुनर्नवा / गधाकन्द

इसके मूत्रवर्धक और Ca<sup>2+</sup> चैनल ब्लॉक करने के कारण यह ब्लड प्रेशर कम करने के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसके अतिरिक्त यह हाईपरटेंशन, अपर्याप्त मात्रा में हृदय में रक्त के प्रवाह के कारण सीने में दर्द और दर्द का अक्सर कंधों, बांहों और गर्दन तक फैल जाना (angina) और रक्त में कोलेस्ट्रॉल का उच्च स्तर (cholesterolaemia) जैसी स्थितियों में इसका उपयोग बहुत लाभदायक है।

## — सर्पगन्धा

इसके पूरे पौधे में अनेक प्रकार के एल्केलॉइड्स होते हैं किन्तु जड़ में इसकी मात्रा अत्यधिक होती है। इन एल्केलॉइड्स में रेसरपाइन अपने औषधीय गुणों के कारण जाना जाता है। यह उच्च रक्त चाप कम करने के लिए एक सुरक्षित और प्रभावकारी अवयव है।

## — प्रवाल भस्म

मूत्र रोग और दौर्बल्य में इसका प्रयोग लाभ पहुंचाता है।

## — अक्कि भस्म

हृदय की निर्बलता / रोग और रक्त प्रदर में अत्यंत लाभदायक।

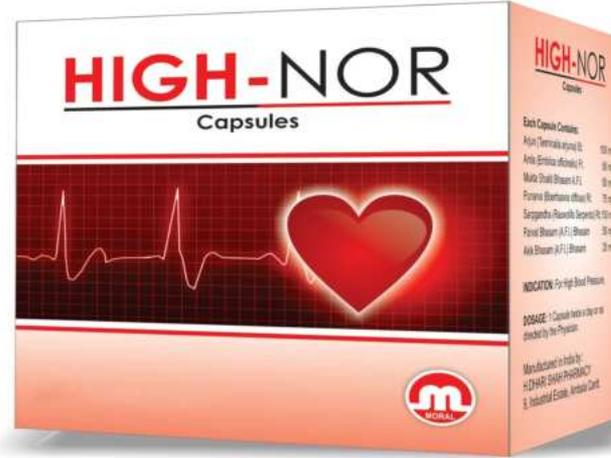
इंगित : उच्च रक्त चाप (High Blood Pressure)

डोज:

1 कैप्सूल प्रतिदिन दो बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

## हाई-नोर के प्रत्येक कैप्सूल में हैं:

अर्जुन (Terminalia Arjuna)St.	100mg
आंवला (Emblica officinalis) Ft.	50mg
पुर्ननवा (Boerhaavia Diffosa) Rt..	75mg
सर्पगंधा (Rauwolfia Serpenta) Rt.	150mg
मुक्ता शक्ति भष्म A.F.I.	50mg
परवल भष्म A.F.I.	50mg
अकिक भष्म A.F.I.	25mg



पैक : 10X10 कैप्स्यूल्स

## | लो-नोर |

(8 अति प्रभावी हर्ब्स से समृद्ध)

निम्न रक्त चाप या लो ब्लड प्रेशर से जब रक्त का प्रवाह धमनियों या नसों (arteries and veins) में अत्यधिक कम हो जाता है तो ब्रेन, हार्ट और किडनी जैसे महत्वपूर्ण अंगों में पोषक तत्व और आक्सीजन नहीं पहुँच पाते जिसके कारण वे अंग अपना कार्य सुचारु ढंग से नहीं कर पाते और इनके क्षतिग्रस्त होने की आशंका बनी रहती है। लो ब्लड प्रेशर में कमजोरी, निद्रा और थकावट महसूस होना एक आम समस्या है। लो ब्लड प्रेशर में चक्कर, सुस्ती, कार्य में मन न लगना, सारे शरीर में दर्द आदि मुख्य लक्षण होते हैं, कई बार यह लक्षण मानसिक तनाव का कारण बनते हैं। कमजोर पाचन या अनुपयुक्त रक्त संचार के कारण भी ब्लड प्रेशर का स्तर सामान्य से कम हो सकता है। जिस प्रकार शरीर के लिए हाई ब्लड प्रेशर अधिक हानिकारक होता है। ठीक उसी तरह लो ब्लड प्रेशर भी हानिकारक होता है।

### असगंद

असगंद या अश्वगंधा का उपयोग जोड़ों के दर्द, लो या हाई ब्लड प्रेशर, मानसिक तनाव, कमजोरी, डायबिटीज, चिंता, कब्जियत, स्टेमिना और ऊर्जा की कमी, कमजोर प्रतिरोधी क्षमता, नपुंसकता आदि दूर करने में अत्यंत ही लाभकारी है।

### विदारि कंद

विदारि कंद निम्न रक्तचाप के रोगियों के लिये बहुत ही लाभदायक होता है। इसका नियमित सेवन करने से भी लो ब्लड प्रेशर की समस्या में आराम होता है।



## काली मुसली या मुसली कंद

इसके उपयोग से भूख बढ़ती है, शरीर को बल और शक्ति प्रदान करता है। ब्लड प्रेशर सामान्य स्तर पर लेन में उपयोगी है।

## शिलाजीत

शिलाजीत में 80 से भी अधिक मिनरल्स किसी न किसी रूप में उपलब्ध हैं और शरीर इनका अवशोषण भी आसानी से कर लेता है। यह शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत प्रभावशाली हैं। लो ब्लड प्रेशर के रोगियों में शिलाजीत सभी कोशिकाओं को रिपेयर कर उनके कार्य-कलापों में सुधार ले आता है।

## कॉफी

ब्लड प्रेशर कम होने पर कैफीन युक्त खाद्य पदार्थ का सेवन करने से रक्तचाप सामान्य होने लगता है।

## लौह भस्म

यह रक्त स्तंभक Blood coagulating और रक्तवर्धक है। खून की कमी, कमजोरी, थकावट, रक्त प्रदर में लाभप्रद। यह भूख बढ़ाता है और यह कफ और पित्त रोगों का नाश करता है। रक्त की कमी के कारण शरीर में सूजन, चक्कर आना, याददाश्त की कमी, बालों का गिरना और घबराहट होती है। खून की कमी से मासिक धर्म पर भी असर होता है। मासिक बहुत कम या बहुत अधिक आता है। ऐसे में लौह भस्म का सेवन शरीर में रक्त की कमी को पूरा करता है।

## शंख भस्म

शंख की भस्म के प्रयोग से दस्त, लिवर का बढ़ जाना, खट्टी डकार, उदर विकार, पेट दर्द आदि से निजात दिलाता है।

## यशद भस्म

कफ पित्तनाशक है। डायबिटीज, एनीमिया, कफ, दमा आदि में अत्यंत उपयोगी।

## लो नोर के प्रत्येक कैप्सूल में हैं :

असगंद (Withania Somnifera)	Rt.	100mg
विदारि कंद (Pueraria Tuberosa)	Rt.	100mg
मुस्ली कंद (Curculigo Orchioides)	Rt.	50mg
शिलाजीत (Mineral Pitch)		20mg
Coffee As it is		50mg
शद भस्म (A.F.I.)		50mg
लोह भस्म (A.F.I.)		70mg
शंख भस्म (A.F.I.)		60mg

इंगित : लो ब्लड प्रेशर

पैक : 10X10 कैप्सूल



डोज:

1 कैप्सूल प्रतिदिन दो बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

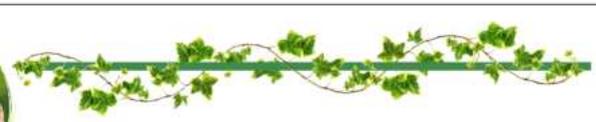


## मोरल नोनी गोल्ड जूस/कैप्सूल

यदि आप चाहते हैं कि आप स्फूर्ति और ऊर्जा से हर समय भरपूर रहें, तरो-ताजा महसूस करते रहें, शांत रहें, अच्छी नींद लें, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता सशक्त रहे तो अपने स्वस्थ और सुंदर जीवन के लिए उपयोग करें 'मोरल' का प्राकृतिक पौष्टिक सम्पूरक 'मोरल नोनी.' यह युवाओं और उम्रदराज, सभी उम्र के लिए अत्यंत उपयुक्त है। 'मोरल' का नोनी गोल्ड जूस पूर्ण रूप से शुद्ध और हर्बल है और मानव को प्रकृति का दिया गया अनुपम उपहार है। यह स्वस्थ लोगों को सर्वदा स्वस्थ रखने और बीमार लोगों को स्वस्थ बनाने में सहायक है। भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में करोड़ों लोगों द्वारा नोनी का नियमित उपयोग किया जाता है क्योंकि यह शरीर के अंदर के विषैले तत्वों को दूर करने के साथ ही शरीर की कोशिकाओं को मजबूत भी करता है। नोनी में 100 से भी अधिक न्यूट्रास्यूटिकल्स सूक्ष्म पोषक तत्व, विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। नोनी गोल्ड जूस में शुद्ध रूप से 'मोरिन्डा साइटरीफोलिया' नामक फल का सार तत्व होता है, इसमें रसायन, विषैले तत्व, कीटनाशक और वजनी धातुएं आदि की मात्रा बिलकुल नहीं होती है। आयुर्वेद और सिद्धा टेक्स्ट में भी इसका वर्णन किया गया है। नोनी गोल्ड जूस 100 प्रतिशत शाकाहारी पूरक आहार है।



- नोनी कोशिकाओं के स्तर पर कार्य करता है और उन्हें स्वस्थ रखने के साथ उनका जीर्णोद्धार भी करता रहता है। नोनी एक शक्तिशाली Di-toxifier है. कोशिकाओं की दीवारों के ऊपर जमे विषाक्त परतों को दूर कर कोशिकाओं की दीवारों पर के क्षिद्रों को बड़ा कर देता है जिससे प्रोटीन के बड़े चेन जो ऊर्जा के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं, आसानी से उन क्षिद्रों के द्वारा कोशिकाओं में प्रवेश कर जाते हैं। इस अवस्था में कोशिकाएं सरलतापूर्वक पोषक तत्वों और औषधियों को अवशोषित कर लेती हैं जिसके कारण उनका प्रभाव भी अधिक हो जाता है।
- नोनी प्रोटीन को नियंत्रित करने के साथ ही इसे क्रियाशील भी करती है। अत्यधिक व्यस्तता, बीमारी की अवस्था, तनावपूर्ण जीवनशैली और उम्र बढ़ने की अवस्थाओं में प्रोटीन की अधिक आवश्यकता होती है। कुछ आवश्यक महत्वपूर्ण प्रोटीन जो हार्मोंस, एंटीबॉडीज और एन्जाइम्स की तरह कार्य करते हैं को अपने कार्य करने के लिए 'जीरोनाइन' की आवश्यकता होती है. नोनी में 'प्रोजीरोनाइन' प्रचुर मात्रा में मौजूद है जो 'जीरोनाइन' का निर्माण करती है। इस प्रकार नोनी protein regulator और activator है। नोनी एक सुरक्षित दर्द-निवारक (safe pain & reliever) है। वैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि नोनी चुनिंदा रूप से COX 2 एन्जाइम को रोकता है और COX 1 एन्जाइम को अपना कार्य करने देता है. COX 2 एन्जाइम दर्द और सूजन के लिए उत्तरदायी होता है।
- नोनी के नियमित सेवन और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से कैंसर होने की सम्भावना कम हो जाती है।
- वर्तमान अध्ययनों से पता चलता है कि नोनी स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए अत्यंत लाभदायक है। नोनी में ग्लाइसेमिक सूचकांक (Glycolic index) निम्नतम है, जिसके कारण इसके नियमित उपयोग से डायबिटीज की गंभीर स्थिति से होने वाले जोखिम की सम्भावना कम हो जाती है।
- उच्च रक्तचाप (High blood pressure), हृदय-रोग में नोनी के फायदेमंद होने के कारण हैं - इसमें मौजूद स्कोपालीटीन रक्त-धमनियों को चौड़ा कर देता है, शरीर के द्वारा नाइट्रिक ऑक्साइड बनाने की प्रक्रिया को प्रेरित करता है। स्कोपालीटीन और नाइट्रिक ऑक्साइड रक्त-धमनियों को चौड़ा कर देते हैं। नोनी में मौजूद 'जीरोनाइन' रक्त संचार प्रणाली की कोशिकाओं को स्वस्थ रखने में सहायक है।



### मोरल नोनी गोल्ड जूस क्यों विशिष्ट या स्पेशल है ?

- इस जूस में 'मोरिन्डा साइटरीफोलिया' नामक फल के सार तत्व के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता स्वास्थ्यवर्धक स्वदेशी हर्ब्स भी मिलाये गये हैं।
- इसके स्वाद को स्वीकार्य और स्वादपूर्ण बनाने के लिए इसमें प्राकृतिक जीरो कैलोरी स्वीटनर जोड़ा गया है।
- इसमें स्पाइरुलिना के भी संयोजित होने के कारण यह जूस असाधारण रूप से लाभदायक, पौष्टिक और स्वादिष्ट है।

### मोरल नोनी गोल्ड जूस के लाभ

- कमजोर कोशिकाओं का जीर्णोद्धार कर पुनर्जीवित करता है, उन्हें ऊर्जावान बनाता है और उनकी अकड़न दूर उन्हें कोमल बनाता है।
- शरीर की कोशिकाओं के कार्य-कलापों को नियंत्रित करता है।
- रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है।
- किसी प्रकार के दर्द और सूजन कम करने में सहायक है।
- रक्त का शुद्धिकरण।
- सिर की त्वचा, बाल और त्वचा स्वस्थ रहती है।
- शरीर के अंदर से विषैले तत्व दूर होते हैं।
- संतुलित रक्त-संचार और पाचन तन्त्र, स्वस्थ स्नायु तन्त्र।
- उच्च रक्त-चाप, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर नियंत्रित करने में सहायक।
- अच्छी नींद।
- स्त्रियों के अनियमित या अधिक या दर्दयुक्त माहवारी से राहत देने में सहायक।
- कैंसर से बचाव।
- मसूड़ों की सूजन, एलर्जी से राहत।
- गठिया, कोलायटिस, एकिजमा, त्वचा की बीमारियाँ, कुछ थायरॉइडकी बीमारियों, मधुमेह, दमा के रोगियों को नोनी के उपयोग से लाभ।
- हारमोन-असंतुलन में लाभदायक।
- दवाओं के अलावा नोनी के नियमित सेवन से नोनी का सहायक के रूप में कार्य।



पैक : 500 एम.एल.

खुराक :  
30 से 50 एम.एल. पानी या शहद के साथ प्रतिदिन 2 बार



## डाइजेस्टमोर



इसके प्रत्येक 5 ml में है -

सौंफ (Foeniculum vulgare)	500 mg
चित्रक (Plumbago zeylanic)	100 mg
काली मिर्च (Piper nigrum)	50 mg
अज्वैन (Trachyspermum ammi)	150 mg
त्रिफला (A-F-I)	500 mg
सनाई (Casia angustifoli)	50 mg
पुदीना (Mentha apicat)	225 mg
काला जीरा (Vemonia anthelminticum)	125mg
सफेद जीरा (Cuminum cyminum)	125mg
Sugar	40%

### Preservatives

SB	30 mg
MPS	15mg
PPS-3mg	48mg
Colour Green	0.005mg

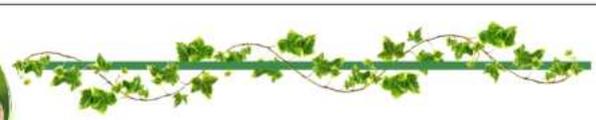
**सौंफ** : इसमें अनेक चमत्कारी औषधीय गुण मौजूद हैं जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। सौंफ की तासीर ठंडी होती है। सौंफ में कैल्शियम, सोडियम, फॉस्फोरस, आयरन और पोटैशियम जैसे महत्वपूर्ण तत्व होते हैं इसकी सहायता से पेट के कई विकारों जैसे दस्त, मरोड़, दर्द और गैस्ट्रो विकार का इलाज हो सकता है। सौंफ, वमन (उल्टी), अपच, कब्ज, दस्त (अजीर्ण), खाने के बाद तुरंत दस्त लग जाना, आंव आना, पेट का दर्द आदि में अत्यंत लाभकारी है।

**चित्रक** : आयुर्वेद में चित्रक को कफ एवं वात दोष का शमन करने वाली श्रेष्ठ औषधि माना गया है। भोजन को ठीक ढंग से पचाने में मदद करता है और पाचन क्रिया को उद्दीपित करता है। लीवर या प्लीहा से सम्बंधित समस्याओं में भी चित्रक एक अत्यंत कारगर औषधि के रूप में काम करता है। कफ, पेट के मल, पित्त और वात दस्त द्वारा साफ निकाल देता है। भूख बढ़ाने के लिए अति उत्तम है।

**काली मिर्च** : काली मिर्च पाचन प्रक्रिया को बढ़ाने में मदद करती है, जिससे पेट में हाइड्रोक्लोरिक एसिड का स्राव बढ़ जाता है। पाचन में सुधार होने से पेट का दर्द, सूजन, अपच, पेट फूलना, कब्ज और पेट में गैस जैसे समस्याओं से राहत मिलती है। काली मिर्च पाचनशक्ति बढ़ाने के साथ-साथ भूख बढ़ाने में भी मदद करती है।

**अजवाइन** : पेट में गैस, पेट खराब होने पर, एसिडिटी, पाचन तंत्र में किसी भी तरह की गड़बड़ी होने या बदहजमी होने पर इसके उपयोग से बहुत लाभ मिलता है। वायु, पेट के दर्द, पेट फूलना, कई प्रकार के अन्न को पचाने के लिए अत्यंत उपयोगी औषधि है। अजवाइन कृमियों को भी नष्ट करती है।





**त्रिफला** : बहड़, आंवला और हरद, इन तीनों के मिश्रण से बने चूर्ण को त्रिफला कहा जाता है। यह पेट की समस्याओं के लिए बहुत कारगर माना जाता है। शरीर में वात, पित्त और कफ का संतुलन बनाये रखता है। त्रिफला पाचन क्रिया को ठीक रखता है और भूख बढ़ाता है।

**सनाय** : सनाय कब्ज की समस्या को दूर करने वाली उपलब्ध जड़ी-बूटियों में से सबसे सुरक्षित है। आंत साफ करने में मदद करती है और अपच, लिवर और पेट के रोगों में जैसे कब्ज, मन्दाग्नि से राहत दिलाती है।

**पुदीना** : पुदीना विटामिन C का भी अच्छा स्रोत है। आयुर्वेद में पुदीने को वायुनाशक जड़ी-बूटी के रूप में देखा जाता है, जिसके उपयोग से सीने में जलन, मितली, पेट दर्द और आँतों की एंठन से आराम मिलता है। इसके सेवन से पाचन क्रिया दुरुस्त रहती है। अजीर्ण और पेट दर्द में यह अत्यंत उपयोगी है। पुदीना शरीर से टॉक्सिन और फ्री-रेडिकल्स निकालने में भी सहायक है।

**काला जीरा** : पेट और पाचन क्रिया के लिए जीरा बहुत फायदेमंद है। पेट दर्द, अपच, डायरिया, गैस और कब्ज जैसी समस्याओं से निजात दिलाता है। पेट के कीड़ों को भी नष्ट करता है।

**सफेद जीरा** : काला जीरा की तरह यह भी पित्तकारक, रुचिकारक और कफनाशक है। एसिडिटी के बाद होने वाले सीने की जलन और खट्टी डकारों से राहत दिलाता है।

**इंगित** : अजीर्ण, अपच, गैस, सीने की जलन

**पैक** : 200 ml

**डोज** : 10 ml (२ चम्मच) समान मात्रा में पानी के साथ दिन में तीन बार



## मोरल वरदान

### Herbal Health Drink

**ग्लायकोसाइड्स** : पौधों में कई प्रकार के ग्लायकोसाइड्स पाए जाते हैं। ग्लायकोसाइड्स और ग्लुकोसाइड्स दोनों शब्दों के एक अर्थ होने का भ्रम नहीं होना चाहिए। सभी ग्लायकोसाइड्स ग्लुकोसाइड्स नहीं होते पर सभी ग्लुकोसाइड्स निश्चित तौर पर ग्लायकोसाइड्स होते हैं।

ग्लाइकोसाइड वैसे मोलीक्यूल को कहा जाता है जिसमें शुगर ग्रुप (ग्लायकोन) नाइट्रोजन या आक्सीजन कण के द्वारा नॉन-शुगर ग्रुप (एग्लायकोन) से परिबद्ध रहता है। ग्लायकोसाइड के हायड्रोलाइसिस या जलीय विश्लेषण से ग्लूकोज बनता है। ग्लाइकोसाइड वनस्पति जगत में, अर्थात् पौधों की छालों, बीजों, फूलों तथा बीजों के छिलकों और फलों में पाए जाते हैं। Stevia rebaudiana की पत्तियों के एक्सट्रेक्ट में stevioside और rebaudioside नामक ग्लायकोसाइड्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। इनके इन्सुलिन और एंटीऑक्सीडेंट की तरह के प्रभाव डायबिटीज में काफी लाभप्रद हैं। स्टीविया के सार के जीरो-कैलोरी होने के कारण यह शारीरिक वजन कम करने (weight loss) में भी अधिक उपयोगी है।

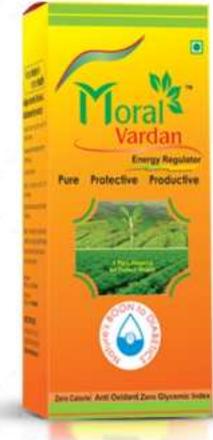
‘विटामिन-ग्लाइकोसाइड्स’ में ACE inhibitor और एंटीऑक्सीडेंट की क्षमता होने के कारण ये हृदय के साथ शरीर के अन्य अंगों के स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक हैं। ब्लड प्रेशर, डायबिटीज के नियंत्रण में भी इनका महत्वपूर्ण रोल होता है।

विटामिन और मिनरल ऐसे पोषक तत्व हैं, जो शरीर को सुचारू रूप से कार्य करने के लिए अन्य पोषक तत्वों के साथ जरूरी होते हैं।

### ‘मोरल वरदान’

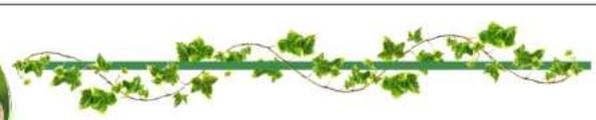
इसमें ग्लाइकोसाइड्स के अतिरिक्त कई विटामिन्स और मिनरल्स भी निहित हैं जैसे आयरन, विटामिन B5, विटामिन A, मैग्नेशियम, सेलेनियम, मैंगनीज, सल्फर, सोडियम, क्रोमियम, फोस्फोरस और पोटैशियम।

पेंतोथेनिक एसिड या विटामिन B5 की कमी के चलते हम कई किस्म की समस्याएं आ सकती हैं, जैसे थकान, मांसपेशियों की एंठन, जलन आदि। विटामिन B5 कणिकाओं के उत्पादन में मदद करता है, सेक्स हार्मोन्स के उत्पादन के लिए भी सहायक है। रक्त में ट्रायग्लिसराइड के स्तर को कम करता है, अच्छे कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बढ़ाता है और हानिकारक कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में विटामिन B5 सहायक है।



स्टीविया और मल्टीविटामिन प्लांट एक्सट्रेक्ट के 100 ml में निम्नलिखित घटक हैं:

Glycosides	1.13g
Iron	8.97mg
Sodium	40 mg
Potassium	70 mg
Manganese	230mg
Magnesium	7.49mg
Sulpher	290 mg
Phosphorous	60mg
Vitamin A	5.5 IU
Vitamin B	50.45mg
Selenium	1.97mg
Chromium	0.98mg



शोधों से ज्ञात हुआ है कि विटामिन A की कमी से पैनक्रियाज के बीटा-सेल्स की संख्या कम हो सकती हैं। बीटा-सेल्स की कमी या नष्ट होने से टाईप-1 डायबिटीज होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इन्सुलिन स्राव में अवरोध उत्पन्न होने से टाईप-2 डायबिटीज हो सकती है। यह विटामिन शरीर में अनेक अंगों को सामान्य रूप में बनाये रखने में मदद करता है जैसे कि त्वचा, बाल, नाखून, ग्रन्थि, दांत, मसूडा और हड्डी।

सल्फर में प्राकृतिक एंटीसेप्टिक गुण होता है जो स्किन इन्फेक्शन, मुहांसे, सर में रूसी, खुजली की समस्या को दूर करने में अत्यंत लाभ देता है। त्वचा से सारे विषैले पदार्थों को बाहर निकालने के लिए भी सल्फर आवश्यक है। बहुत कम खाद्य पदार्थों में सल्फर मौजूद होता है। ऑक्सीकरण क्रिया में भाग लेने वाले ग्लुटाथायॉन के निर्माण के साथ पाचक रस, एन्जाइम्स, हारमोंस के बनने के लिए भी यह आवश्यक है।

**मैंगनीज** : चयापचय (metabolic) एंजाइम्स का एक घटक है और यह स्वस्थ हड्डियों और कोलेजन के उत्पादन के लिए आवश्यक है ।

डायबिटीज में साधारणतया क्रोमियम का स्तर बहुत कम होता है। क्रोमियम इन्सुलिन के स्तर को कम कर सकता है और लिपिड प्रोफाइल में सुधार लाता है। क्रोमियम इन्सुलिन रिसेप्टर्स को बूस्ट करता है, और इन्सुलिन के प्रभाव को बढ़ा देता है। शरीर में ग्लूकोज को अवशोषित करने के लिए क्रोमियम महत्वपूर्ण है इसलिए डायबिटीज से पीड़ित लोगों के लिए यह आवश्यक है। यह सेल्स में ग्लूकोज को अवशोषित करने की प्रक्रिया को बढ़ाता है जो फैटी एसिड और कोलेस्ट्रॉल के संश्लेषण (synthesis) को उद्दीप्त (stimulate) करता है।

मैग्नेशियम उच्च रक्त-चाप, हृदय-रोग, डायबिटीज, शरीर में एंठन, अनिद्रा, गर्भावस्था, दमा, रजोनिवृत्ति (menopause) की अवस्था में सुधार के लिए एक आवश्यक तत्व है। मैग्नेशियम ब्लड शुगर को भी नियंत्रित करता है।

सेलेनियम शरीर में स्वाभाविक रूप से बनने वाले एन्टीऑक्सीडेंट के उत्पादन में सहायता करता है।

**‘मोरल वरदान’** में निहित सभी मिनरल्स और विटामिन्स जैसे सोडियम, पोटैशियम, सल्फर, फास्फोरस, मैग्नेशियम, रक्त और कोशिकाओं के आवश्यक अवयव हैं। डायबिटीज-ग्रसित लोगों में संतुलित भोजन की आवश्यकता अधिक होने कारण ये विटामिन्स और मिनरल्स अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसमें निहित एंटीऑक्सीडेंट, डायबिटिक्स के अलावा अन्य लोगों के स्वास्थ्य के लिए एक वरदान के समान हैं।

‘मोरल वरदान’ ऊर्जा नियामक है। इसकी विशेषताएं हैं – **जीरो कैलोरी** और **जीरो ग्लायसेमिक इंडेक्स**



**जीरो (0) कैलोरी** फूड में इतनी कम कैलोरी होती हैं कि उन्हें खाने में ही कैलोरीज बर्न हो जाती है। इनके उपयोग से वजन तो कम होता ही है, साथ ही स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

**Glycemic Index** यह किसी कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थ और उसका हमारे रक्त की शुगर पर होने वाले असर का मापक है जिससे हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि एक कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थ लेने पर हमारे शरीर में रक्त के अंदर शुगर या ग्लूकोज का स्तर कितना बढ़ जाता है।

डायबिटीज और मोटापे से ग्रसित व्यक्तियों को कम GI (Glycemic Index) वाले आहार लेने चाहिए जैसे पूरे गेहूं की रोटी, दलिया, मटर, फूलगोभी, फल, पालक, टमाटर, प्याज, गाजर, सत्तू, पास्ता, चुकंदर, किसमिस, बासमती चावल, मक्का, शकरकंद, तरबूज, पपीता, अंजीर आदि

इस प्रकार, 'मोरल वरदान' के नियमित उपयोग से ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल स्तर में नियंत्रण, रक्त का शुद्धिकरण, हीमोग्लोबिन की वृद्धि, कोशिकाओं का जीर्णोद्धार होता है। सर्दी, खांसी, कफ, सिर-दर्द, कब्जियत, एसिडिटी से भी आराम मिलता है।

**नोट :** मोरल वरदान औषधि नहीं है यह एक हर्बल हेल्थ ड्रिंक है अगर इसके उपयोग से ब्लड शुगर या ब्लड प्रेशर का स्तर सामान्य होने लगे तो एलोपैथिक औषधि के डोज को चिकित्सक के परामर्शनासार घटाया जाना चाहिए।

**पैक :** 100 ml

**डोज :**

1 चम्मच 2 कप के लिए (2 ml एक कप के लिए)



## मॉर्निंग फ्रेश



अत्यधिक शारीरिक वजन कम करने के लिए इसका नियमित रूप से उपयोग करें. पुरानी कब्ज, एसिडिटी, मूंह के छाले, अजीर्ण, खट्टी डकारें, गैस, आँखों में जलन दूर करने के लिए अतिलाभकारी है. नियमित सेवन से आंतें मजबूत होती हैं और सुबह से शाम तक चुस्ती फुर्ती बनी रहती है.

प्रत्येक 10 ग्राम में निम्नलिखित अवयवों के पाउडर हैं :

Swarn Patri Leaf ( Casia alongata)	4.6gm
Combi. of P.nigrum,P.longum,Zin.officinal (Fruit, Fruit, Resum)	1.2gm
Black salt	0.6gm
Sendhav lawan ( Rock salt )	0.6gm
Trivart(Root) Operculina turpetham	0.6gm
Yavani (Fruit) Prachispermum ammi	0.6gm
Laghu Haritaki (Pericarp) Terminalia chebula	0.6gm
Aragwadha (Fruit pulp) Cassia fistula	0.6gm
Shudh Tankan (Sodi biboras)	0.6gm

### ● स्वर्णपत्री

लिवर को उचित एन्जाइम्स स्रावित करने के लिए उत्प्रेरित करता है. अपच के कारण हुए चयापचय में असंतुलन को फिर से बहाल करने और रक्त को शुद्ध करने में सहायक है. आंत में पेशियों की लहरीली गति बढ़ाता है.

### ● P- nigrum, P-longum and zin-officinal (Fruit, Fruit, Resum) का संयुक्त प्रभाव

आंत में बैक्टीरियल संक्रमण नहीं होने देता है. कब्ज दूर करता है और पेट फूलने नहीं देता है.

### ● ब्लैक साल्ट या काला नमक

आयुर्वेदिक औषधि के रूप में इसका उपयोग अपच, कब्ज, तने हुए पेट, गैस, गैस न निकलने की शिकायत और हृदयदाह (heartburn) में अत्यंत उपयोगी है.

### ● सेंधा साल्ट या सेंधा नमक

सेंधा नमक रक्त विकार आदि के रोग जिसमें नमक खाने को मना हो उसमें भी इसका उपयोग किया जा सकता है। यह पित्त नाशक और आंखों के लिये हितकारी है। दस्त, कृमिजन्य रोगों और रद्दुमेटिज्म में काफी उपयोगी होता है। हड्डियों को मजबूत रखता है।

### ● लघु हरिटाकी

हरिटाकी में कड़े मल को मुलायम करने, पाचन तन्त्र को जीवंत करने, पेट साफ करने, और बाँधने की क्षमता होती है. पेट और आंत-सम्बन्धी बीमारियों, ट्यूमर्स, बबासीर, लिवर या प्लीहा के बढ़ जाने, पेट में कीड़े और बड़ी आंत के प्रदाह जैसे अवस्थाओं में हरिटाकी गुणकारी है.

### ● यतानी

आंत के प्रदाह, अपच, गैस दूर करने में सहायक है. आयुर्वेदिक औषधि के रूप में इसका प्रयोग श्वसन और पाचन तन्त्र के नलिकाओं में आए संकरापन को दूर करने के लिए किया जाता है.

### ● अरगवधा

पेट को साफ करने, कब्ज दूर करने, अपच, पेट की बीमारियों, बुखार में यह लाभकारी है.

### ● शुद्ध टकन

यह एक उत्तम स्तम्भक ( बाँधने वाला) और रोगानुरोधक (एंटीसेप्टिक) है.

खुराक : 3-6 ग्राम ( | चाय का चम्मच ) गुनगुने पानी में, रात्रि सोने से पहले या चिकित्सक के परामर्शानुसार.

पैक : 100 ग्राम



## मोरल कोलोस्ट्रम

### माँ का पहला आशीर्वाद

प्रसव के बाद करीब 24 घंटे के अंदर सभी स्तनपायी मादाओं में स्तन से दुग्ध स्रावित होने के पहले पीले रंग का दूग्धीय गाढ़ा तरल पदार्थ स्रावित होता है, जिसे कोलोस्ट्रम कहते हैं।

आनुवंशिक रूप से गाय को मानव के 80% समरूप माना गया है। भारतीय पुराण के अनुसार गाय के कोलोस्ट्रम को औषधियों का ईश्वर माना गया है। यह एक 'सुपर फूड' है। इसमें कई प्रकार के एमिनो एसिड, एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन्स, खनिज, एंटीबॉडीज और प्रतिरक्षक कारक मौजूद होते हैं। कोलोस्ट्रम में एंटीबॉडीज का स्तर गाय के नियमित दूध में मौजूद एंटीबॉडीज के स्तर से 100 गुणा अधिक होता है।

#### मोरल कोलोस्ट्रम के लाभ :

- एंटीबॉडीज का स्तर बहुत अधिक— जीवाणुओं के द्वारा संक्रमण (infection) या एलर्जी होने की क्षीण सम्भावना
- फॉस्फेटीडाइल्सेराइन का अधिकतम संकेंद्रण : वृद्धावस्था में याददाश्त बढ़ाने में बहुत लाभकारी
- ग्लुटाथायोन और कई पोषक-तत्व : एंटीऑक्सीडेंट, विषमुक्त लीवर, बढ़ती उम्र का प्रभाव कम होना
- पर्याप्त प्रोटीन – मसल्स-बिल्डिंग
- ग्लायकोप्रोटीन्स : एच. पाइलरी बैक्टेरिया (जिसके कारण पेट में अल्सर होता है) को साथ (attach) नहीं होने देना
- लेक्टोफेरीन, लेक्टलब्यूमिन्स, सायटोकाइन्स : जीवाणु-संक्रमण विरोधी, कैंसर से बचाव।
- ट्यूमर-नेक्रोसिस फैक्टर-एल्फा (TNF-A) और इन्टरल्यूकिन-1ra : एंटीईनफ्लेमेट्री (सूजन, दर्द से राहत)।
- वृद्धि कारक तत्व (growth factor)- प्रोटीन संरचना, मसल्स-बिल्डिंग, मसल्स, हड्डी, कार्टिलेज, त्वचा, कोलाजेन, स्नायु-कोशिकाओं, RNA और DNA के पुनर्जनन (regeneration) और मरम्मत की प्रक्रिया को उत्प्रेरित करना। हड्डी के घनत्व का बढ़ना।
- शरीर की प्रबल प्रतिरोधक क्षमता,
- स्वस्थ पाचन तन्त्र, डायरिया में लाभप्रद,
- झुर्रियां, झाइयां दूर करने में सहायक
- मधुमेह, हृदय-रोगों से बचाव
- हड्डियों और मांस-पेशियों में बहुत मजबूती ,
- स्नायु रोगों से बचाव,
- आँखों के विटामिन की कमी से होने वाले रोगों की कम सम्भावना
- रक्त नलिकाओं में कोलेस्ट्रॉल के जमाव में कमी



पैक : 60 कैप्सूल



खुराक :

1 या 2 कैप्सूल प्रतिदिन 1 बार

स्वास्थ्य क्रांति की ओर...

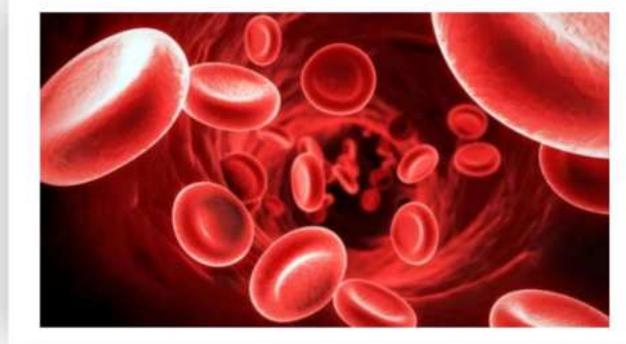
## हीमकैल डी



रक्त में हीमोग्लोबीन की कमी को एनीमिया कहा जाता है। हीमोग्लोबीन खून को उसका लाल रंग भी देता है और शरीर में ऑक्सीजन ले जाने का कार्य भी करता है। हमारे देश में 50% से अधिक महिलायें और तीन चौथाई बच्चे एनीमिया से ग्रसित होते हैं। 20 से 80% गर्भवती महिलायें, 56% किशोरावस्था, 30% लड़के और 70% से अधिक बच्चे एनीमिया से पीड़ित होते हैं। इस प्रकार की एनीमिया पौष्टिक भोजन की कमी के कारण होती है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में आयरन की कमी ज्यादा देखी जाती है।

गर्भावस्था, स्तनपान कराने वाली महिलाएं, माहवारी, डिलीवरी के बाद, किशोरावस्था, बवासीर, मलेरिया, अल्सर, टी.बी., अधिक रक्तस्राव जैसी अवस्थाओं में एनीमिया की शिकायत आमतौर पर होती है।

आयरन की कमी से होने वाली एनीमिया को IDA (आयरन डिफीसिएन्सी एनीमिया) कहते हैं। ऐसी स्थिति में चिकित्सक आयरन टॉनिक लेने की सलाह देते हैं। हीमोग्लोबीन का सामान्य स्तर विभिन्न उम्र के लोगों में निम्नलिखित रूप से होना चाहिए :



वयस्क पुरुष	14-18 gm/dl
वयस्क महिला	12-16 gm/dl
अधेड़ पुरुष	12.4-14.9 gm/dl
अधेड़ महिला	11.7-13.8 gm/dl
बच्चे	11- 13.0 gm/dl

थकान, त्वचा में पीलापन, सिर-दर्द, आँखों के आगे अँधेरा छाना, तेज धडकन, अनियमित माहवारी, सांस का फूलना, बालों का झड़ना, घबराहट, नाखूनों में पीलापन, हाथ-पाँव का ठंडा होना आदि रक्त में आयरन की कमी से होने वाले लक्षण हैं।

आँवला में आयरन और एंटीऑक्सीडेंट की प्रचुर मात्रा के अतिरिक्त विटामिन C, विटामिन A, B-काम्प्लेक्स, पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर और डाइयूरेटिक एसिड पाए जाते हैं।



शतावर भी आयरन और कैल्शियम का अच्छा स्रोत है। शतावर में प्रचुर मात्रा में आहार— फायबर, विटामिन A, K, C, E, B1, B2, B3, B5, B6 आयरन, कैल्शियम, पोटैशियम, सेलेनियम, मैग्नीशियम, मैंगनीज, जिंक और फोस्फोरस होते हैं। शतावर अद्भुत है क्योंकि इसमें बहुत ही कम सोडियम और जीरो कोलेस्ट्रॉल है।

**खूखी अंजीर :** इसमें विटामिन C, विटामिन A, B- कॉम्प्लेक्स, पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर और डाइयूरिटिक एसिड पाए जाते हैं। इसमें 28% से अधिक फाइबर होता है जो ग्लूकोज और कोलेस्ट्रॉल के बढ़े स्तर को नियंत्रित करता है। इसमें आयरन और कैल्शियम दोनों होने के कारण एनीमिया दूर करने में यह सहायक है। शरीर में कैल्शियम की प्रतिदिन की आवश्यकता का 3% अंजीर पूरा करता है। इसके उपयोग से हड्डियां मजबूत होती हैं।

**मुनक्का :** इसमें मौजूद आयरन और साथ ही B-कॉम्प्लेक्स विटामिन एनीमिया के इलाज में मदद करते हैं। कैल्शियम का अच्छा स्रोत होने के कारण यह हड्डियों और दातों को मजबूत बनाता है। इसमें प्रचुर मात्रा में निहित बोरान नामक माइक्रोन्यूट्रीएंट कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ाने और इसे हड्डियों तक पहुंचाने में सहायता करता है।

**सिंघाड़ा :** यह एक प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट है और यह प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, फोस्फोरस, आयोडीन, विटामिन B, C, का उत्तम स्रोत है। इसका प्रयोग डायरिया, डीसेंट्री, थायरॉइड की समस्या, ब्रॉकाइटिस, सूजन और कमजोरी दूर करने के लिए किया जाता है।

**अतिबाला :** यह शरीर को बल और मजबूती प्रदान करती है।

**चना दाल :** यह जिंक, फोलेट, कैल्शियम और प्रोटीन का स्रोत है और इसके उपयोग से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है।

**शेब :** सेब में विटामिन सी और बीटा कैरोटीन पर्याप्त मात्रा में मिलता है जिसके कारण इसमें एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट के गुण समाहित हैं।

**पालक :** यह भी विटामिन A और आयरन का अच्छा स्रोत है।

**पैक :** 200 ml

डोज : चिकित्सक के परामर्शनासार



## आईटो



पुराने समय में लोगों के आंखों की रोशनी केवल बढ़ती उम्र में कम होती थी लेकिन लाइफस्टाइल बदलने के कारण अब बच्चों की आंखों की रोशनी भी कम होने लगी है ।

दिन भर लगातार कंप्यूटर और लैपटॉप पर समय बिताने के कारण भी आंखों को काफी नुकसान पहुंचता है । इस नुकसान की पूर्ति करने के लिए आहार और आंखों के लिए जरूरी चीजों पर ध्यान देना चाहिए । आंखों को स्वस्थ रखने के लिए कई प्रकार के एंटीऑक्सिडेंट्स की आवश्यकता है – ल्यूटिन, विटामिन A, C, E, बीटा कैरोटीन, ओमेगा – 3 फैटी एसिड, जस्ता, सेलेनियम, जिंक ।



### Eyetto Eye Drops में निहित अवयव :

काली मिर्च (Piper nigrum – 5% w/v in 10ml), मुलैठी या यस्तिमधु (Glycerriza glabra & 10% w/v), पुनर्नवा (Boehrvia diffusa 10% W/V), भृंगराज (Eclipta alba Husk 10% W/V), नीम (Azadirachta indica 10% w/v), हरद या हरितकी (Terminalia chebula 10% w/v), विभितकी या बहेड़ा (Terminalia bellerica 5% w/v), आमालाकि (Embllica officinalis 10% w/v), तुलसी (Ocimum sanctum 5% w/v), चन्दन (Santalum album 5% w/v), नीम्बू (Lemon acidum 2% w/v), फिटकिरी, सुहागा या टंकण भस्म (Borax (Boric acid) 2% w/v), शहद (Honey 3% w/v)

आईटो आई ड्रॉप के लाभ

1. नेत्र विकारों को दूर करने में लाभप्रद
2. जीवाणु संक्रमण के विरुद्ध कार्य ।
3. कोर्निया स्वस्थ रखने में सहायक ।
4. इसके प्रयोग से मोतियाबिंद विकसित होने की क्षीण सम्भावना ।
5. दृष्टि स्पष्ट रखने में लाभप्रद ।

पैक : 10 ML

डोज :  
चिकित्सक के परामर्शनासार



## एल्कलाइन वाटर बोतल

**जल ही जीवन है** जल का महत्व हमारे शरीर की कोशिकाओं, अंगों और सिस्टम्स को सुचारु और स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है. नियमित रूप से आवश्यक मात्रा में प्रतिदिन पानी पीने से शरीर हायड्रेटेड रहता है.

जल हायड्रोजन और आक्सीजन का मेल होता है. पानी में हायड्रोजन आयन्स के स्तर को चम् के रूप में मापा जाता है. पानी का चम् स्तर 0 से 14 हो सकता है.

**pH 7** वाले पानी को न्यूट्रल माना जाता है. अगर यह **pH** स्केल पर 7 से कम है तो पानी एसिडिक (अम्लीय) है और अगर यह 7 से अधिक है तो पानी एल्केलाइन (क्षारीय) होता है. बोतलबंद एल्केलाइन जल में **pH** स्केल 7 से उपर होता है.

### एल्केलाइन जल क्यों ?

आजकल की जीवन-शैली में खान-पान के तरीके तीव्र गति से बदलते जा रहे हैं. एसिडिक भोजन का उपयोग अधिक होने लगा है जैसेरू मीट, मछली, कुछ डेयरी प्रोडक्ट्स, चीनी, चाट-मसाला, मसालेदार भोजन-पदार्थ, साफ्ट और हार्ड ड्रिंक्स आदि. अम्लीय या एसिडिक जल के निरंतर उपयोग से रक्त और कोशिकाओं में अम्ल का स्तर अधिक बढ़ सकता है जिससे कई स्वास्थ्य-संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं जैसे मेटाबोलिज्म की कमी, एनर्जी-लॉस, बढ़ती उम्र के प्रभाव, ओस्तीओपोरोसिस (हड्डियों में क्षरण), पाचन में कमी आदि.

### एल्केलाइन वाटर पीने के लाभ :

- ♣ एल्केलाइन-बॉल्स की सहायता से पानी से क्लोरिन, गंध, हेवी मेटल्स दूर कर शुद्ध करना
- ♣ सामान्य जल को प्राकृतिक मिनरलयुक्त एल्केलाइन जल में परिवर्तित करना
- ♣ शरीर और रक्त-संचार में एसिड-स्तर में कमी
- ♣ एसिड-एल्केलाइन समस्थिति (होमीओस्टोसिस) बनाए रखना,
- ♣ एल्केलाइन मिनरल्सकृस्वस्थ रहने के लिए महत्वपूर्ण
- ♣ चयापचय (मेटाबोलिज्म) में सुधार
- ♣ एन्टीआक्सीडेंट और एन्टी-एजिंग प्रभाव
- ♣ लिवर-टोनिक, भोजन का अधिक अवशोषण, सुचारु पाचन और वजन में कमी
- ♣ अम्लीय बेकार और विषाक्त तत्वों को शरीर से बाहर करना
- ♣ शरीर को हायड्रेट रखना
- ♣ स्वस्थ त्वचा
- ♣ हड्डियों के क्षरण में कमी
- ♣ इम्युन सिस्टम का अधिक चार्ज होना
- ♣ मसल्स और हड्डियों के जोड़ों की मजबूती

( किडनी-रोग से ग्रस्त व्यक्तियों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए )



पैक : 600ml

## डायोफिट



मधुमेह (डायबिटीज) के रोगियों की संख्या दुनिया भर में तेजी से बढ़ रही है। यह चिरकालिक, मेटाबॉलिक विकार है जिससे पूरे विश्व की लगभग 5% जनसंख्या प्रभावित है। W.H.O. के अनुसार साल 2025 तक डायबिटीज से पीड़ित लोगों की संख्या 300 मिलियन हो जाने की संभावना है। इस रोग से पीड़ित व्यक्तियों में इन्सुलिन के पर्याप्त स्राव के अभाव या इसके कार्य में कमी के कारण कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और फैट के चयापचय (metabolism) अनियंत्रित हो जाते हैं। मधुमेह (डायबिटीज) एक ऐसी बीमारी है जिसमें रोगी के खून में ग्लूकोज की मात्रा (blood sugar level) आवश्यकता से अधिक हो जाती है। ऐसा दो कारण से हो सकता है : या तो शरीर पर्याप्त मात्रा में इन्सुलिन नहीं स्रावित कर पा रहा है या फिर कोशिकाएं स्रावित हो रही इन्सुलिन पर प्रतिक्रिया नहीं कर रही हैं।

इंसुलिन एक हारमोन है जो शरीर में कार्बोहाइड्रेट और फैट के चयापचय (metabolism) को कण्ट्रोल करता है। मेटाबॉलिज्म का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा शरीर खाने को पचाता है ताकि शरीर को उर्जा मिल सके और उसकी वृद्धि हो सके।

सामान्य स्वस्थ व्यक्ति में भोजन से पहले रक्त में ग्लूकोज का स्तर 70 से 100 mg/dl रहता है। खाने के बाद यह स्तर 120–140 mg/dl हो जाता है और फिर धीरे-धीरे कम होता चला जाता है। पर मधुमेह हो जाने पर यह स्तर सामान्य नहीं हो पाता और कभी-कभी तो में 500mg/dl से भी उपर चला जाता है और रोगी डायबिटिक कोमा में जा सकता है।

**Types 1 diabetes :** यह तब होता है जब शरीर इंसुलिन बनाना बंद कर देता है। ऐसे में मरीज को बाहर से इंसुलिन देनी पड़ता है।

**Types 2 diabetes :** यह तब होता है जब कोशिकाएं स्रावित हो रही इंसुलिन पर प्रतिक्रिया नहीं करतीं।

**Gestational diabetes :** ऐसी महिलाओं में होता है जो गर्भवती हों और उन्हें पहले कभी डायबिटीज नहीं हुआ हो। ऐसा गर्भावस्था के दौरान खून में ग्लूकोज की मात्रा (blood sugar level) आवश्यकता से अधिक हो जाने के कारण होता है।

**डायोफिट** नैनो फायटोमोलीक्युल्स टेक्नोलोजी से निर्मित एक अत्यंत प्रभावशाली हर्बल सप्लीमेन्ट है जो शुगर के स्तर को अत्यंत कम समय में (48 घंटे से 7 दिनों के अन्दर) व्यवस्थित करती है।



## Eugenia Jambolana (जाम्बुल)

जामुन या जाम्बुल एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक हर्ब है। इसमें अत्यधिक मात्रा में मधुमेहरोधी तत्व शामिल होने के कारण डायबिटीज के रोगियों के लिए यह अमृत समान है। डायबिटीज को शीघ्र नियंत्रण करने में जामुन अति सक्षम है। जामुन डायबिटीज में एक प्रकार से प्राकृतिक इंसुलिन का कार्य करता है। जामुन में प्रोटीन, कैरोटीन, आयरन, फोलिक एसिड, पोटैशियम, फास्फोरस, फाइबर, आयरन, कैल्शियम, सोडियम, मैग्नीशियम, विटामिन B, विटामिन C, ग्लूकोज और फ्रक्टोज तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं, जो डायबिटीज के मरीज के लिए काफी फायदेमंद और प्राकृतिक रामबाण है। इसमें निहित ग्लायकोसाइड्स 'जेम्बोलाइन' स्टार्च को शुगर में बदलने की प्रक्रिया पर रोक लगाता है और चीनी को एनर्जी में परिवर्तित करके डायबिटीज के प्रभाव को खत्म करता है। इस प्रकार, यह शुगर के स्तर को नियंत्रित रखता है। इसके अतिरिक्त यह कोलेस्ट्रॉल कम करता है और लिवर को भी सुरक्षित रखता है।

## Gymnema Sylvestries (गुरमाड़)

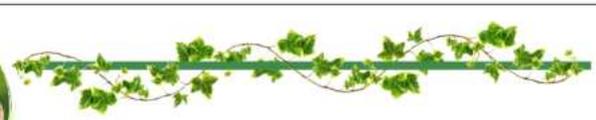
गुरमाड़ का अर्थ ही है चीनी को मारना। यह जड़ी-बूटी गुड़ अथवा मीठेपन को नष्ट करती है। इसका सेवन रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने और शरीर में इन्सुलिन बढ़ाने में सहायक होता है। यह शरीर में मेटाबॉलिज्म या चयापचय की क्रिया, शारीरिक वजन को संतुलित रखने और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को भी नियंत्रण में रखने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

गुरमाड़ पैंक्रीयाज को उत्तेजित (stimulate) करता है, बीटा-सेल्स को नई शक्ति प्रदान करता है जिसके कारण इन्सुलिन का स्राव बढ़ जाता है। गुरमाड़ आँत के द्वारा होने वाले ग्लूकोज के अवशोषण को रोकने तथा ग्लूकोज के उपयोग को भी बढ़ाने में भी कारगर है।



डायोफिट के प्रत्येक 500 mg कैप्सूल में है :

Eugenia jambolana	75mg
Gymnema sylvestries	100mg
Andrographis paniculata	50mg
Aegle mameelos	25mg
Azadirachta indica	25mg
Cinnamomum tamala	75mg
Spheranthus indicus	50mg
Momodica charantia	50mg
Piper nigrum	50mg



## Andrographis paniculata ( कालमेघ )

इसमें स्थित सक्रिय कम्पाउण्ड 'एनडोग्राफॉलाइड' ब्लड ग्लूकोज, एल.डी.एल. और ट्रायग्लिसराइड के बढ़े स्तर को कम करने में अत्यंत सक्षम है। शारीरिक वजन में कोई वृद्धि भी नहीं होती है। 'Metformin' का भी प्रभाव इसी प्रकार का होता है ।

## Aegle Marmelos ( बेल )

पेन्क्रियाज के बचे बीटा-सेल्स के द्वारा इन्सुलिन के रिलीज को बढ़ा देता है और ब्लड ग्लूकोज के बढ़े स्तर को सामान्य करता है ।

डायबिटीज के इलाज में एन्टीऑक्सीडेंट का बहुत महत्व है। बेल में शक्तिशाली एन्टीऑक्सीडेंट के सभी गुण समाहित हैं जिससे यह ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस कम करता है और ब्लड शुगर के स्तर को सामान्य करता है।

## Azadirachta Indica ( नीम )

डायबेटिक मेलिटस 1 और 2 दोनों में यह अत्यधिक लाभदायक है। कम समय में ब्लड ग्लूकोज स्तर को नियंत्रित कर सामान्य करता है और ग्लूकोज टॉलरेंस बढ़ाने में भी सक्षम है।

## Cinnamomum tamala ( तेजपत्ता )

डायबिटीज से ग्रसित व्यक्ति के लिए तेजपत्ता अचूक प्राकृतिक औषधि है। तेजपत्ता एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर होता है जो काफी हद तक डायबिटीज कंट्रोल करता है। यह शरीर के इन्सुलिन प्रक्रिया को संतुलित करने में काफी सहायक है। यह इन्सुलिन के स्राव को भी बढ़ाता है और नर्वस सिस्टम को डायबिटीज के दुष्प्रभाव से भी बचाता है ।





## Spheranthus Indicus (मुंडी)

मुंडी डायबिटीज के रोकथाम के साथ ही भूख न लगने, Hapatosplenic वृद्धि, जोडिस, आंतरिक बवासीर और आंतों में कीड़े आदि जैसी शिकायतों में भी अत्यंत लाभप्रद है। इसका असर ग्लिबेनक्लेमाइड जैसा ही है, डायबिटीज के रोगी में ऑक्सीजन फ्री-रेडिकल्स अधिकतम संख्या में बनती है। मुंडी के एन्टीऑक्सीडेंट और एन्टीडायबिटीज गुणों के सम्मिलित होने के कारण यह डायबिटीज में अत्यंत प्रभावी है।

## Memodica charantia (करेला)

मधुमेह के रोगी के लिए करेला रामबाण से कम नहीं है। इसमें निहित घटक 'इन्सुलिन पोलीपेप्टाइड' रक्त में शुगर के स्तर को नियंत्रण में रखने के लिए अत्यंत प्रभावी है। इसका सार इज्लेट बीटा सेल्स (islet cell) और cells के कार्य को संरक्षित रखता है और सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने के साथ-साथ जेनोबायोटिक मेटाबॉलिज्म को भी व्यवस्थित करता है। करेला अग्नाशय (pancreas) को उत्तेजित कर इन्सुलिन के स्राव को बढ़ाता है। करेले में इन्सुलिन पर्याप्त मात्रा में होती है। यह इन्सुलिन मूत्र एवं रक्त दोनों ही की शर्करा को नियंत्रित रखने में समर्थ है। इसके उपयोग से रक्त की शुद्धि भी होती है।

## Piper nigrum (काली मिर्च)

इसका सक्रिय तत्व Bioperine है। इसके एंटीडायबिटिक और एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव हैं। यह ग्लूकोज, ट्रायग्लिसराईड और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को प्रभावी रूप से कम कर देता है। काली मिर्च में आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम, जिंक, क्रोमियम, पिपरिन, विटामिन C, A, D और एंटीऑक्सीडेंट सहित कई पोषक तत्व पाए जाते हैं।



डोज: 1 कैप्सूल सुबह और 1 कैप्सूल शाम भोजन के बाद/या  
चिकित्सक के परामर्शनासार पैक : 60 कैप्सूल

# सनसनी



प्रीमैच्योर इजैकुलेशन या शीघ्रपतन पुरुषों का सबसे कॉमन डिस्ऑर्डर है । सेक्स के लिए तैयार होते वक्त, फोरप्ले के दौरान या पेनिट्रेशन के तुरंत बाद अगर सीमेन बाहर आ जाता है, तो इसका मतलब प्रीमैच्योर इजैकुलेशन है । ऐसी हालत में पुरुष अपनी महिला पार्टनर को पूरी तरह संतुष्ट किए बिना ही निवृत हो जाता है । यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें पुरुष का अपने इजैकुलेशन पर कोई अधिकार नहीं होता ।

आदर्श स्थिति यह होती है कि जब पुरुष की इच्छा हो, तब वह इजैकुलेट करे, लेकिन प्रीमैच्योर इजैकुलेशन की स्थिति में ऐसा नहीं होता ।

## Cloves (Syzygium aromaticum)

Testosterone Booster, Aphrodisiac (Aphrodisiac effect of 50% ethanolic extract), Antioxidant King

1. लौंग पुरुषों और स्त्रियों दोनों में एक कामोत्तेजक के रूप में काम करता है ।
2. यह मांसपेशियों के तनाव को कम करता है, शरीर को तनाव मुक्त करता है ।
3. लौंग में पाया एक खास तरह का स्वाद और गंध इसमें होने वाले एक तत्व युजेनॉल के कारण होता है । इसकी गंध हार्मोन को नियंत्रित करने वाली पिट्यूटरी ग्रंथि को उत्तेजित करती है और यौन इच्छाओं को जगाती है ।
4. यह testosterone बढ़ाता है । शरीर में गर्मी लाता है और एनर्जी के स्तर को बढ़ाता है । निश्चित तौर पर ED में बहुत ही लाभदायक है ।
5. इसमें phenolic compound का स्तर अत्यधिक होता है । Flavour and Fragrance Journal ने लौंग को Best Natural एंटीऑक्सीडेंट की रैंकिंग दी है ।
6. Sexual neurasthenia, कमजोरी और थकान दूर करने में सक्षम है ।
7. कामेच्छा में वृद्धि होती है ।
8. अधिकतम संस्पर्श (Intromission) में बढ़ोत्तरी करता है ।





## **Tribulus Terrestris** गोखरू

शक्तिवर्धक, वीर्यवर्धक, कामोद्दीपक, मूत्रवर्धक और मुत्रशोधक

इसके मुख्य घटक हैं : पोटैसियम नाईट्रेट, स्टेरोल्स, सपोजेनिंस, पैरोकेटेनो रिंग, गीतोजेनिंस और हेकोजेनिंस

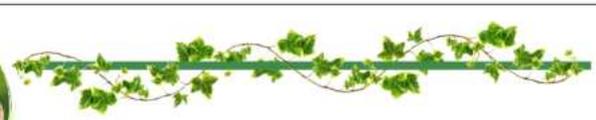
1. मूत्र त्याग के समय होने वाली जलन को दूर करने वाला, पथरी को नष्ट करने वाला, जलन को शान्त करने वाला, प्रमेह (वीर्य विकार), श्वास, खांसी, हृदय रोग, बवासीर तथा त्रिदोष (वात, कफ और पित्त) को नष्ट करने वाला होता है ।
2. पिट्यूटरी ग्रंथि ग्लैंड LH (ल्यूटीनाइजिंग हार्मोन) बनाती है । गोखरू के द्वारा LH में 70% वृद्धि लाने के कारण 45% अधिक टेस्टोस्टेरोन (सामान्य से अधिक नहीं) का निर्माण होता है जिससे कामेच्छा बढ़ जाती है, शिश्न के बेस में फोर्स लाता है, मसल्स में ढीलापन लाता है जिससे रक्त संचार अधिक हो जाता है और ED की शिकायत दूर होती है, शुक्राणुओं में गतिशीलता भी आती है ।
3. धातु विकारों को दूर कर कामशक्ति बढ़ाता है ।
4. धातुस्त्राव, प्रमेह, स्वप्नदोष, पुरुष जननेंद्रिय सम्बन्धी और यौन विकारों में बहुत प्रभावकारी है ।
5. इसके प्रयोग से सेक्स कमजोरी दूर होती है, वीर्य गाढ़ा होता है और कामोत्तेजना में वृद्धि होती है ।
6. स्ट्रेस दूर करने और मनोदशा में स्थिरता लाने में भी सहायक

## **Withania somnifera** (अश्वगन्धा)

सही मात्रा में सेवन किया जाए, तो

1. यह कामुकता को बढ़ाती है और यौवन प्रदान करती है ।
2. शरीर को ऊर्जा और क्षमता प्रदान करती है जिससे व्यक्ति में यौन क्षमता का विकास होता है । शरीर में आलस्यी नहीं रहता है और सेक्स करते समय थकान भी नहीं आती है ।
3. प्रजनन में इजाफा होता है । इसके नियमित उपयोग से शुक्राणुओं की संख्या में वृद्धि होती है और वीर्य भी अच्छी मात्रा में बनता है । जवानी को बरकरार रखने की काफी शक्ति होती है । यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है ।
4. तनाव और अवसाद से मुक्त करने में सहायक





## **OCIMUM sanctum (तुलसी)**

मुख्य घटक

Bornyl acetate, Cadinene, Camphene, Camphor, Carvacrol, B-Caryophellene, Eugenol, Methyl ether, Humelene, Methyl chavicol, Limonene etc.

1. कामेच्छा और यौन शक्ति की क्षमता में वृद्धि होती है ।
2. तुलसी में जो आरजीनीन नामक एमिनो एसिड होता है वह पुरुषों में शुक्राणुओं की जीवनशक्ति को बढ़ाने और बांझपन को ठीक करने में मदद करती है ।
3. जिन लोगों में शीघ्र पतन की समस्या होती है तुलसी उसके लिए भी कारगर साबित होती है ।
4. अवसाद, अनिद्रा (insomnia) आदि रोगों से राहत दिलाने में मदद करती है ।

## **Berberis asiatica (दारु हल्दी या कस्तुरीपुष्प)**

1. इसमें पाया जानेवाला तिक्त क्षाराभ (बर्बरिन) बड़ा ही गुणकारी होता है ।
2. इसे एक उत्तम एंटीऑक्सीडेंट माना जाता है
3. दारु हल्दी का प्रयोग बुखार, माइक्रोबियल संक्रमण, हेपटोटोक्सिसिटी, कैंसर, मधुमेह, दस्त, अर्श, ळलदमबवसवहपबंस विकारों, चर्म रोग, घाव जैसी स्थितियों और लक्षणों के उपचार, नियंत्रण, रोकथाम और सुधार के लिए किया जाता है

## **Celastrus Paniculatus (ज्योतिष्मती, मालकांगनी)**

1. कामोत्तेजक और पुरुष जननेंद्रिय में कड़ापन लाने वाला
2. डोपामिन के कारण शारीरिक आनन्द और मानसिक एनर्जी का अनुभव
3. सेरोटोनिन के कारण संतुष्टि और तृप्ति का एहसास
4. नोराड्रेनालिन के कारण मानसिक दबाव में भी त्वरित निर्णय लेना संभव
5. शक्तिशाली ब्रेन और लिवर टॉनिक – आश्चर्यजनक रूप से दिमाग तेज करती है और यादाश्त बढ़ाती है
6. नशे की लत को दूर करती है

डोज : सहाय के 3 घंटे पहले  
१ या २ कैल्सूल दूध या पानी के साथ (सप्ताह में दो बार)



## वर्जिन अगेन

उम्र बढ़ने और समय बीतने के साथ-साथ स्त्रीयों के अन्तरंग क्षणों में यौन-क्रिया कलापों में कम होती दिलचस्पी फिर से लौटाने के लिए, तरुणाई का फिर एहसास दिलाने के लिए कल का अद्वितीय उत्पाद आज ही है 'वर्जिन एगेन'।

पुरुष अपनी स्त्री को हर उम्र में आकर्षक और तरुण देखना पसंद करते हैं। अधिकांश पुरुष स्त्री के सन्निध्य के अन्तरंग क्षणों में संकुचित या टाइट योनि की चाह रखते हैं, परन्तु उम्र बढ़ने की प्रक्रिया, बारंबार यौन-क्रीड़ा, संपूर्ण स्वास्थ्य, प्रसव आदि के कारण योनि मार्ग ढीली और चौड़ी हो जाती है और स्त्री-पुरुष दोनों यौन-समागम के आनंद से वंचित रहते हैं किसी भी उम्र की स्त्री हो, वर्जिन एगेन के उपयोग से योनि मार्ग संकुचित या संकडी हो जाती है और अन्तरंग क्षणों के दौरान योनि की पकड़ प्रबल होकर रतिक्रमण को कामोत्तेजक बना देती है और फिर वे जैसे अपने तरुणावस्था में लौट आने का एहसास करती हैं।



### वर्जिन अगेन से लाभ

- योनि और उसके आस-पास की मॉस-पेशियों को संकुचित कर टाइट करती हैं।
- स्त्री की कामेच्छा बढ़ाती है।
- योनि में चिकनाई लाकर सूखापन दूर करती है।
- योनि के प्राकृतिक लचीलापन को फिर से बरकरार करने में सहायता करती है।
- रतिक्रिया के दौरान कामोत्तेजना की तीव्रता, आवृत्ति को बढ़ाती है
- रजोनिवृत्ति प्रक्रिया को धीमा करती है।

### (प्रति 10 एम.एल में प्रयुक्त)

<b>Ficus bengalensis</b> ( बड़ )	<b>100 mg</b>
<b>Ficus religious linn.</b> ( पीपल )	<b>100 mg</b>
<b>Ficus Glomerata Roxb.</b> ( गूलर )	<b>100 mg</b>
<b>Querous infectoria</b> ( माजूफल )	<b>500 mg</b>
<b>Myristica Officinalis</b> ( जायफल )	<b>50 mg</b>
<b>Alum</b> ( सुन्ना )	<b>50 mg</b>
<b>Glycerin</b> ( ग्लिसरीन )	<b>QS</b>
<b>White Rose Essence</b> ( वाइट रोज एसेन्स )	<b>QS</b>
<b>Sodium Benzoate</b> (सोडियम बेन्जोएट )	<b>6 mg</b>

पैक:

1mlx10bottles



उपयोग विधि: संभोग क्रिया के 20-30 मिनट पहले 'वर्जिन एगेन' के 5-10 बूंदों को ऊँगली के सिरे पर लगाकर योनि के अन्दर कि दिवारों के 3/4 भाग पर समान रूप से लगाये।

## रति पावर

### खुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए

आधुनिक जीवन शैली का जबर्दस्त असर स्त्री पुरुष की कामलिप्सा के ऊपर पड़ता है। चारों ओर लोग अपने काम, रोजगार, नौकरी में अत्यधिक व्यस्त रहने लगे हैं और अधिक धन कमाने को लेकर हर समय चिंतित रहते हैं। उनकी मनोदशा रति-क्रिया के प्रति नकारात्मक होने लगती है। रतिक्रिया में कम दिलचस्पी की इस प्रवृत्ति के लिए लोगों का आधुनिक टैक्नॉलोजी के प्रति झुकाव भी एक महत्वपूर्ण कारण है। मोबाइल, स्मार्ट फोन, टैबलेट का शयन-कक्ष में भी उपयोग, लैपटॉप, टिवटर, फेसबुक आदि का अधिकाधिक इस्तेमाल, पारिवारिक समस्याएँ और तनाव, शराब, सिगरेट, ड्रग्स, जंक फूड का अत्यधिक सेवन, मोटापा और शारीरिक गतिविधियों में कमी आदि के कारण भी यौनेच्छा में कमी चिंता का विषय है। सामान्यतः, स्वस्थ शरीर और सुंदर स्वास्थ्य ही रमनीय यौन गतिविधि और रतिक्रिया में सुखानुभूति की आधारशिला है। स्त्री और पुरुष अपनी सेक्स ड्राइव, आनंद और कामेच्छा बढ़ाने के लिए दवा की गोलियों का उपयोग करते हैं। स्त्रियों की तुलना में पुरुषों में सेक्स ड्राइव अधिक तीव्र होती है। सामान्यतः स्त्रियों को मामोन्नाद या ओर्गेज्म की अवस्था पहुंचने में करीब 90 मिनट लगता है। पुरुषों को आम तौर पर प्रवेश से लेकर वीर्य-स्खलन तक की अवधि 4 से 5 मिनट की हो सकती है।

### सलाख मिशरी

शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाने और उनकी गुणवत्ता बढ़ाने के लिए यह एक प्रसिद्ध शक्तिशाली आयुर्वेदिक अनुपूरक है। शरीर को सबल, सक्रिय और ऊर्जावान रखने के अतिरिक्त, रतिक्रिया की अवधि बढ़ाने में भी सहायता करता है।

### कौंच बीज

आयुर्वेद में 'कपिकाचू' के नाम से जाना जाने वाला यह एक जाना-माना हर्ब है, जो शरीर के स्नायु-तन्त्र को शक्ति प्रदान करता है। टेस्टोस्टेरोन के उचित स्तर को बनाये रखता है, पौरुष-शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ, कामेच्छा को भी बढ़ाता है। यौनांग को दृढ़, कठोर और मजबूत बनाने के साथ ही रति क्रिया की अवधि बढ़ाने में भी उपयोगी है क्योंकि यह पुरुष-यौनांग की संवेदनशीलता को कम करता है। अच्छी नींद लाने में सहायक है।

### अश्वगंधा

आज की जीवन-शैली से उत्पन्न मानसिक दबाव को कम करने में उपयोगी होने के साथ ही यह शारीरिक शक्ति और यौन-शक्ति बढ़ाने वाला, कामोत्तेजक आयुर्वेदिक हर्ब है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स तन की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में लाभदायक है।

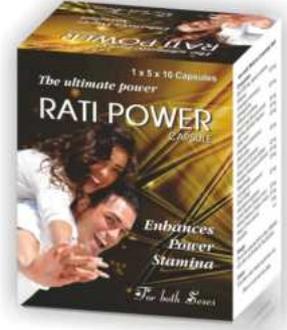
स्त्रियों के लिए भी यह एक अत्यंत उपयोगी है। शारीरिक ऊर्जा बढ़ाने, कामेच्छा बढ़ाने, रतिक्रिया से संतुष्ट रहने, त्वचा की झुर्रियां कम करने, रजोनिवृत्ति की अवस्था में होरमोन का संतुलन बनाये रखने, अत्यधिक पसीना (Hot flushe) को कम करने, मानसिक तनाव कम करने और मनोदशा नियंत्रित करने में सहायक है। स्त्रियों में अस्वस्थता, मानसिक तनाव, हारमोस में असंतुलन, कुपोषण आदि उनकी प्रजनन स्वास्थ्य और गर्भ धारण करने की क्षमता कम कर देते हैं। अध्ययन इंगित करते हैं कि अश्वगंधा थायरॉइड की क्रिया-कलाप को संबल देता है और हारमोस को संतुलित रखने में सहायक है।

### खस-खस

स्नायु-तन्त्र को शक्ति प्रदान करता है। कामेच्छा बढ़ाता है।

### पिप्पली

गैस को दूर करने वाली, और पाचन बढ़ाने वाली है। पिप्पली गर्भरोधक, शक्तिदायक, और मासिक धर्म को नियमित रखती है। तुलसी (Ocimum sanctum) तुलसी में तनाव रोधी गुण पाए जाते हैं। इसके औषधीय गुणों के कारण आयुर्वेद में इसे बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।



पैक: 5x1x10 कैप्सुल



### नक्स वोमिका

नक्स वोमिका पुरुस के वन्ध्यत्व (इनफर्टिलिटी) सम्बंधित समस्याओं जैसे नपुंसत्व और शीघ्र-स्खलन को दूर करने में सहायक है। इसके सेवन से भूख बढ़ती है। अवसाद दूर करने, माइग्रेन, सर-दर्द और रजोनिवृत्ति के लक्षणों में भी इसका उपयोग किया जाता है।

### शुद्ध शिलाजीत

धातु क्षीणता, बहुमूत्र, स्वप्नदोष, सब प्रकार के प्रमेह, यौन दौर्बल्य यानी नपुंसकता, शरीर की निर्बलता, वृद्धावस्था की निर्बलता आदि व्याधियों को दूर करने के लिए शिलाजीत उत्तम गुणकारी सिद्ध होती है। नपुंसकता से पीड़ित विवाहित या अविवाहित व्यक्ति को भी इसके सेवन से फायदा हो सकता है। शिलाजीत बलपुष्टिकारक, ओजवर्द्धक और दौर्बल्यनाशक है।

### रतिपात्र के प्रत्येक कैप्सुल में है :

सलाब मिसरी (EulophiaCampestris)	35mg
कौंच बीज (MucunaPruriens)	50mg
अश्वगंधा (Withania somnifera)	150mg
खस-खस (Andropogonmuricatus)	65mg
पिप्पली (Piper longum)	50mg
तुलसी (Ocimum sanctum)	50mg
नक्स वोमिका (Strychnosnuxvomica)	50mg
शुद्ध शिलाजीत (Aphaltum)	50mg



खुराक

1-2 कैप्सूल दिन में 2 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

## ब्रेस्टोसिल



**नागवाला :** इसमें शारीरिक शक्ति और स्तनों के आकार बढ़ाने के गुण निहित हैं। इसके उपयोग से त्वचा में कान्ति आती है और स्तनों की भी सुन्दरता बढ़ती है।

**बबूल :** इसके छाल और फली में टेनिंस होते हैं और गम-रेजिन में करीब 50% कैल्शियम और 20% मैगनेशियम होते हैं। इसके छाल के सार के उपयोग से स्तनों के टिश्यूज संकुचित होने लगते हैं। जिसके कारण उनका ढीलापन खत्म होने लगता है और उनमें कसाव आने लगता है।

**गंभारी :** गंभारी और बबूल दोनों में निहित कई बायो-यौगिक स्तन की छोटी-छोटी कोशिकाओं को समृद्ध करने के साथ-साथ टिश्यूज को विकसित भी करते हैं और ऐंडोक्राइन के असंतुलन को भी नियंत्रित करते हैं। इसके उपयोग से रक्त संचार में भी तेजी आती है और स्तनों का आकार बढ़ता है।

**लाजवन्ती :** ब्रेस्ट पर मसाज करने के लिए क्रीम में इसका उपयोग किया जाता है और वक्षस्थल के टिश्यूज के सर्वांगीण विकास और ब्रेस्ट की साइज बढ़ाने के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

**कलौंजी :** इसके कारण स्तनों का आकार बढ़ता है और वे सुडौल भी बनते हैं।

**जिकुटीफल :** इनमें निहित एंटी-ऑक्सीडेंट्स और अन्य अवयवों के कारण स्तनों के आकार में वृद्धि होती है, बढ़ती उम्र के प्रभाव कम होते हैं और स्तनों में संचित फैट को कम नहीं होने देते हैं। नहीं होने देते हैं।

**कमल फूल :** इसके बीज के सार के नियमित उपयोग से उरोज बड़े और सुडौल होने लगते हैं।

**बेर :** इसके एक्सट्रेक्ट में निहित फायटोस्टेरोल्स के स्तन की ग्रंथियों की वृद्धि में सहायक होने के कारण स्तनों को बड़ा करने की प्रक्रिया में अहम् योगदान है।

**केशर :** इसमें निहित एस्ट्रोजेन, प्रोजेस्टेरॉन, प्रोलेक्टिन, और ग्रोथ हार्मोन के कारण स्तनों के आकार और कसाव में वृद्धि होती है और धीरे-धीरे स्तन बड़े, भरे-भरे और उभरे दिखने लगते हैं। स्त्रियों के अच्छे स्वास्थ्य और रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि के लिए भी अत्यंत लाभदायक है।



**डोज :** 1 कैप्सूल प्रतिदिन 3 से 4 महीने तक। अधिक लाभ के लिए ब्रेस्टोसिल कैप्सूल के साथ ब्रेस्टोफिट क्रीम का भी उपयोग करें।



युवतियों और महिलाओं के शरीर के सबसे आकर्षक और महत्वपूर्ण अंग स्तन हैं। छोटे और अविकसित स्तन स्त्री के सौन्दर्य और व्यक्तित्व को धूमिल कर देते हैं, आजकल हर महिला सुन्दर दिखने के साथ फिट और चुस्त बॉडी की भी चाहत रखती हैं।

स्त्री के स्तन वसा उत्तकों (Fat tissue or adipose tissue) से बने होते हैं। स्तनों के छोटे और अविकसित होने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे: एस्ट्रोजेन हार्मोन की कमी, पुरुष हार्मोन टेस्टोस्टेरोन की अधिकता, गर्भाशय में विकार, वंशानुगत शारीरिक दुर्बलता, शरीर में विटामिन की कमी, अनियमित मासिक धर्म, मानसिक तनाव, कुंठा, निराशापन, उचित आहार की कमी, अस्वस्थता, शारीरिक परिश्रम का अभाव।

अपने स्तनों को बड़ा बनाने के लिए स्त्रियाँ कुछ हार्मोस की भी सहायता लेती हैं पर उनके दुष्प्रभाव (side effects) भी होते हैं पर अगर वे प्रभावकारी हर्ब्स का सहारा लेती हैं तो साईड इफेक्ट्स की संभावना बहुत कम हो जाती है। प्राकृतिक रूप से मिलने वाली कुछ अद्भुत जड़ी-बूटियाँ स्त्रियों के छोटे वक्षों का आकार बड़ा करके उन्हें एक सुंदर आकार देने और आकर्षक बनाने में अत्यधिक सक्षम हैं।

**ब्रेस्टोसिल कैप्सूल्स** : ब्रेस्ट का साईज बढ़ाने के लिए, **और ब्रेस्टोफिट क्रीम** - बेडौल और शिथिल स्तनों में दुबारा उभार लाने, सुडौल बनाने और उनमें कसावट लाने के लिए।

**ब्रेस्टोसिल कैप्सूल्स** : स्त्रियों के स्तनों या वक्ष को बड़ा, पुष्ट, सुडौल और आकर्षक बनाने के लिए 11 अलग-अलग गुणवत्ता वाली जड़ी-बूटियों के संयोजन से निर्मित।

ब्रेस्टोसिल कैप्सूल्स के नियमित सेवन से स्त्री के शरीर में हार्मोस की विशिष्ट मात्रा बनती है जिसके कारण उसके स्तनों में एडिपोज टिश्यू नामक फ़ैटी टिश्यू का संग्रह होने लगता है और संयोजी टिश्यू भी मजबूत होने लगती हैं। इसमें निहित हर्ब्स उरोजों के फ़ैले हुए उत्तकों को भी संकुचित करते हैं और सेल्स को उचित पोषण प्रदान करते हैं जिसके कारण उरोजों का आकार बढ़ने लगता है और वे बड़े और पुष्ट होने लगते हैं। हर्ब्स में निहित फायटो-एस्ट्रोजेन्स शरीर द्वारा बनाए एस्ट्रोजेन्स को उत्प्रेरित करते हैं जिसके कारण स्तन की दुग्ध वाहिनियाँ (milk ducts) और वायुकोशायें (alveolas) भी बड़ी हो जाती हैं। जिससे स्तन का आकार भी बड़ा हो जाता है। फायटो-एस्ट्रोजेन्स वक्षस्थल की गोलाई भी बढ़ाते हैं। इस कारण प्राकृतिक रूप से स्तनों के आकार में वृद्धि के लिए आहार की भी भूमिका होती है।



# ऑलिवो

## ओलीवो

पंद्रह जांची-परखी प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का शक्तिशाली सम्मिश्रण है जो शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है और वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या और उनकी गति को बढ़ाता है जिससे गर्भधारण की सम्भावना में वृद्धि होती है ।

### केसर -

इसमें स्नायु-तंत्र को मजबूत बनाने की अदभुत क्षमता है जिससे यह अवसाद और तनाव को कम करने में सहायक है ।

### शुद्ध शिलाजीत -

यह ह्युमिक पदार्थों से भरपूर होता है । इसका उपयोग अच्छे सेक्सुअल स्वास्थ्य के लिए होता है ।

### सफ़ेद मूसली -

इसे प्राकृतिक वियाग्रा कहा जाता है जो शिश्न को उत्थित करता है और शीघ्रपतन को रोकने में सहायक है ।

### सतावर -

इसमें विटामिन-C पाया जाता है जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता, सेक्स हॉर्मोन, शुक्राणु संख्या और प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है ।

### अश्वगंधा -

इसको भारतीय जिन्सेंग भी कहा जाता है । इसमें पाए जाने वाले विथैनोलायड्स, एंटीऑक्सीडेंट का कार्य करते हैं । यह मानसिक अवसाद और घबराहट को कम करता है और वीर्य को गाढ़ा करता है ।

### स्वर्ण वंग -

इसका उपयोग मूत्र और वीर्य सम्बन्धी समस्या को दूर करने में किया जाता है । स्तम्भन में कमी से पीड़ित पुराने से पुराने रोगियों को भी लाभ पहुँचाता है ।

### कौंच बीज -

इससे शरीर में बनने वाले प्रोलैक्टिन नामक हॉर्मोन को रोकने में सहायता मिलती है । प्रोलैक्टिन में पुरुषांग के उत्थान को रोकने का गुण होता है ।

### आंवला -

एक अदभुत फल है, जिसमें प्रकृति में पाया जाने वाला सबसे अच्छा और ज्यादा विटामिन-C पाया जाता है ।

### सूरजमुखी का बीज -

इसमें फाईटोस्टेराल नामक तत्व पाया जाता है जो शरीर से कोलेस्ट्रॉल को कम करते हैं । विटामिन-E शुक्राणुओं के DNA में आई किसी भी कमी को दूर करके उनकी क्षमता को बढ़ाता है और प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है ।

### विदारीमूल -

प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है, मस्तिष्क की कोशिकाओं को पोषित करता है और याददाश्त बढ़ाता है ।





#### ताल मखाना –

पूरे शरीर को और विशेष रूप से जननांगों को पोषक तत्व प्रदान करके शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाता है।

#### सालम पंजा –

यह प्रजनन तंत्र से सम्बंधित सभी अंगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। नसों को स्वस्थ रखता है।

#### सालम मिश्री –

बीमारी के बाद शरीर की शक्ति को वापस लौटने में अत्यंत लाभदायक है और नसों को स्वस्थ रखता है।

#### विदारबीज –

शीघ्रपतन को रोकने में सहायक है।

#### कीकर गोंद –

यह मूत्रजननांगी स्राव को नियंत्रित करता है और मूत्र-मार्ग और प्रजनन-तंत्र की बीमारियों को दूर करने में सहायक है।

#### प्रत्येक टैबलेट में है:

केसर (A.F.I.)	3mg	कीकर गोंद	3mg
सफेद मूसली	10mg	कौंच बीज	100mg
अश्वगंधा	40mg	सूरजमुखी का बीज	20mg
आंवला	40mg	सतावर	20mg
ताल मखाना	20mg	सालम मिश्री	15mg
विदारमूल	3mg	सालम मिश्री	15mg
सालम पंजा	15mg	विदारबीज	15mg
सालम पंजा	15mg	स्वर्ण वंग	20mg
शुद्ध शिलाजीत	25mg		



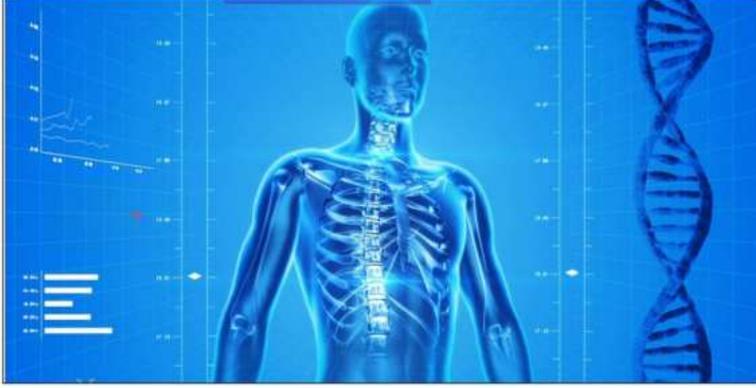
#### पैक:

10X1X10 टैबलेट्स

#### डोज :

1 या 2 टैबलेट रोजाना 2 बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार

## क्वांटम मैग्नेटिक रेजोनेंस एनालाइजर



जीवन में स्वास्थ्य ही अनमोल धन है। शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता अर्जित कर सकते हैं। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। व्यक्ति की सबसे बड़ी दौलत उसका शरीर और उसका स्वास्थ्य होता है। जीवन में स्वास्थ्य का मूल्य समझ कर ही विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना की गई थी। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए।

किन्तु अक्सर देखा जाता है कि कम उम्र में ही व्यक्ति न जाने कितनी बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। इसका प्रमुख कारण है अनियमित जीवन शैली और समय-समय पर स्वास्थ्य परिक्षण न करवाना।

जब हमारा स्वास्थ्य अच्छी अवस्था में नहीं होता तब हमारा शरीर हमें सचेत करने के लिए संकेत देना शुरू कर देता है। जैसे कि— थकान, बदनदर्द, सिरदर्द, अनिद्रा, अवसाद, भूख में कमी, तनाव, व्यग्रता, अधिक क्रोध आना, धड़कन का बढ़ जाना इत्यादि। जो व्यक्ति इन संकेतों को समझ कर समुचित जाँच करा कर सही इलाज करा लेते हैं वह गंभीर समस्याओं से निजात पा लेते हैं अन्यथा गंभीर बीमारियाँ उन्हें ग्रसित कर लेती हैं और इसका खामियाजा उन्हें आर्थिक और शारीरिक दोनों रूपों में झेलना पड़ता है।

**समय पर स्वास्थ्य परीक्षण नहीं कराने के प्रमुख कारण :**

1. अज्ञानता
2. लापरवाही
3. जांच लैब्स का दूर होना
4. महँगी जांचें

**अपनी स्वास्थ्य क्रांति के तहत मोरल ग्रुप ले आये हैं एक चमत्कारिक जांच संयंज जो सभी को सस्ता और सुविधाजनक जांच सुविधा मुहैया कराएगा।**

यह एनालाइजर आधुनिक विज्ञान का एक चमत्कार है क्योंकि यह एक अनोखी पद्धति से जांच करती है। यह संयंत्र मनुष्य के शरीर से निकलने वाले इलक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों के द्वारा रोगों की जांच करता है। यह वैज्ञानिक तथ्य है कि स्वस्थ शरीर, बीमार शरीर या बीमारी से पूर्व अवस्था में शरीर से अलग-अलग तरह की तरंगें निकलती हैं।

# क्वांटम मैग्नेटिक रेजोनेंस एनालाइजर

यह संयंत्र अत्यंत सुविधाजनक है :

1. किसी तरह के रक्त सैंपल की आवश्यकता नहीं है।
2. मरीज को किसी हानिकारक रेडिएशन का सामना नहीं करना पड़ता।
3. जांच के नतीजे मात्र 2 मिनट में उपलब्ध जबकि परंपरागत जांच नतीजों के लिए हफ्तों का इन्तजार करना पड़ता है।
4. शरीर के विभिन्न अंगों और तंत्रों से सम्बंधित 37 प्रकार के जांच करता है। इसमें मस्तिष्क, थाईरॉयड, प्रोस्टेट, किडनी, लिवर, आँखों, हड्डियों के घनात्व, श्वसन तंत्र, पैक्रियास इत्यादि की जांच हो जाती है।
5. लिवर एकिडनी, पेट, आँतों, प्रोस्टेट, श्वसन तंत्र, मस्तिष्क, आदि की जांच करवाने में आज कहीं भी मरीज को कम से कम 24-30 हजार का खर्च आएगा जो इस संयंत्र द्वारा बहुत ही न्यूनतम खर्च में हो जाएगा।
6. इस संयंत्र को कहीं भी आसानी से लाया और ले जाया सकता है।
7. बिना बिजली के चलता है।
8. जांच के लिए दूर दराज जाने की असुविधा नहीं होगी।
9. संभावित बीमारियों को भांप कर उनकी रोकथाम के उपाय या उनका प्रारम्भिक अवस्था में ही इलाज करके लाखों रुपये के खर्च से बचा जा सकता है।





*Wish You A Healthy & Wealthy Life*

Command Office :

Royal Arcade- 565- KA-94-2, Sneh Nagar Alambagh, Lucknow- 226005

Tel. No. - 0522 4102057

[www.axilbusiness.in](http://www.axilbusiness.in)

[www.moralmcg.com](http://www.moralmcg.com)

[www.moralpharma.com](http://www.moralpharma.com)

 Toll Free :- 1800-102-0087

